जयपाल सिंह

समरू निडर

योद्धा

Jaipal Singh

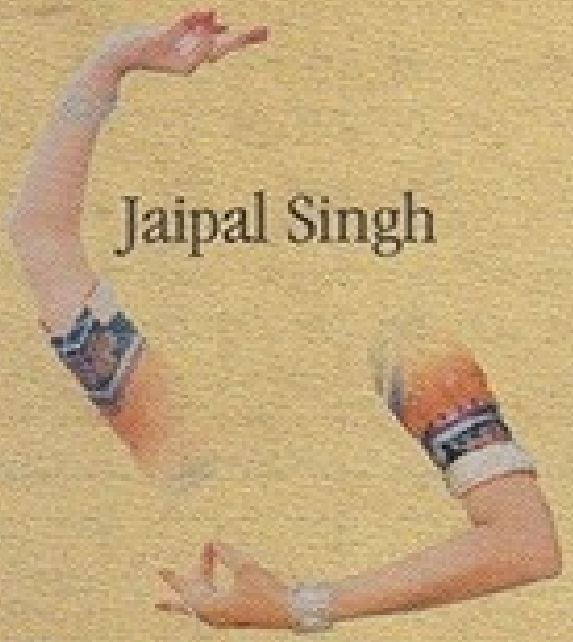

SAMRU

The fearless warrior

□□□□, □□□□ □□□□□□

□□ □□□□□□□□ □□□□□□□

Jaipal Singh

Srishti
□□□□□□□ □□ □□□□□

सृष्टि पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स 64-ए, अधचीनी
श्री अरबिंदो मार्ग
नई दिल्ली 110 017
srishtipublishers@yahoo.com
सृष्टि पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स द्वारा पहली बार 2004 में प्रकाशित।
Copyright © Jaipal Singh 2004
195.00 रुपये
ISBN 81–88575–21–6
सुरेश कुमार शर्मा द्वारा सृष्टि में AGaramond 11pt. फ़ॉन्ट में टाइपसेट किया गया।
कवर डिजाइन: क्रिएटिव कॉन्सेप्ट
भारत में मुद्रित और जिल्दबंद
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशकों की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

□□□□□□□□□□

1. □□□□□
2. □□□□
3. □□□□□□□
4. □□□□□□
3. □□□□□□ □□□□□□
6. □□□□□□
7. □□□□□□□
8. Jagirdar
9. □□□□
10. □□□
11. □□□□□□□□
12. □□□□□□□
13. Sardhana
14. □□□□□□-□□□□□□
15. □□□□
16. □□□□□□
17. □□□□
18. □□ □□□□□□□
19. □□□□□□□
20. □□□□□□□□
21. □□□□□□□□
22. □□□□
23. □□□
24. □□□□□□□
25. □□□□□□
26. □□□
27. □□□□□□
28. □□□

29. ओचटरलोनी
30. परम शांति
31. पुरस्कार एजेंट
32. विजय
33. गोधूलि बेला
34. ड्रेवर
35. अंतिम श्रद्धांजलि
36. शब्दावली
37. संदर्भ

लेखक

जयपल सिंह का जन्म हिमाचल प्रदेश के सोलन में हुआ था। उन्होंने लाहौर में और बाद में ग्लासगो विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। वे छात्र जीवन से ही स्वतंत्र लेखन में रुचि रखते थे और विभिन्न विषयों पर लेख और निबंध लिख चुके हैं।
उन्होंने लघु कथाओं के दो संग्रह प्रकाशित किए हैं, जिनका नाम है 'नैन्हा खान और अन्य कहानियां' और 'कचरा बीनने वाला और अन्य कहानियां'।

स्वीकृतियाँ

इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने हेतु मैंने विभिन्न पुस्तकालयों का दौरा किया और उपलब्ध मूल स्रोतों से नोट्स बनाए। फिर उस जानकारी का उपयोग मैंने कंप्यूटर पर विषय के प्रारंभिक मसौदे तैयार करने के लिए किया। कंप्यूटर के संचालन में मेरी कमियों के कारण मुझे अक्सर निराशा का सामना करना पड़ता था, जब मुझे लगता था कि महीनों की मेहनत बर्बाद हो गई है। जब भी ऐसा या कोई और संकट आता, मेरा पोता ईशान लिखित सामग्री को पुनः प्राप्त करने में मेरी सहायता करता था। मैं उसका बहुत आभारी हूँ।
मेरे परिवार के अन्य सदस्यों, विशेष रूप से रचना और नोमिता ने पुस्तक के प्रकाशन में बहुत सहयोग दिया। मेरी पत्नी तोशी ने बहुमूल्य सुझाव दिए। मैं अपने प्रकाशक का आभारी हूं, जिन्होंने पांडुलिपि और उसके प्रकाशन में रुचि दिखाई।

हवेली

जब गुलबदन जान अपने कमरे से बाहर निकलीं तो आसमान में काले बादल छाए हुए थे।
पालकी। यह उसके मन में व्याप्त अंधकार की तरह था, अनिश्चित, तीव्र, और अत्यधिक।
बेहद तनावपूर्ण। उसने अपने दिल को हल्का करने की कोशिश में गहरी सांस ली, और कामना की कि तेज हवाएं आने वाली बारिश को उड़ा ले जाएं।
गुलबदन को उम्मीद थी कि उसकी पुरानी दोस्त सलामत उसकी मदद कर पाएगी। उसकी आर्थिक स्थिति तेज़ी से बिगड़ रही थी। वह घोर आर्थिक संकट में थी, और सलाह के लिए सलामत जान के अलावा वह और किससे संपर्क कर सकती थी, जिसने खुद भी कठिन दिन देखे थे। सलामत जान उससे उम्र में काफी बड़ी थी और उसने कई साल पहले अपना व्यवसाय बंद कर दिया था, जब उसे लगा कि अब वह इस पेशे में आगे बढ़ने के लिए बहुत बूढ़ी हो गई है।
लेकिन, सलामत जान उसे तुरंत कोई समाधान नहीं दे सकीं। उन्होंने कहा। “देखो, अभी मुझे कुछ सूझ नहीं रहा है। मैं अवध के फैजाबाद जा रहा हूँ, प्यारो बाई से मिलने। उन्होंने मुझे कुछ समय के लिए अपने घर में रहने का न्योता दिया है। शायद तुम्हें याद हो। मेरे कोठे को बंद करने से पहले, वह उस समय की उभरती हुई सितारों में से एक थीं।”
जब मेरे लिए जाना मुश्किल हो गया था, तब वह फैजाबाद चली गई थी। मुझे पता लगाने दीजिए कि वह कैसी है। दिल्ली लौटने पर मैं कोई रास्ता सुझाऊँगी। काफी निराश होकर गुलबदन अपने घर की ओर वापस चल पड़ी।
जैसे ही उनकी पर्दों से ढकी पालकी दिल्ली में शाहजहाँ की जामा मस्जिद की विशाल सीढ़ियों के पास पहुँची, उन्हें एक लड़की की दिल दहला देने वाली चीखें सुनाई दीं।
“Hai! Hai! my Amma is dying.”
उसने पालकी के पर्दे थोड़े से हटाकर बाहर झाँका। एक महिला मस्जिद की सीढ़ी पर लेटी हुई थी और उसके पास लगभग आठ साल की एक बच्ची रो रही थी। गुलबदन ने पल भर में देखा कि बच्ची, हालांकि उसके बाल बिखरे हुए थे और चेहरा मैला था, फिर भी उसकी आँखें बेहद प्यारी और भावपूर्ण थीं।

पालकी उतारी गई और बुर्का पहने गुलबदन बाहर निकली और लड़की की ओर चल पड़ी। जैसे-जैसे वह उनके पास पहुंची, रोने की आवाजें तेज होती गईं।
"कृपया मेरी मदद करें, मुझे नहीं पता कि मुझे कहाँ जाना है और क्या करना है।"
सीढ़ी पर लेटी महिला ने मुड़कर गुलबदन की ओर देखा। उसे हल्का-सा आभास हुआ कि उसने इस महिला को पहले कहीं देखा है, लेकिन उसे याद नहीं आ रहा था कि वह कौन थी। उसने अपने घूंघट के पीछे से पूछा:
"आप कहाँ जाना चाहते हैं?"
"प्रसिद्ध वेश्या गुलबदन जान की हवेली में।"
गुलबदन अचंभित रह गई लेकिन उसने अपनी पहचान उजागर नहीं की।
“तुम्हारा नाम क्या है?” उसने पूछा।
“जद्दन।”
यह नाम उसकी यादों में ताजा हो गया, और गुलबदन ने फिर पूछा:
तुम उसके घर क्यों जाना चाहते हो?
“यही वह एकमात्र स्थान है जहाँ मैंने अपने दुर्भाग्यपूर्ण जीवन के कई सुखद वर्ष बिताए।” महिला सिसकते हुए बोली।
गुलबदन ने एक पालकी किराए पर ली और बच्चे और मां को उसमें बैठने के लिए कहा।
“आपकी तबीयत ठीक नहीं है। जब आप ठीक हो जाएँगे, तब हम आराम से बात करेंगे।” जैसे ही वे घर के बाहर पहुंचे, जद्दन अपनी व्याकुल अवस्था में भी यह समझ गई कि हवेली का बाहरी हिस्सा जर्जर हालत में था, जगह-जगह प्लास्टर में दरारें थीं और कई जगहों से प्लास्टर गिर भी रहा था।
वे दियोढ़ी में दाखिल हुए और छोटी बच्ची विशाल आंगन के दोनों ओर दाएं और बाएं बने स्तंभों वाले गलियारों को देखकर अचंभित रह गई। सामने एक विशाल, गहरा मंडप जैसा बरामदा था, जिसके पीछे बैठक कक्ष बने हुए थे। इसके किनारों पर भी कुछ कमरे थे। आंगन को तीन अलग-अलग स्तरों पर फर्श वाली छतों में बांटा गया था, जिनमें सबसे निचली छत प्रवेश द्वार पर, लॉबी के ठीक बगल में थी। सबसे निचली छत के एक कोने में एक कुआँ था।
मां और बच्ची को एक कमरे में ठहराया गया। गुलबदन जान की एक महिला नौकरानी उनके लिए खाना लेकर आई। एक बुजुर्ग हकीम को बुलाया गया, जिन्होंने जद्दन

के लिए दवाइयां और हर्बल टॉनिक बताए। फिर नौकरानी ने बच्ची को नहलाया और उसके लिए साफ कपड़े लाए।
जब गुलबदन ने स्नान के बाद लड़की को देखा, तो उसे तुरंत एहसास हो गया कि आने वाले वर्षों में वह उसके कोठे के लिए एक बड़ी संपत्ति साबित होगी। वह सुंदर लड़कियों में छिपी प्रतिभा को पहचानने में माहिर थी। यह उसके पेशे की एक अनिवार्य शर्त थी। गुलबदन ने लड़की से उसका नाम पूछा।
"फरज़ाना।"
“मैं तुम्हें फरज़ो कहकर बुलाऊँगा,” गुलबदन ने कहा।
गुलबदन के मन में यादें उमड़ पड़ीं। बीस साल से भी ज़्यादा समय पहले, वह भी एक नन्ही लड़की के रूप में इसी हवेली में आई थी। ईद-उल-ज़ुहा के अगले दिन, दिल्ली के मुगल सम्राट की सेना को हराने वाले ईरानी आक्रमणकारी नादिर शाह एक भव्य घोड़े पर सवार होकर चांदनी चौक, यानी केंद्रीय बाज़ार की ओर बढ़े थे। उन्हें सूचना मिली थी कि रात में दंगा करने वाली भीड़ ने उनके कई सैनिकों को मार डाला था, क्योंकि यह अफवाह फैल गई थी कि उन्हें ज़हर देकर मार दिया गया है। उन्होंने दंगे को दबाने का फैसला किया। उन पर बंदूक से गोली चलाई गई, जिससे उनके साथ खड़ा उनका एक अधिकारी मारा गया। इससे वे इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने दिल्ली के निवासियों की लूट और सामूहिक नरसंहार का आदेश दिया। उन्हें स्थानीय लोगों के घर जलाने का आदेश दिया गया। गुलबदन उस समय लगभग छह साल की थी। जब आक्रमणकारियों के सैनिकों ने उनके पड़ोस के घरों को जलाना शुरू किया, तो उसके माता-पिता उसका हाथ पकड़कर बाहर भागे। उसके पिता एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे, जिनका संरक्षण कुलीन वर्ग और व्यापारियों के बीच होता था। स्वयं मुगल सम्राट मोहम्मद शाह भी कभी-कभी उनसे सलाह लेते थे। सैनिकों ने उन्हें देख लिया और उस व्यक्ति को भाले से मार डाला। उन्होंने गुलबदन की माँ को कुछ सैनिकों की निगरानी में एक कोने में धकेल दिया, जहाँ कुछ अन्य महिलाओं को भी बंदी बना लिया गया था। उसके पिता की भयानक चीख बच्ची की स्मृति में अमिट छाप छोड़ गई और उसके बाद के जीवन का हर पहलू उसे याद रहा। घबराहट में, बच्ची विपरीत दिशा में एक संकरी गली की ओर भागने लगी। उसकी मुलाकात एक लंबे, लहराते हुए सफेद दाढ़ी वाले बुजुर्ग व्यक्ति से हुई। उन्होंने उसे उठाया और जल्दी से उसे प्रसिद्ध दरबारी नूर बाई की हवेली में ले गए। नूर बाई हमेशा ऐसी छोटी लड़कियों की

तलाश में रहती थी जो उसके कोठे का भविष्य उज्ज्वल कर सकें। उन्होंने नूर बाई से कहा।
“उसके पिता की हत्या कर दी गई है और माँ को बंदी बना लिया गया है। वह एक हिंदू ज्योतिषी थे। आप चाहें तो उसे हिंदू धर्म में पाल-पोस सकते हैं या उसका धर्म परिवर्तन करा सकते हैं।”
“हमारे पेशे में धर्म का कोई स्थान नहीं है। उसे देखकर मैं कह सकता हूँ कि वह एक खूबसूरत महिला बनेगी। हम उसे प्रशिक्षण देंगे और ईश्वर की कृपा से वह एक सफल वेश्या बनेगी।”
उसने बूढ़े आदमी को सोने के दो सिक्के दिए।
कुछ दिनों बाद जद्दन ठीक हो गई और गुलबदन जान को धन्यवाद देने गई। वह अब भी चिंतित थी; उसे नहीं पता था कि उसे हवेली में रहने की अनुमति मिलेगी या नहीं। अगर नहीं, तो वह अपनी छोटी बच्ची को साथ लेकर कहाँ जाएगी! लेकिन गुलबदन के शब्दों ने उसे आश्वस्त कर दिया।
“जद्दो, मैं देख सकता हूँ कि तुम अपने भविष्य को लेकर चिंतित हो। लेकिन चिंता मत करो, तुम हमारे साथ यहाँ रह सकते हो, और हम तुम्हारी बेटी को उर्दू पढ़ना-लिखना सिखा देंगे। अल्लाह की मर्ज़ी से, वह मीर तकी मीर और सौदा जैसे प्रख्यात कवियों की उर्दू कविताएँ सुना सकेगी। आने वाले वर्षों में वह शायद अपने शेर भी रच सकेगी। मुझे एक दरबारी के रूप में उसका उज्ज्वल भविष्य दिखाई देता है। वह मेरी उपकारिणी नूर बाई की सफलता को टक्कर दे सकती है। अल्लाह उसकी आत्मा को शांति दे! अगर उसकी इच्छा हो, तो वह फ़ारसी सीख सकती है, ताकि वह कुलीन वर्ग से उस भाषा में बात कर सके। तब, उसे महज़ नाचने वाली लड़की नहीं समझा जाएगा, बल्कि उसे सम्मान और उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।”
“चौधरायन! आपसे मिलकर मैं सचमुच बहुत भाग्यशाली महसूस कर रहा हूँ। आपने मेरी बेटी और मेरे प्रति बहुत दयालुता दिखाई है। अल्लाह आपको तमाम खुशियाँ प्रदान करे!”

कोठा

जद्दन ने रसोई का कार्यभार संभाला और जल्द ही हवेली के रोज़मर्रा के कामों में जुट गईं। उन्हें याद है कि पहले उन्हें लगभग बीस लोगों को खाना खिलाना पड़ता था। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि अब यह संख्या घटकर मात्र छह रह गई थी। हवेली में मुजरा (पारंपरिक माओरी नृत्य) लगभग न के बराबर होता था। उन्हें याद है कि अपने पहले के प्रवास के दौरान, महफ़िल के नाम से जानी जाने वाली हवेली में कथक नृत्य, शास्त्रीय संगीत और कविता पाठ की चहल-पहल रहती थी। महत्वपूर्ण अवसरों पर गुलबदन जान स्वयं मुजरा प्रस्तुत करती थीं।
महफ़िल के संरक्षक मुगल दरबार के धनी और प्रभावशाली उमरा थे, जो गुलबदन जान के बड़े प्रशंसक थे। जवानी में वह बेहद खूबसूरत थीं, उनके हर हावभाव में एक अलग ही गरिमा झलकती थी। संरक्षक सजे-धजे हाथियों या मजबूत अरबी घोड़ों पर सवार होकर आते थे, रेशमी वस्त्र पहने और गहनों व मोतियों से लदे होते थे। शादियों और जन्मदिन जैसे विशेष अवसरों पर गुलबदन जान को उनके नर्तकों, गायकों और वादकों के दल के साथ आमंत्रित किया जाता था। उपहार हवेली में पहले ही भेज दिए जाते थे। जद्दन एक अच्छी नर्तकी नहीं थीं, लेकिन जब गुलबदन हवेली के बाहर प्रदर्शन करती थीं तो वह उनके साथ जाया करती थीं। एक बार, जद्दन ने एक बेहद विचित्र दृश्य देखा। एक और प्रसिद्ध नर्तकी, अमीर बेगम को भी एक घर में प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया गया था। वह अपने स्तनों पर चोली के आकार के टैटू और पैरों पर ऐसे टैटू बनवाकर समारोह में आई थीं, जो देखने में ऐसे लग रहे थे मानो उन्होंने पतलून पहनी हो। केवल जानकार ही समझ पाए कि उन्होंने कपड़े नहीं पहने थे। दोनों प्रमुख नर्तकियों ने ग़ज़लें और कविताएँ गाईं और पूर्ण सुंदरता के साथ नृत्य किया। जद्दन को आज भी गुलबदन द्वारा पढ़े गए उर्दू शेर याद हैं।
Aag thai ibtadai ishq mein hum
Ah jo hain khak inteha haiyeh
जब मुझे पहली बार प्यार हुआ तो मुझमें गजब का जोश था;
अब अंत में, राख के सिवा कुछ भी शेष नहीं बचा है।
इस पर 'हाई! हाई!' के नारों से स्वागत किया गया।

‘पर तुम चिंता क्यों कर रही हो? हम तो अभी भी यहीं हैं,’ कुछ अन्य लोगों ने कहा। गुलबदन पर सोने के अनगिनत उपहारों की वर्षा हुई और उनकी आँखों में आँसू आ गए। तालियों और प्रशंसा से भावुक होकर उन्होंने एक और शेर सुनाया। Mohabbat na ho kaash makhlook ko
Na chodaiyeh aashiq na mashook ko
काश, मनुष्य प्रेम से अछूता होता।
क्योंकि यह न तो प्रेमी को बख्शता है और न ही प्रेमिका को।
वाह! वाह! के नारों के साथ सभी लोग खड़े हो गए। कुछ रईस उन्हें सोने के उपहार भेंट करने के लिए उनके पास गए।
इसके बाद, जद्दन हमेशा से उसके इस गुप्त प्रेम के बारे में जानना चाहता था, लेकिन हिम्मत नहीं जुटा पाया। लेकिन वह समय बहुत पहले बीत चुका था।
एक दिन गुलबदन को शांत और उदास अवस्था में देखकर जद्दन उसके पास गया: “चौधरायन, क्या कोई बात तुम्हें परेशान कर रही है?”
“जी जड्डो, मेरी आमदनी बहुत कम हो गई है। तुमने इस हवेली की खस्ता हालत तो देखी ही होगी, जिसने कभी समृद्धि के दिन देखे थे और नूरबाई के समय में इसकी शान-शौकत बेजोड़ थी। अब हमारे पास ज्यादा ग्राहक नहीं आते और वे भी उस वर्ग के नहीं हैं जो पहले आते थे।” गुलबदन ने विलाप किया।
लेकिन ऐसा क्यों होता है?
“जद्दो, तुम्हें एहसास नहीं है, हमारा पेशा हमारे संरक्षकों की दौलत पर निर्भर करता है। मराठों द्वारा मचाई गई तबाही और विनाश के बाद, नादिर शाह ने इस शहर को तहस-नहस कर दिया और जो कुछ भी उसके हाथ लगा, सब लूट लिया, चाहे वह कोही नूर का हीरा हो, शाहजहाँ का मयूर सिंहासन हो, सोना हो या औरतें। वास्तव में, नादिर शाह ने मुगल सम्राटों द्वारा पिछले दो सौ वर्षों में जमा की गई सारी दौलत लूट ली। उन्होंने छोटे लड़कों को भी नहीं छोड़ा। हमारे सम्राट इतने कमजोर थे कि वे किसी को भी सुरक्षा प्रदान नहीं कर सके। कानून-व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई; अपराधियों और लुटेरों ने नागरिकों का जीवन कठिन बना दिया। साधन संपन्न लोग इतने असुरक्षित महसूस कर रहे थे कि बड़ी संख्या में धनी रईस और व्यापारी फैजाबाद चले गए, जहाँ अवध के नवाब का दरबार लगता था। अवध की दौलत और महत्व में वृद्धि हुई। हमारे पेशे से जुड़े कई संस्थान भी फैजाबाद चले गए और जाहिर तौर पर बहुत अच्छा कर रहे हैं।”

"क्या आपने खुद वहां स्थानांतरित होने के बारे में नहीं सोचा है?"
“कभी नहीं! मुझे इस हवेली से बहुत लगाव है।”
जद्दन ने नूर बाई के बारे में सिर्फ सुना था। वह उनके बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुक थी।
“मुझे नूर बाई के बारे में बताओ। उन्होंने तुम्हें कैसे प्रशिक्षित किया?”
“उन्होंने ही मेरा नाम गुलबदन रखा था। हवेली में कई लड़कियाँ थीं, शायद मैं सबसे छोटी थी। हम सब नूरबाई की कड़ी निगरानी में पले-बढ़े। समय के साथ-साथ उन्हें मुझसे बहुत लगाव हो गया। उनके पास दो हिजड़े थे, जो हवेली में नर्तकियों और युवतियों की सुरक्षा करते थे। लगभग तीन साल तक मैंने उर्दू और फ़ारसी भाषाओं की गहन शिक्षा प्राप्त की। वह इस बात पर विशेष ज़ोर देती थीं कि मैं उर्दू कविताएँ पढ़ना सीखूँ। वह ऐसा दौर था जब उर्दू कविता का विकास हो रहा था और कुलीन वर्ग और धनी लोग उर्दू कवियों को संरक्षण देते थे। ग़ज़लों के प्रति मेरा स्वाभाविक लगाव था और जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई, मैं दिल्ली के उस समय के लोकप्रिय कवि मीर तकी मीर और मिर्ज़ा मुहम्मद रफ़ी सौदा की शायरी की बड़ी प्रशंसक बन गई। मैं उनकी ग़ज़लें याद से सुना सकती थी, जिससे नूरबाई बहुत हैरान होती थीं और अक्सर कहती थीं कि उन्हें पूरा यकीन है कि मैं एक ब्राह्मण दंपत्ति की बेटी हूँ। उनके अनुसार, केवल एक ब्राह्मण बच्चा ही इतना बुद्धिमान हो सकता है।”
मेरे पुराने उस्ताद ने नूर बाई से कहा कि मैं बहुत प्रतिभाशाली हूँ और उन्हें लगता है कि मुझे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखना चाहिए। वह स्वयं शास्त्रीय रागों की एक निपुण गायिका थीं। उन्हें विशेष रूप से तोड़ी और दरबारी राग पसंद थे और एक गायिका के रूप में उनकी बहुत मांग थी। उस्ताद ने मुझे ख्याल से परिचित कराया, जो शास्त्रीय संगीत का एक रूप है और कुछ दशक पहले तक लोकप्रिय था। मैंने अन्य राग भी सीखे और मुझे नियमित रूप से और गहन अभ्यास करना पड़ता था, क्योंकि मेरे गुरु बहुत सख्त थे।
इस प्रकार, कथक नृत्य, संगीत और यहाँ तक कि नज़ाकत के हुनर का मेरा प्रशिक्षण नूर बाई की सीधी देखरेख में पूरी लगन से शुरू हुआ। वह मुझे इतना लाड़-प्यार करती थीं कि मैं उनके कदमों की आडंबर तक करती थी। वह अक्सर मुझे अपने साथ सुलाती थीं और कसकर गले लगाती थीं। वह मेरे गालों और होठों पर चुंबन करती थीं। बाद में मुझे पता चला कि वह एक चपटी थीं और अक्सर अपने

आश्रम की खूबसूरत लड़कियों में से किसी एक को अपने साथ सोने के लिए बुलाती थीं।
गुलबदन यादों के सैलाब में बह गई। उसका चेहरा चमक उठा और उसकी आवाज भावनाओं से कांप उठी।
“जद्दन, जिन्होंने उसे अपनी आँखों से न देखा था, वे उसकी सुंदरता की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। मैं उसे निहारता रहता था और वह यह देखकर हँसती थी।
उसके बालों में यौवन की चमक थी और उसकी संगमरमर जैसी त्वचा, होंठ, भौहें, पलकें सब कुछ निर्मल और ताजा लगता था, मानो अल्लाह ने उन्हें अभी बनाया हो। उसका शरीर साक्षात परिपूर्ण था, उसका गला हाथीदांत की मीनार जैसा था, उसकी आँखें हिरण जैसी थीं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह हिंदुस्तान की शान थी। लोग कहते थे कि वह भारत की साम्राज्ञी बनने के योग्य है। वह एक कुशल वक्ता थी और वाक्पटुता और हाजिरजवाबी की धनी थी। श्रोता उसकी टिप्पणियाँ सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाते थे। वह अपने व्यवहार में काफी अभिमानी थी, उसके संरक्षकों ने उस पर इतना धन लुटाया था कि कहा जाता था कि वह मुगल सम्राट की रानी से भी अधिक धनी थी।”
गड्डन थोड़ी देर रुका और चारों ओर देखने लगा।
“उसने राज्य के सबसे धनी रईसों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए इस हवेली का निर्माण करवाया था, और इसके अंदरूनी हिस्से को कीमती फ़ारसी कालीनों और शानदार झूमरों से सजाया गया था। हॉल और आंगन के ऊपरी चबूतरे पर चार तख्त (लकड़ी के चबूतरे) एक साथ रखे गए थे, जिन पर सूती चटाइयाँ बिछी थीं। आंगन में इन तख्तों के ऊपर एक रंगीन चंदवा था। ये सफेद चादरों से ढके थे, जिन पर सिलवटों का कोई निशान नहीं था। मुख्य शयनकक्ष में एक सुंदर और आकर्षक पलंग था, जिस पर चार पतले और बेहद मुलायम आयताकार तकिए रखे थे। तकिए एक के ऊपर एक रखे थे। इनके ऊपर दो छोटे 'फूलों के आकार के तकिए' थे, जो लेटने पर उसके दोनों ओर गालों को सहारा देते थे। पलंग के दोनों ओर नीचे की ओर दो छोटे गोल तकिए थे, जो जांघों को सहारा देते थे। पलंग के सामने वाले तख्त पर सम्मान की सीट को चिह्नित करने के लिए एक कालीन बिछाया गया था। इस कालीन पर और पलंग को छूता हुआ एक गौ था, जो एक बड़ा बैरल के आकार का तकिया था। उसके पास विभिन्न रंगों के रेशमी पर्दों वाली कई पालकी थीं। वह शाही अंदाज में घूमता था और उसके आगे-पीछे सशस्त्र सेवक चलते थे।
"क्या उनके समय में और भी लोकप्रिय नर्तकियां थीं?" जड्डन जानना चाहता था।

“ओह! हाँ। प्रसिद्धि और महत्व में अगला नाम सरस रूप का था। एक बार उन्हें देख लेने वाला उन्हें निहारता ही रह जाता था। वह एक उत्कृष्ट नर्तकी थीं। उनका गायन स्वर्ग से आने वाली ताज़ी हवा के झोंके जैसा था। उनसे मिलना आसान नहीं था। परिचय कराना पड़ता था और उन्हें अच्छी-खासी रकम अग्रिम देनी पड़ती थी। चिमनी भी बहुत लोकप्रिय थीं, हालांकि मुख्य रूप से एक गायिका के रूप में। वह सम्राट मोहम्मद शाह की प्रिय थीं। वह उन्हें अक्सर लाल किले में अपने लिए गाने के लिए आमंत्रित करते थे। मैं उनसे एक बार मिला था और मुझे याद है कि उनका व्यवहार बहुत ही सौम्य था। फिर थीं गुलाब, जिनके गीत श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे, उनकी अदाएं पुरुषों को मदहोश कर देती थीं। उनमें हाजिरजवाबी की अद्भुत कला थी, जिससे उनके प्रशंसक खूब मनोरंजन करते थे। तन्नो थीं, जो अपने युवा दिनों में सम्राट की प्रिय थीं, अपने सुंदर सुडौल शरीर और मधुर व कोमल आवाज के कारण। अपने प्रदर्शन के दौरान वह गालियों का प्रयोग करते हुए खूब मजाक करती थीं, जो उनकी पहचान बन गई थी। राग ख्याल और शास्त्रीय संगीत के अन्य रूपों में माहिर कई अन्य गायिकाएँ भी थीं। संगीत।"
"क्या नूर बाई जितनी धनी कोई और नर्तकी या गायिका थी?"
“नहीं! नहीं! लोकप्रियता या धन-दौलत में कोई भी उनके आस-पास भी नहीं था।” गुलबदन ने कहा। “नूर बाई बेहद सख्त मिजाज की थीं। जो अमीर लोग नियमित रूप से उनकी हवेली आते थे, वे समय के साथ बर्बाद हो गए। लोग कहते थे कि वह लोगों का धन ऐसे चूसती थीं जैसे जोंक खून चूसती है। लेकिन मुझे कहना होगा कि वह मेरे प्रति बहुत दयालु थीं, खैर, ज्यादातर समय। मैंने उनका कठोर चेहरा सिर्फ एक बार देखा।” गुलबदन के चेहरे पर उदासी छाई हुई थी और जड्डो को लगा कि उनकी आँखों में चमक आ गई है।
“महफ़िल में अक्सर आने वाले नौजवान रईसों में से एक मेरा दीवाना बन गया और मैं भी उस पर मोहित हो गई। हम अक्सर एक-दूसरे को देखते रहते थे और मुजरा के दौरान मैं उसके पास जाकर झुककर प्रणाम करती थी। नूर बाई ने अपनी पैनी नज़रों से हम दोनों के बीच के इस प्यार को भांप लिया। एक बार जब नाच खत्म हो गया, तो वह नौजवान रईस मेरे पीछे आया। नूर बाई ने उसका रास्ता रोक दिया और चिल्लाई।”
‘उससे दूर रहो, और मेरी महफ़िल में कभी मत आना। अगर तुमने यहाँ आने की हिम्मत की, तो मैं तुम्हें बाहर निकलवा दूँगा।’

उसने मुझे अपने कमरे में चलने के लिए कहा। जब उसने बोलना शुरू किया तो उसकी आवाज़ बहुत गंभीर थी।
‘देखो गुलबदन, हमारे पेशे में स्थायी स्नेह के लिए कोई जगह नहीं है। जब भी हम किसी को फंसाना चाहते हैं, तो हम उससे प्यार करने का नाटक करते हैं। नखरेबाजी की कला से। हम उसे सचमुच अपने पैरों पर गिरा सकते हैं और उसका भरपूर फायदा उठा सकते हैं। लेकिन किसी के साथ कोई स्थायी रिश्ता नहीं होना चाहिए। तुम उस महान भावना को भूल जाओ।’
मैं फूट-फूटकर रोने लगी और उसे बताया कि मैं उससे सचमुच प्यार करती हूँ और उसके साथ रहना चाहती हूँ; उसने पहले ही मुझसे शादी करने की इच्छा ज़ाहिर कर दी थी। नूर बाई मुझ पर बहुत गुस्सा हुई और उसने मुझे ज़ोरदार थप्पड़ मारा। मैं रोते हुए अपने कमरे में भाग गई। मैं इतनी परेशान थी कि मैंने एक हफ्ते तक नाचने से इनकार कर दिया। मैंने उससे बार-बार शादी करने की इजाज़त मांगी, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी रही और मुझसे और ज़्यादा नाराज़ हो गई।
"सिर्फ बाई ही इतनी असंवेदनशील थी।"
“नहीं, जद्दन, अब जब मैं इसके बारे में सोचती हूँ, तो मुझे लगता है कि सफल होने के लिए उसके पास कोई विकल्प नहीं था। लोकप्रिय नर्तकियों को जाने नहीं दिया जा सकता क्योंकि विवाह के लिए उनकी बहुत मांग होती है। हम बहुत जल्दी बूढ़े हो जाते हैं और हमें अपनी जवानी का भरपूर फायदा उठाना चाहिए।” आप भी शायद मुझे क्रूर समझेंगे, जिस तरह से मैंने आपको उस सैयद को सौंप दिया जिसने आपसे शादी करने का वादा किया था। मुझे आपसे अलग होना ही पड़ा, आप हवेली में फल-फूल नहीं सकती थीं, आप अच्छी नर्तकी या गायिका नहीं थीं। ठीक उसी समय सलामत जान अचानक आ गई। "अरे! तुम किस बारे में गपशप कर रही हो?" गुलबदन अपनी सहेली को देखकर खुश हुई। “मैं उसे नूर बाई के बारे में बता रही थी।”
सलामत जान उस दौर की एक प्रसिद्ध नर्तकी भी थीं, जब नूर बाई ने दिल्ली के संभ्रांत वर्ग को अपने वश में कर रखा था। जद्दन अपने दोस्तों को अतीत की यादों में खोए हुए छोड़कर चली गईं।
“नूर बाई की बात करें तो, मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी हिंदू व्यापारी चुन्ना माई के बारे में सुना है? आप तब काफी छोटी रही होंगी।” सलामत ने कहा।
नहीं, मुझे वह याद नहीं है।

“चुन्ना माई एक बेहद सफल जौहरी थे, जो अमीरों और यहाँ तक कि मुगल बादशाह को मोती, हीरे, माणिक और सोने के आभूषण उपलब्ध कराते थे। वे धन-दौलत से भरपूर थे, लेकिन उनकी कोई संतान नहीं थी। उनकी पत्नी का भी अचानक निधन हो गया, जिससे वे बूढ़े अकेले रह गए। अपना समय बिताने के लिए वे नूर बाई की हवेली में होने वाले मुजराओं में अक्सर जाने लगे। समय बीतने के साथ-साथ उनमें एक अजीब सी सनक घर करने लगी। उन्होंने नूर बाई से एक विनती की – वे हर दिन उनके साथ कुछ समय अकेले बिताना चाहते थे।”
‘अरे बूढ़े मूर्ख, क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?’ नूर बाई चीखी। 'अरे, मुझे गलत मत समझो, मैं बस तुम्हारे हाथ पकड़ना चाहता हूं और तुम्हें देखता हुआ बैठना चाहता हूं।'
मुझे पूरा यकीन है कि आप कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते, लेकिन यह एहसान बहुत महंगा साबित होगा।
नूरबाई हर विशेष मुलाकात के लिए मोटी रकम मांगती थी। उसने खुद मुझे इसके बारे में बताया था। लोग कहते हैं कि जब चुन्ना माई की मृत्यु हुई, तब तक उनकी अधिकांश संपत्ति नूरबाई के पास चली गई थी।
धन्यवाद, जारी है।
“हाँ, बिल्कुल! जैसा कि मैंने आपको बताया था, मैं फैजाबाद गया था और करीब एक महीने तक प्यारो के साथ रहा। मुझे पता चला कि वह नवाब शुजा उद दौला की बहुत प्रिय थीं। जब वह अपने राज्य में यात्रा पर जाते थे, तो प्यारो उनके काफिले के साथ एक अलग बैलगाड़ी में जाती थीं, उनके आलीशान तंबू भी गाड़ियों में होते थे, नवाब के तंबुओं के साथ; सभी की सुरक्षा में करीब दस सैनिक तैनात रहते थे। प्यारो का नवाब पर काफी प्रभाव था, उन्होंने तो कुछ लोगों को राज्य में महत्वपूर्ण पद दिलाने में भी मदद की थी। कहा जाता है कि हकीम महदी को अवध प्रांत का राज्यपाल उन्हीं के हस्तक्षेप से नियुक्त किया गया था।”
शुजा स्वभाव से सुंदर स्त्रियों के प्रति आकर्षित रहता है और उसे नाचने- गाने का शौक है। कस्बे में बाज़ार की इतनी सुंदरियाँ और नर्तकियाँ हैं कि कोई गली-कूचे उनसे खाली नहीं रहते। नवाबों के संरक्षण ने उन्हें इतना धनवान बना दिया है कि अधिकांश वेश्याओं के घरों से सटे दो-तीन तंबू हैं। प्यारोस का घर भव्य है, हालांकि आपकी हवेली जितना बड़ा नहीं है।

मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारे लिए फैजाबाद में बस जाना सबसे अच्छा रहेगा। तुम अभी भी जवान और बेहद खूबसूरत हो। फरज़ाना को भी साथ ले जाओ, मुझे यकीन है कि तुम खूब धन कमाओगी। फैजाबाद का दरबार कला प्रेमियों का बहुत सम्मान करता है। संगीतकार वहाँ उमड़ते हैं। हैदराबाद, आगरा और दिल्ली के उर्दू कवियों को भरपूर समर्थन और प्रोत्साहन मिलता है, कई तो वहाँ स्थायी रूप से बस गए हैं। मीर हसन और नज़ीर ने भी फैजाबाद को अपना निवास स्थान बनाया है। जहाँ तक नृत्य की बात है, नवाब को इसका बहुत शौक है। “आपने मुझे अभी भी सुंदर कहा, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। लेकिन मैं इस हवेली का क्या करूँ?”
"बेच दो।"
“इसे कौन खरीदेगा? यह इलाका तवायफों का मोहल्ला कहलाता है। तथाकथित इज्जतदार व्यापारी, जो हमारा सहारा बनते हैं, हमें नीची नजरों से देखते हैं। वे हमारे इलाके में कभी कोई संपत्ति नहीं खरीदेंगे। ये लोग बड़े पाखंडी हैं। किसी और के पास पैसा नहीं है। और फिर, मैं कब तक काम कर पाऊंगी? और, मुझे लगता है कि आप फरज़ाना को कुछ ज्यादा ही समझ रहे हैं। वह गाने- नाचने की बारीकियां नहीं सीख पाई है; बेशक, मैं अभी भी उसे सिखाने की कोशिश कर रही हूं। लेकिन हां, वह खूबसूरत और आकर्षक जरूर निकली है।”
सलामत ने सहमति में सिर हिलाया। उसने कहा।
“फैजाबाद में मुझे पता चला कि कई रईस लोग लड़कियों की तुलना में लड़कों को ज़्यादा पसंद करते हैं। यहाँ तक कि मुगल बादशाह मोहम्मद शाह भी, लगता है, लड़कों को ही प्राथमिकता देते थे। कुछ ऐसे प्रतिष्ठान भी हैं जो उनकी पसंद का ख्याल रखते हैं। दरअसल, प्यारो ने सुझाव दिया कि आप भी लड़कों को रखने पर विचार कर सकती हैं।”
“नूर बाई के ज़माने में भी किसी ने यह सुझाव दिया था। वह इसके सख्त खिलाफ थीं; उन्हें लगता था कि यह पतन का संकेत है। वह जानती थीं कि लड़कों को लाना-ले जाना सस्ता पड़ता है, लेकिन हमारे पेशे में लड़कियों की तुलना में उनका जीवन बहुत छोटा होता है। और फिर, यह भी देखना पड़ता है कि लड़कियों का इन लड़कों से कोई वास्ता न रहे। मुझे लगता है कि उनकी बात में दम था।” गुलबदन ने अपनी सहेली से कहा।
“कभी-कभी ज़िंदगी बहुत मुश्किल हो जाती है, है ना?” सलामत ने आह भरी। “लेकिन आगे बढ़ना ही पड़ता है।”

फरजाना

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, जद्दन गुलबदन के बहुत करीब आ गई। वह घंटों उसके साथ बिताती थी।
उससे बातचीत करते हुए, सलामत ने नूर बाई के जीवन की कहानी को बीच में ही रोक दिया था।
सलामत के विदा लेने के बाद उन्होंने अपनी बातचीत फिर से शुरू कर दी।
“एक बार नूर बाई बीमार पड़ गईं,” गुलबदन ने बात शुरू की। “मैं हर समय उनके बिस्तर के पास था, लेकिन उन्होंने मुझसे आराम करने को कहा और कहा कि नौकरानी उनकी देखभाल करेगी। ठीक होने के बाद उन्होंने मुझे अपने कमरे में बुलाया और कहा कि उनके बाद हवेली की बागडोर मेरी होगी। मुझे सारी संपत्ति के साथ हवेली विरासत में मिलेगी। उन्होंने पहले ही वसीयत बना ली थी और उसे दिल्ली के नाज़िम के पास दर्ज करवा दिया था। उनकी इस उदारता के लिए मेरे पास धन्यवाद देने के लिए शब्द नहीं थे। उन्होंने जवाब दिया कि मैं ही एकमात्र व्यक्ति था जो वास्तव में उनके दिल के करीब था। इस तरह मुझे यह हवेली विरासत में मिली। यह मेरे जीवन से अटूट रूप से जुड़ी हुई है।”
“पर बताओ, जद्दो,” गुलबदन ने जद्दन से पूछा। “जब मैं तुमसे जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर मिला था, तब तुमने कहा था कि यह हवेली ही वह एकमात्र जगह है जहाँ तुमने अपने जीवन के कुछ सुखद वर्ष बिताए थे। क्या तुमने सचमुच ऐसा कहा था? मुझे लगा था कि तुम मुझे यहाँ से भेजने के कारण मुझसे नाराज़ हो।” “नहीं, चौधरी! यह हवेली सचमुच मेरे लिए आनंद का स्रोत थी। आपको याद होगा कि मैं एक कंचनी की बेटी थी, मुझे नहीं पता मेरे पिता कौन थे। मेरी माँ ने मुझे एक बार बताया था कि वह एक छोटे से कोठे में काम करती थीं, जहाँ दिहाड़ी मजदूर काम करते थे जिनकी आमदनी बहुत कम होती थी। कभी-कभी पालकी उठाने वाले झुंड में कोठे पर आते थे, जब वे किसी प्रसिद्ध नर्तकी को किसी अमीर व्यापारी या रईस के घर मुजरा के लिए ले जाते थे, और उन्हें कुछ घंटों के लिए छुट्टी मिल जाती थी। वह इस हवेली में आई थीं और मुझे यहाँ तब छोड़ गई थीं जब मैं अभी बच्ची ही थी। वह खुद दुखों से भरी जिंदगी जी रही थीं और चाहती थीं कि मैं जीवन में आगे बढ़ूँ, सम्मान और सुख का जीवन जीऊँ। आपने मुझ पर कृपा की और मुझे आश्रय दिया। आपने मुझे कथक, गायन और वाद्य संगीत

सिखाने की कोशिश की। मैं आपके संभ्रांत संरक्षकों की अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतर सकी, और कुछ वर्षों बाद आपने मुझे बागपत के एक शराबी बूढ़े किसान सैयद के पास भेज दिया।”
उनकी पहली बेगम ने मेरी जिंदगी नरक बना दी थी। कुछ साल बाद उनका देहांत हो गया। उनकी पहली पत्नी से हुए बेटे ने मुझे परेशान करना शुरू कर दिया। मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकी, और एक दिन सुबह-सुबह अपनी बेटी के साथ चुपके से घर से निकल गई। किस्मत से, मुझे दिल्ली जा रही गेहूं की बोरियों से लदी एक बैलगाड़ी मिल गई। मैंने बैलगाड़ी मालिक को पांच पैसे दिए, और उसने हमें गेहूं की बोरियों पर बैठने की इजाजत दे दी। इस तरह हम शाहजहाँ आबाद पहुँचे। चौधरीयान, आपकी हवेली ही मेरे इस बदकिस्मत जीवन में एकमात्र घर है जिसे मैंने जाना है।
दिन बीतते गए। अचानक एक दिन जद्दन गंभीर रूप से बीमार पड़ गया।
गुलबदन के तमाम प्रयासों के बावजूद, फरज़ाना बच नहीं पाई। कुछ समय तक फरज़ाना बहुत दुखी रही, लेकिन जल्द ही उसने अपनी माँ की मृत्यु को स्वीकार कर लिया।
फरज़ाना कद में छोटी होने के बावजूद एक खूबसूरत महिला बन चुकी थी। वह चतुर और होशियार थी, और अपनी मर्जी की मालिक थी। जल्द ही उसे एहसास हो गया कि वह गुलबदन के कोठे की शान है। एक बार जब गुलबदन को कुछ मेहमानों के सम्मान में लाल किले में मुजरा के लिए आमंत्रित किया गया, तो फरज़ाना भी उनके साथ गई। फरज़ाना ने भी नृत्य किया और उसे खूब सराहना मिली। वह दीवान खास की भव्यता से अभिभूत थी और सोच रही थी कि क्या उसे किले के पवित्र परिसर में दोबारा आने का मौका मिलेगा।
फरज़ाना के लिए अपनी बढ़ती शारीरिक इच्छाओं को दबाना जल्द ही मुश्किल हो गया। एक बार जब गुलबदन घर से बाहर गई हुई थी, तो उसने हवेली में पान और अन्य सामान लाने वाले एक नौकर को बहकाया। उसे अपने पहले अनुभव से इतना आनंद मिला कि वह हमेशा उस बेचारे लड़के के साथ संबंध बनाने का मौका ढूंढती रहती थी। गुलबदन को इस बात का पता चल गया, लेकिन उसने इस मामले को अनसुना कर दिया। बाद में पता चला कि फरज़ाना गर्भवती है और कुछ समय बाद उसने एक बच्ची को जन्म दिया। उसे आश्चर्य हुआ कि गुलबदन समेत सभी ने उसे बधाई दी। मिठाई बांटी गई। मरज़ई नाम के एक हिजड़े ने फरज़ाना से कहा:

“तुम बहुत भाग्यशाली हो कि तुम्हारी बेटी हुई। वो बड़ी होकर तवायफ बनेगी और इस घर में समृद्धि लाएगी। अगर लड़का होता तो वो किसी काम का नहीं होता और हमें उसका पालन-पोषण करना पड़ता।”
फरज़ाना अक्सर सोचती थी कि मरज़ई हवेली में कैसे आ गया; यह एक उपयुक्त अवसर था।
“मरज़ई, मुझे बताओ, तुम यहाँ कैसे आ गए?”
“लंबी कहानी है, फरज़ो! मैं जन्म से अरब हूँ। जब मैं छोटी थी, कुछ पुर्तगाली नाविकों ने मुझे अरब के मेरे छोटे से तटीय गाँव से अगवा कर लिया। वे मुझे अपनी नाव में गोवा ले आए और वहाँ मेरा बधियाकरण कर दिया। फिर उन्होंने मुझे एक गुलाम व्यापारी को बेच दिया, जो मुझे दिल्ली ले आया। उसने मुझे कई जगहों पर बेचने की कोशिश की। नूर बाई ने उसे मनचाही कीमत दे दी।”
“यह आपके लिए बहुत कठिन रहा होगा!”
“हाँ। काश मैं एक लड़की होती तो मेरे अपहरणकर्ता मुझे इसी तरह के किसी कोठे में बेच देते जहाँ मेरा जीवन कहीं अधिक आरामदायक होता।”
“क्या मैं आपसे कुछ पूछूं? क्या आपको कभी किसी लड़की के साथ प्यार करने का मन करता है?”
“इसी हवेली में एक लड़की मुझे बहुत पसंद आई। मैंने एक बार उसे चूमा और उसके स्तन छुए। वो बस हंस पड़ी और बोली, ‘बेचारा!’” मातृत्व की जिम्मेदारियों ने फरज़ाना को गंभीर बना दिया। वो अपने बच्चे से बहुत प्यार करती थी। कुछ दिनों के आराम के बाद फरज़ाना ने महफ़िल में फिर से नृत्य करना शुरू कर दिया।
फरज़ाना की मांग अब भी काफी अधिक थी।

वाल्टर

एक सर्दी की शाम, थोड़ा झुका हुआ एक लंबा, मजबूत और तगड़ा आदमी आया... हवेली। वह बहुत गोरा था और उसके बाल चांदी जैसे भूरे रंग के और शेर जैसे घने थे।
फरज़ाना की खूबसूरती ने उस आदमी को मोहित कर लिया और वह अक्सर हवेली आने लगा। फरज़ाना भी उसकी मजबूत कद-काठी और अनोखे बालों से आकर्षित थी। धीरे- धीरे गुलबदन को उस आगंतुक के फरज़ाना के प्रति आकर्षण का एहसास होने लगा। कुछ दिनों बाद गुलबदन ने इस मामले पर फरज़ाना से बात करने का फैसला किया। उसने फरज़ाना को अपने कमरे में बुलाया और कहा:
“फरज़ो, मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। आजकल बहुत थका हुआ महसूस करता हूँ। मैं अपना कारोबार बंद करना चाहता हूँ। मैंने तुम्हारी माँ से वादा किया था कि मैं हमेशा तुम्हारे हितों का ध्यान रखूँगा। मुझे डर है कि यहाँ तुम्हारे लिए भी भविष्य अच्छा नहीं है। मुझे पता चला है कि अवध के नए नवाब ने अपना दरबार फैजाबाद से लखनऊ स्थानांतरित कर दिया है। अपने दिवंगत पिता की तरह, वह भी सुंदर स्त्रियों के बहुत बड़े प्रशंसक हैं। अगर तुम लखनऊ चले जाओ, तो तुम्हारा भविष्य सुरक्षित हो जाएगा। लेकिन अगर तुम लखनऊ नहीं जाना चाहते, तो एक और विकल्प है।” गुलबदन एक पल के लिए रुका।
फरज़ाना ने चिंता से उसकी ओर देखा। वह क्या कहने वाली थी?
“यूरोप से एक लंबा, गोरा आदमी आया है। वह जाट राजा के लिए काम करता है और आगरा में रहता है।” अचानक, फरज़ाना ने नीचे देखा। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा।
“उसके पास सैनिकों का एक दल है जो उसे अपना सेनापति कहता है। यह सज्जन जाट राजा के बहुत करीबी होने का दावा करते हैं और राजपूताना के अन्य राजाओं और आस-पास के सरदारों के साथ युद्ध संबंधी मामलों में उन्हें सलाह देते हैं। वह राजा द्वारा चलाए गए विभिन्न अभियानों में भाग लेते हैं। उन्होंने मुझे बताया कि वह तुमसे शादी करने के इच्छुक हैं। मैंने उनसे कहा कि तुम मेरी बेटी हो। तब उन्होंने कहा कि वह तुम्हें राजकुमारी की तरह रखेंगे और सैन्य अभियानों से अर्जित धन-संपत्ति के कारण वह तुम्हें विलासितापूर्ण और आरामदायक जीवन दे सकते हैं।”

“प्यारी फरज़ो, तुम अभी बच्ची हो। तुम्हें दुनियादारी सीखनी है। अपने पति को कभी मत बताना कि तुम कुंवारी नहीं हो;
वो तुम्हें और भी ज़्यादा प्यार करेगा। अपनी पहली रात को, एक पिन या सुई अपने पास रखना और बिना उसकी जानकारी के, अपनी जांघ से थोड़ा सा खून निकाल लेना और उसकी एक बूंद चादर पर गिरा देना। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें मेरी बात समझ आ गई होगी।
अगली शाम, जनरल फरज़ाना के लिए दोनों तरफ पर्दों वाली एक ढकी हुई बैलगाड़ी लेकर आए। जनरल घोड़े पर सवार होकर इठलाते हुए चल रहे थे। उनके पीछे सशस्त्र गार्ड और दो मशालधारी चल रहे थे। फरज़ाना मन ही मन बहुत परेशान थी। वह एक अनजान व्यक्ति के साथ यात्रा पर निकल पड़ी थी, भविष्य में उसके लिए क्या लिखा था? उथल-पुथल भरे विचारों में खोई हुई वह सो गई। जब वह सुबह जल्दी उठी, तो उसने देखा कि सूरज अभी तक नहीं उगा था। जैसे ही उसने बाहर देखने के लिए पर्दे हटाए, उसे जनरल की टूटी-फूटी उर्दू में आवाज सुनाई दी: “डार्लिंग, कैसी हो? हम ब्रज के पास हैं। हम आज का दिन मेरे एक दोस्त के साथ बिताएंगे और शाम को निकलेंगे।”
उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह जनरल को कैसे संबोधित करे। उसने कहा:
“सर, मुझे बहुत अच्छी नींद आई। लेकिन आप बहुत थके हुए होंगे क्योंकि आपने पूरी रात घोड़े पर सफर किया है।”
जनरल को हंसी आ गई।
“मेरा नाम वाल्टर सोम्ब्रे है। आप मुझे वाल्टर कह सकते हैं। मैं आपको बेगम कहूँगा। हाँ, बेगम, घोड़े की सवारी करना मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं है। यह मत भूलिए कि मैं एक अनुभवी सैनिक हूँ। मैं बिना किसी असुविधा के घोड़े पर बहुत लंबी दूरी तय कर सकता हूँ।”
अगली सुबह, वे आगरा किले के भीतर स्थित सोमब्रे के साधारण से निवास पर पहुँचे। यह निवास यूरोपीय शैली में सजा हुआ था। फरज़ाना इसकी भव्यता देखकर दंग रह गई और उसे लगा कि यह दिल्ली के लाल किले से भी कहीं अधिक शानदार है।
सोमब्रे ने एक काज़ी को बुलाया और मुस्लिम रीति-रिवाजों के अनुसार फरज़ाना से औपचारिक रूप से विवाह कर लिया। उसने फरज़ाना को बताया कि उसकी पहले से ही एक पत्नी और लगभग आठ साल का एक बेटा ज़फ़रयाब है। उसे यह जानकर

क्या आपने कभी व्हिस्की पी है?
"चौधरायियों ने हमें किसी भी प्रकार की शराब पीने की अनुमति नहीं दी।" “ठीक है, तो हम आपको क्लैरेट से शुरुआत करवाते हैं।”
उसने थोड़ी सी शराब निकाली और फरज़ाना को दी। उसने एक घूंट लिया और उसे पसंद आया। वाल्टर ने उसके लिए थोड़ी और शराब डाली और खुद भी व्हिस्की का एक छोटा सा पैग ले लिया। खाना खाते और शराब का आनंद लेते हुए वाल्टर ने फरज़ाना से कहा।
“बेगम, आप बहुत छोटी हैं। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपको यौन संबंध का कोई अनुभव है?”
"अरे नहीं।" फ़रज़ाना को गुलबदन की सलाह याद आ गई।
"तो फिर, आपको पहली बार में थोड़ा दर्द महसूस हो सकता है। मैं ध्यान रखूंगा कि आपको ज्यादा चोट न लगे।"
खूब शराब पीने के बाद उसने फरज़ाना से पूछा कि क्या वह और शराब लेना चाहेगी। उसने यह कहते हुए मना कर दिया कि शराब उसके सिर पर चढ़ चुकी है। “अच्छा। अब तुम अपने कपड़े उतारो, मुझे तुम्हें पूरी शान से देखने दो।” फरज़ाना हिचकिचाई। वाल्टर हँसा:
"चलो, यह तो रोज़ाना का काम होने वाला है।"
जब वह कपड़े उतार रही थी तब वाल्टर उसे देखता रहा।
“अद्भुत! ईश्वर ने आपको बनाते समय आप पर बहुत कृपा की है।”
वह उसकी रेशमी चिकनी त्वचा और संगमरमर जैसी रंगत से पूरी तरह मोहित हो गया था।
कुछ दिनों तक उनके बीच प्रेम-संबंध बनते रहे। एक शाम जब वे कुछ हद तक संतुष्ट हो गए, तो शराब पीते हुए फरज़ाना ने पूछा:
मैं बैरी बीबी से किस तरह तुलना करूँ?
“मैंने उसे कई साल पहले एक साधारण से कोठे से उठाया था। उसने मुझे एक बेटा दिया है, लेकिन बिस्तर पर वह हमेशा निष्क्रिय रही है। उसके साथ सेक्स करना हस्तमैथुन करने जैसा था। लेकिन तुम तो परम आनंद हो। अब मुझे उसे परेशान करने की ज़रूरत नहीं है। और मैं तुमसे एक बेटा चाहता हूँ।”
"अल्लाह की मर्ज़ी से आपकी इच्छा पूरी होगी।"
थोड़ी देर रुकने के बाद फरज़ाना ने कहा।
"लेकिन वाल्टर, तुम्हारे पास और भी कई महिलाएं रही होंगी।"

"डार्लिंग, मेरी उम्र 45 साल है। मेरे कुछ प्रेम प्रसंग रहे हैं, लेकिन अब जब तुम मेरे साथ हो, तो मुझे यकीन है कि अब मुझे और अधिक अनैतिक संबंध बनाने की आवश्यकता नहीं होगी।"
"लेकिन मुझे बताइए, किसी महिला के साथ आपका सबसे दिलचस्प अनुभव क्या था?" वॉल्टर ने कुछ देर सोचा और फिर कहा:
“यह बहुत पहले की बात है, भारत आने के ठीक दो साल बाद। मैं कलकत्ता में तैनात था। मेरे पास न तो पैसे थे और न ही कोई रुतबा। मैंने एक साधारण सैनिक की नौकरी कर ली थी और बहुत अकेला और निराश महसूस करता था। मैं एक कोठे पर जाया करता था। मुझे नहीं पता कि मुझे यह सब बताना चाहिए या नहीं, आप शायद परेशान हो जाएं।”
फरज़ाना ने विरोध किया:
“बिल्कुल नहीं, वाल्टर। मुझे पता है कि सभी पुरुष बहुविवाह करने वाले प्राणी होते हैं। नवाबों और राजाओं को ही देख लो, उनके पास अनेक स्त्रियाँ होती हैं। जब तक तुम मुझसे प्रसन्न हो, मुझे किसी ऐसे व्यक्ति से ईर्ष्या क्यों करनी चाहिए जिससे तुम कई साल पहले मिले थे?”
“ठीक है, अगर आपको यकीन है तो मैं आपको पूरी कहानी बताता हूँ। एक दिन कोठे पर मैंने तांबे के रंग की, सुडौल, मध्यम कद की एक युवती को देखा। मैं न तो अंग्रेज़ी बोल सकता था और न ही बंगाली। तब तक मैं केवल फ्रेंच ही बोल पाता था। जब मैं जाने ही वाला था, वह मेरे पास आई और अपनी टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में बोली:
मैं आता हूँ।
उसने मेरा हाथ पकड़ा और हाथों के इशारों से मुझे आगे बढ़ने को कहा। मैं उसे अपने छोटे से अपार्टमेंट में ले आया। उस समय मेरे पास कोई नौकर नहीं था और मैं खुद खाना बनाता था। वह मेरे पीछे रसोई में आई। उसके इशारों से मैं समझ गया कि वह हम दोनों के लिए खाना बनाना चाहती है। जब वह खाना बना रही थी, मैंने थोड़ी व्हिस्की पी ली। मैं रसोई में गया और इशारों से उससे पूछा कि क्या वह भी व्हिस्की पीना चाहेगी। वह मुस्कुराई और सिर हिला दिया। खाना खाने के बाद हम बेडरूम में चले गए। उसने अपने कपड़े उतार दिए। उसका शरीर बेहद आकर्षक था, हालांकि वह सुंदर नहीं थी। उसके स्तन बहुत बड़े थे। लेकिन उससे काफी बदबू आ रही थी। मैं उत्तेजित हो गया और अपने कपड़े उतारकर उसे अपनी बाहों में भर लिया और उसके स्तनों को चूसने लगा और फिर उसके होंठों पर

चुंबन किया। उसने मेरा लिंग पकड़ा और मुझे बिस्तर पर खींच लिया। उसने कहा, 'मैं, एक आदिवासी। मुझे बच्चा दो।'
मैं हिचकिचाया। मैं किसी भी तरह की उलझन में नहीं पड़ना चाहता था। मैंने लिंग पर आवरण चढ़ाया, लेकिन उसने उसे उतार दिया। और बिस्तर पर लेटे हुए, उसने मेरे लिंग को अपने अंदर डाला और अपने हाथों से मेरे पूरे शरीर को ज़ोर से दबाया, मानो उसे यकीन न हो कि मैं यह सब करूँगा। जब यह सब खत्म हो गया, तो वह मुस्कुराई और बार-बार मुझे सहलाने लगी।
“यह एक बहुत ही रोचक कहानी है। मुझे याद है, चौधरीयन ने एक बार कहा था कि एक आदिवासी लड़की शादी से पहले बच्चा चाहती है, उनका मानना है कि इससे उसकी शादी की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। और मुझे लगता है कि अगर बच्चे का पिता कोई यूरोपीय हो, तो उसकी संभावनाएं और भी बढ़ जाती हैं।”
“कहानी अभी खत्म नहीं हुई है। वह आदिवासी लड़की मेरे अपार्टमेंट से नहीं गई। मैं ऊर्जा से भरपूर था; वह भी युवा थी। उसने मुझे अलग-अलग मुद्राओं में, कभी-कभी तो पूरे दिन भर, उसके साथ यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर किया। जब मैंने उसके कुछ विचारों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, तो उसने कहा, 'मंदिर देखो।'”
मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रही है। लगभग एक महीने बाद उसने अपने पेट की ओर इशारा करते हुए कहा, 'बेबी आ गया। मैं जा रही हूँ।' मैंने उसे कुछ पैसे देने की कोशिश की, लेकिन उसने लेने से इनकार कर दिया और बार-बार अपने पेट की ओर इशारा करती रही। मैं उसका नाम नहीं जानता था, और वह मेरा नाम नहीं जानती थी। उसने मुझसे कभी संपर्क करने की कोशिश नहीं की, जबकि मैं काफी समय तक कलकत्ता में रहा था। बच्चा, लड़का हो या लड़की, अब तक बड़ा हो गया होगा।
"क्या आपको कभी उसकी याद आई है?"
“कभी-कभी मैं ऐसा करता था, लेकिन अब जब तुम मेरे साथ हो, तो मुझे और क्या चाहिए!”
हनीमून के दिन खत्म होने के बाद, सोम्ब्रे ने अपनी पत्नी को भविष्य की जिम्मेदारियों के लिए प्रशिक्षित करने का फैसला किया। वह चाहता था कि वह घुड़सवारी सीखे।
“घोड़ा एक श्रेष्ठ और उपयोगी जानवर है। यह बैलों से कहीं श्रेष्ठ है, जिनका उपयोग हिंदुस्तान में बड़े पैमाने पर होता है। युद्ध के समय, दृढ़

निश्चयी सैनिकों द्वारा सवार घोड़े दुश्मन की सेना में तबाही मचा सकते हैं।”
सोम्ब्रे ने फरज़ाना का परिचय अपने दल के अधिकारियों से कराया। उनमें से 200 से अधिक अधिकारी थे, जिनमें से अधिकतर यूरोपीय थे।
"मेरे जाने के बाद शायद तुम्हें ही इस कोर की कमान संभालनी पड़े," वाल्टर ने उससे कहा।
फरज़ाना ने विरोध करते हुए कहा, "प्लीज़, वाल्टर। मैं अल्लाह से दुआ करती हूँ कि वह आपको लंबी उम्र दे।"
फरज़ाना मन ही मन टुकड़ी की कमान संभालने की संभावना को लेकर बेहद उत्साहित थी; उसने सपने में भी कभी ऐसी कल्पना नहीं की थी। वाल्टर के मार्गदर्शन में उसने अधिकारियों और सैनिकों के साथ मेलजोल बढ़ाना शुरू किया। वह घोड़े पर सवार होकर सैन्य मोर्चों का चक्कर लगाती थी। वह उनकी देखभाल की ज़िम्मेदारी संभालती थी और उनके स्वास्थ्य की व्यक्तिगत रूप से निगरानी करने के लिए समय निकालती थी। अगर कोई बीमार पड़ जाता, तो वह घंटों बीमार सैनिक या अधिकारी के साथ बिताती थी।
इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वह सोम्ब्रे की पूरी टुकड़ी में बहुत लोकप्रिय हो गई।

पतनशील दिल्ली

फरज़ाना से शादी के कुछ साल बाद, वाल्टर की पहली पत्नी, बैरी-बीबी गंभीर रूप से बीमार पड़ गईं। उन्हें उनके उचित इलाज की व्यवस्था करने और कुछ पारिवारिक मामलों को निपटाने के लिए दिल्ली जाना पड़ा। फरज़ाना ने दिल्ली में रहने के दौरान गुलबदन जान के साथ रहने की अनुमति प्राप्त कर ली। हवेली में प्रवेश करते ही वह सबसे निचले चबूतरे और परिसर के बाकी हिस्से के बीच एक दीवार देखकर आश्चर्यचकित रह गई, जो आंगन के ठीक सामने थी और गलियारे में केवल एक दरवाजा था। गुलबदन अपने कमरे से बाहर आई और फरज़ाना चिल्लाई:
“चौधरायन! तुमने दीवार क्यों बना ली?”
“मैं अब चौधरी नहीं हूँ। मैं आपकी बच्ची को नूरो कहूँगी, लेकिन उसे यह मत बताना कि आप उसकी माँ हैं। उसे बताना कि आप उसकी खाला हैं। वह बड़ी होकर प्यारी और मीठी बच्ची बन गई है और अपनी मीठी बातों से मेरे दुखों का बोझ हल्का कर देती है। अपनी बच्ची को मेरे पास छोड़ने के लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ।”
लेकिन उसे फोन करने से पहले, मुझे उस दीवार के बारे में बता दो। मैं जानने के लिए बहुत बेचैन हूँ।
“जब मैंने कोठा बंद किया, तो मुझे खाली इमारत इतनी विशाल लगी कि मुझे भूतिया घर जैसा एहसास होने लगा। मुझे बुरे सपने आने लगे। अक्सर सपनों में, मैं नूर बाई को नाचने के कपड़ों में अपने शयनकक्ष से बाहर आते और हवेली के ठीक सामने आंगन की ऊपरी छत पर बड़े सलीके से नाचते हुए देखती थी। कभी-कभी मैं चीखते हुए उठ जाती थी। तब सलामत बाई ने मुझे यह दीवार बनाने की सलाह दी। अब मैं चैन से सो सकती हूँ।”
जब फरज़ाना ने नूरो को देखा तो वह खुशी और दुख से फूली नहीं समा रही थी। उसने बच्ची को कसकर गले लगाया और चूमा। नूरो अचंभित थी। फरज़ाना ने उसे लड्डूओं से भरी टोकरी दी।
शाम को, खाना खाने के बाद, फरज़ाना गुलबदन से बात करने के लिए बैठ गई।
“फरज़ो, मुझे अपने बारे में सब कुछ बताओ। फिरंगी लोग तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करते हैं? क्या तुम खुश हो?” गुलबदन यह जानने के लिए उत्सुक थी।

“वाल्टर मेरे प्रति बहुत दयालु और विचारशील हैं। मैं भाग्यशाली हूं कि मैंने उनसे शादी की।”
“आपसे यह सुनकर मुझे कितनी खुशी और राहत मिली है, इसका आप अंदाजा भी नहीं लगा सकते। जब मैंने आपको उसके साथ भेजा था, तब मैं काफी चिंतित थी। वह आपसे काफी उम्र में बड़ा है। क्या इससे आपको कोई चिंता होती है?”
“दुखद अतीत के बाद, मैं इससे बेहतर भविष्य की क्या उम्मीद कर सकता था? चौधरीयन, जीवन कैसा चल रहा है?”
“दिल्ली में हर किसी की ज़िंदगी, आपके यहाँ रहने के समय से कहीं ज़्यादा बदतर हो गई है। अब, कृपया मुझे चौधरीयन कहना बंद करें, फरज़ो; अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मुझे अम्मा कहकर बुलाएँ।”
लेकिन अम्मा, आपके पास रहने के लिए घर है और आपके पास अपना सामान भी है। बचत भी; तो फिर आपको किस बात की चिंता है?
“मैं कह सकता हूँ कि आर्थिक रूप से मैं ठीक हूँ, कम से कम अभी के लिए। मेरे पास एक पूर्णकालिक नौकरानी भी है जो नूरो और मेरी देखभाल करती है। मैं मूल रूप से उन लोगों की बात कर रहा था जिनकी अपनी कोई नियमित आय नहीं है। कानून व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई है और इस शहर में कोई भी सभ्य व्यक्ति सुरक्षित महसूस नहीं करता। लुटेरे और डाकू बेखौफ होकर अपनी कुटिल गतिविधियों को अंजाम देते हैं। दिल्ली के कोतवाल फौलाद खान का इन अपराधों में शामिल होने की बात कही जाती है। ध्यान रहे, यह एक गुप्त बात है। कुछ दिन पहले उसका एक एजेंट मुझसे मिलने आया और शिकायत की कि मैंने कई महीनों से मासिक सुरक्षा राशि नहीं भेजी है। जब मैंने उसे बताया कि मैंने अपना व्यवसाय बंद कर दिया है और मेरी कोई आय नहीं है, तो उसने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया। वह हवेली के चक्कर लगाता रहा और आस-पड़ोस में भी पूछताछ करता रहा। यहाँ झूठ और छल का बोलबाला है। जैसा कि कवि ने कहा है:
Ai jhoot, aaj shahr mein tera hi daur hai,
Shewa yehi sabhon ka, yehi sab ka taur hai.
हे झूठ, तुम इस नगर के सर्वोच्च स्वामी हो।
आप लोगों के जीवन का मूलमंत्र हैं, आप ही लोकप्रिय आस्था हैं।
Ai jhoot tu shiaar hua sari khalak ka,
Kya shah ka, kya tvazir ka, kya ahl–e–daliq ka
हर कोई आपकी बात मानता है, दिन-रात आपकी पूजा करता है।

चाहे वह राजा हो, उप-शासक हो या कोई साधारण व्यक्ति।
आप वाकई अद्भुत हैं। आपको ग़ज़लें याद हैं। ये पंक्तियाँ किसने लिखी हैं? “मीर तकी मीर। मैं अपना बहुत सारा खाली समय प्रसिद्ध उर्दू कवियों की रचनाएँ पढ़ने और सुनाने में बिताता हूँ। वे मुझे अच्छी संगत देते हैं। झूठ की बात करें तो, मुझे आपको दिल्ली में इन दिनों चल रही एक कहानी भी बतानी चाहिए। कहा जाता है कि शाह आलम के एक प्रमुख मंत्री का एक कर्मचारी, जो अक्सर अपने बॉस के साथ मनमानी करता था, एक बार मंत्री से मिलने आया और उससे पूछा गया,
क्या ख़बर है?
कुछ खास नहीं, बस एक व्यापारी आपके उपयोग के लिए झूठ से भरी चार गाड़ियां लेकर आया है।
बस इतना ही? अरे, मैं तो इसे एक दिन में ही खा सकता हूँ!
फरज़ाना मुस्कुराई और अचानक उसका मन हल्का हो गया। आखिरकार, उसने सही समय पर सही फैसला लिया था।

योद्धा

मैं आपके साथ सैन्य अभियान पर जाना चाहूंगा।
वाल्टर अपनी बेगम की बातों पर हैरान रह गया। वह जोर से हँस पड़ा।
“मेरी महिला, लड़ाई एक गंभीर मामला है। क्या आप जानती हैं कि यह कितना खतरनाक है?”
“मैं वॉल्टर का अनुमान लगा सकती हूँ। फिर भी मैं एक वास्तविक युद्ध का प्रत्यक्ष अनुभव करना चाहूँगी।” फरज़ाना जानती थी कि वह क्या माँग रही है।
“यह तो आपकी बहुत बहादुरी है! सच में, अगर आप इतने उत्सुक हैं तो हमें निकट भविष्य में मौका मिल सकता है। लेकिन उससे पहले मेरे कोर की संगठनात्मक संरचना को समझना जरूरी है। आपको सैनिकों के दैनिक जीवन और युद्ध के दौरान सूबेदार और जमादार की भूमिका को समझना होगा। हमारे सैनिक सीधे-सादे हैं। वे बेहद गरीब परिवारों से आते हैं। उनकी आमदनी बहुत कम है; वे लगभग चार रुपये प्रति माह के लिए अपनी जान जोखिम में डालते हैं। लेकिन वे अपने कमांडरों के प्रति बहुत वफादार हैं और अगर उन्हें उन पर भरोसा है तो वे किसी भी आदेश का पालन करेंगे। मैं उन्हें अपने सगे-संबंधियों के समान मानता हूँ। जहाँ तक संभव हो, मैं उन्हें अनावश्यक जोखिम में नहीं डालता। अगर मुझे लगता है कि जीत की कोई संभावना नहीं है तो मैं अपने सैनिकों को वापस बुला लेता हूँ।”
“मुझे लगा था कि जो भी व्यक्ति हथियार उठाने का पेशा अपनाता है, उसका मूल मकसद आर्थिक लाभ ही होता है।” फरज़ाना यह जानना चाहती थी।
“एक तरह से यह सच है। हम दूर-दराज के देशों से आते हैं, फिर भी यहाँ सैनिक बनने का फैसला करते हैं, मुख्य रूप से धन कमाने के लिए। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हमें भाड़े के सैनिक कहा जाता है। बेशक, कई लोग रोमांच की भावना से प्रेरित होकर सैनिक बनते हैं।”
"आपकी सेना में वरिष्ठ पदों पर इतने सारे श्वेत और मिश्रित नस्ल के लोग क्यों हैं?"
“मैं स्थानीय लोगों को नीचा नहीं दिखाना चाहता, लेकिन यूरोपीय लोग बेहतर अधिकारी और नेता बनते हैं। भारतीय सैनिक श्वेत अधिकारियों के अधीन सेवा

करना पसंद करते हैं, क्योंकि उन्हें उनके निष्पक्ष व्यवहार और न्याय की भावना पर अधिक भरोसा है। कमांडरों के दृष्टिकोण से, मैं आपको बता सकता हूँ कि मुझे सेना में अनुशासन बनाए रखने की उनकी क्षमता पर अधिक भरोसा है। अनुशासनहीन सेना पूरी तरह से अप्रभावी होती है। अनुशासन बनाए रखने के मामले में आपको कठोर होना पड़ता है।”
“क्या आप युद्ध में जाने से पहले नमाज़ पढ़ते हैं?” फरज़ाना ने बड़ी मासूमियत से पूछा।
वाल्टर हँस पड़ा।
“मुझे लगा था कि आपको पता होगा कि मैं ईसाई हूँ। लेकिन नहीं, मैं चर्च नहीं जाता और नियमित प्रार्थना भी नहीं करता। आप मुझे गैर-अभ्यासी ईसाई कह सकते हैं।”
फरज़ाना और अधिक जानने के लिए उत्सुक थी। “ईसाई कौन हैं? क्या आप मुझे उनके बारे में और बता सकते हैं?”
वॉल्टर उसकी उत्सुकता देखकर हैरान रह गया। उसने कहा।
“अठारह सौ वर्ष से भी कम समय पहले, ईश्वर के एक दूत, जिनका नाम ईसा मसीह था, बेथलहम में प्रकट हुए। वे करुणा और शांति के प्रतीक थे और अन्याय के विरुद्ध बोलते थे। उनके अनुयायियों ने उनके संदेश को बाइबल नामक पुस्तक में संकलित किया। उनके अनुयायी ईसाई कहलाते हैं। उनके पूजा स्थलों को गिरजाघर कहा जाता है। आगरा में भी एक गिरजाघर है। सम्राट अकबर ने यह भूमि दान में दी थी।”
आपको मुझे भी अपने साथ इस चर्च में ले जाना चाहिए।
जाट राजा ने पहले ही वाल्टर को आगरा का प्रशासक नियुक्त कर दिया था। आगरा का छोटा ईसाई समुदाय इससे बहुत प्रसन्न हुआ। चर्च का निर्माण अभी अधूरा था और फादर वेंडेल ने तमाम कोशिशें कीं, लेकिन आर्थिक तंगी के कारण वे अपने मिशन को आगे नहीं बढ़ा सके। वाल्टर की नियुक्ति उनके लिए ईश्वर का भेजा हुआ एक सुनहरा अवसर साबित हुई। फादर वेंडेल ने वाल्टर और उनकी बेगम को जीर्णोद्धार के अधीन चर्च का दौरा करने के लिए आमंत्रित किया। जैसा कि उन्होंने उम्मीद की थी, सोमब्रे ने निर्माण कार्य पूरा करने के लिए अपने निजी संसाधनों से आर्थिक सहायता प्रदान की।
जब अंततः गिरजाघर बनकर तैयार हुआ, तो प्रशासक को इसके उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया गया। फरज़ाना को गिरजाघर का शांत वातावरण और मंडली का

भाईचारा अत्यंत अनूठा लगा। बाद में, उन्होंने सोचा कि क्या हिंदुस्तान में ब्रिटिश सेना की सफलता के पीछे ईसाई धर्म के गुण ही जिम्मेदार थे। कुछ समय बाद मुगल सम्राट शाह आलम के वज़ीर नुज्जुफ खान ने जाट राजा से आगरा किला वापस लेने का फैसला किया और भरतपुर राज्य से नियंत्रण छीनने के लिए अपनी सेना को आगे बढ़ाया। जाट राजा ने वाल्टर सोम्ब्रे की मदद से अपने क्षेत्र की रक्षा करने का प्रयास किया। फरज़ाना के आग्रह पर वाल्टर ने उसे अभियान में शामिल होने की अनुमति दी, लेकिन साथ ही उसे लगातार चेतावनी भी दी कि यह बहुत जोखिम भरा हो सकता है। वाल्टर की पूरी टुकड़ी के आश्चर्य के बीच, फरज़ाना हाथ में उठी तलवार लिए घोड़े पर सवार होकर अन्य सैनिकों की तरह दुश्मनों पर टूट पड़ी। वाल्टर के कुछ चुनिंदा सैनिकों ने उसकी सुरक्षा की, लेकिन एक बंदूक की गोली उसके बाएं कान के पास से निकल गई। बेगम बुरी तरह भयभीत हो गई। उसने भयावह दृश्य देखा और घायलों और मरणासन्नों की चीखें सुनीं। मुगलों ने युद्ध जीत लिया। जाट राजा और वाल्टर बाल-बाल बच गए।
युद्ध के अपने पहले अनुभव ने फरज़ाना को और अधिक समझदार बना दिया।
“लड़ाई एक भयानक और अमानवीय मामला है। अगर मैंने इसे करीब से न देखा होता, तो मैं युद्ध की वास्तविकता को न समझ पाता। आखिर हमें लड़ना ही क्यों पड़ता है?”
“बेगम, यह सच हो सकता है। लेकिन यह मत भूलिए कि जब से दुनिया बनी है, लड़ाई मानव अस्तित्व का एक हिस्सा रही है। जो लड़ने के लिए तैयार नहीं होते, उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ता है। क्या आपने नादिर शाह के बारे में नहीं सुना? वह ईरानी जिसने दिल्ली में हजारों लोगों को मार डाला, महिलाओं को अगवा कर लिया और उनके रिश्तेदारों को घोर निराशा में छोड़ दिया। वह दिल्ली की सारी दौलत लूटकर बादशाह को लगभग कंगाल बना दिया। जो युद्ध के लिए तैयार नहीं होते, उनका विनाश निश्चित है; इतिहास हमें यही सिखाता है।” गंभीर स्वर में कहा गया।
विपरीत परिस्थितियों में भी वाल्टर की सेना की वीरता और अनुशासन से मुगल वज़ीर बहुत प्रभावित हुआ। युद्ध समाप्त होने के बाद, उसने वाल्टर को अपनी सेना में शामिल होने के लिए उदार शर्तें और आकर्षक पुरस्कार की पेशकश की, जिसे वाल्टर ने स्वीकार कर लिया।

फरज़ाना की युद्ध में घोड़े पर सवार होकर, हाथ में तलवार उठाए जाने की रणनीति पूरे हिंदुस्तान में चर्चा का विषय बन गई। जाट, मराठा और मुगल, सभी उस खूबसूरत योद्धा की कहानियों से मोहित हो गए। यह कहानी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती गई और भी रंगीन होती चली गई। देखते ही देखते फरज़ाना एक नायिका और वाल्टर की सेना की रानी बन गई।

महारानी

मुगल बादशाह के सहयोगी और मराठा सरदार महादजी सिंधिया अपने मित्र और अपनी सेना के जनरल राणे खान से बात कर रहे थे।
"वह एक धूर्त वेश्या है; बिना एक बूंद खून बहाए और अपने शरीर पर एक खरोंच तक आए बिना, वह एक नायिका बन गई है।"
“अगर मैं, एक अनपढ़ पानी ढोने वाला, तुम्हारा सेनापति बन सकता हूँ, तो एक वेश्या योद्धा क्यों नहीं बन सकती?” राणे खान ने तर्क दिया।
“बिल्कुल! बहुत खूब कहा! मेरी बात याद रखना, वह जीवन में बहुत आगे जाएगी। मैं उसे अपने साथ रखना चाहूंगा।”
कहते हैं, उनकी सुंदरता उनके बुद्धिमान स्वभाव से और भी निखरती है। उनमें निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता है और राजनीतिक समस्याओं के प्रति उनका व्यावहारिक दृष्टिकोण है। अगर ऐसा है, तो उन पर भरोसा किया जा सकता है कि वे अपने पति की मदद करेंगी, जो हमेशा जीतने वाले पक्ष में शामिल होने की कोशिश करते हैं, ताकि वे सही व्यक्ति को पहचान सकें। आपकी इच्छा पूरी होने की पूरी संभावना है। लेकिन मैं आपसे आग्रह करूंगा कि आप उनके आकर्षण में न पड़ें।
महादजी मुस्कुराए।
खैर, आप कभी भी निश्चित नहीं हो सकते!
जाट राजा पर विजय के बाद आगरा किला फिर से मुगलों के नियंत्रण में आ गया। हालाँकि सोमब्रे की सेना इस अभियान में सफल नहीं हुई थी, फिर भी एक अनुशासित सेना के रूप में उनकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई। वाल्टर के नुज्जाफ खान से जुड़ने के बाद, सम्राट ने वाल्टर को लाल किले में स्थित अपने महल में मिलने का निमंत्रण दिया। वाल्टर मुगल सरदार के वेश में वहाँ गए और पारंपरिक मुगल शैली में सलाम और नजराना पेश किया। सम्राट प्रसन्न हुए। “हमने आपकी सैन्य कुशलता और आपके सैनिकों के शौर्य और अनुशासन के बारे में सुना है। हमें विश्वास है कि अब जब आप हमारे सहयोगी बन गए हैं, तो आपके संसाधन मुगल साम्राज्य की रक्षा के लिए उपलब्ध होंगे।”
महाराज! मैं सदा आपके आदेशों का पालन करने के लिए तत्पर हूं।

सम्राट से मुलाकात के तुरंत बाद, सोमब्रे ने सर्वशक्तिमान वज़ीर नुज्जाफ खान से जागीर मांगी ताकि वह अपनी सेना का भरण-पोषण उससे होने वाली आय से कर सके। उसने सम्राट से भी जागीर के लिए निवेदन किया। वाल्टर विभिन्न सैन्य अभियानों में व्यस्त था, इसलिए फरज़ाना को यह अनुरोध आगे बढ़ाना पड़ा। वाल्टर की अनुमति से, उसने वज़ीर की बेगम से मुलाकात की।
जैसे ही वज़ीर की बेगम की नज़र फरज़ाना पर पड़ी, वह विस्मय से बोली: “माशाअल्लाह! कितना सुंदर चेहरा है! अल्लाह की मेहरबानी आप पर रही है, लेकिन बताइए कि इतनी नाज़ुक शख्सियत लड़ाई कैसे कर सकती है? हमने सुना है कि आपने हमारी सेनाओं के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी।”
“यह मेरी गलती थी। मैं आपसे क्षमा मांगता हूँ।”
"अब जब आपका पति हमारा सहयोगी बन गया है, तो सब कुछ भुला दिया गया है।" फरज़ाना ने बेगम के साथ लगभग दो घंटे बिताए और हिंदुस्तान के मामलों और उस समय अपना दबदबा कायम कर रहे अंग्रेजों के बारे में बातें कीं। जब फरज़ाना जाने के लिए उठीं, तो बेगम ने कहा:
आपको जिस भी सहायता की आवश्यकता हो, आप हमारे घर में आ सकते हैं।
फरज़ाना वज़ीर की बेगम द्वारा मिले स्वागत से काफी खुश थी।
इस मुलाकात के कुछ ही समय बाद वाल्टर उत्तर में एक सैन्य अभियान से लौटे, जहाँ कुछ हमलावरों ने यमुना नदी के पूर्व में स्थित एक बड़े भूभाग पर कब्जा कर लिया था। वाल्टर विद्रोहियों को हराने और उस क्षेत्र को मुगल सम्राट को वापस दिलाने में सफल रहे। एक शाम वाल्टर किसी अत्यावश्यक कार्य के लिए वज़ीर की हवेली गए और फरज़ाना भी उनके साथ बेगम से मिलने गईं। फरज़ाना ने बेगम को सेना के सुचारू संचालन के लिए जागीर की तत्काल आवश्यकता के बारे में बताया। उन्होंने बेगम से अनुरोध किया कि वे वाल्टर द्वारा हाल ही में सम्राट को वापस दिलाए गए क्षेत्र में उनके लिए जागीर दिलाने की पैरवी करें। उन्होंने उपयुक्त अवसर पर महारानी से मिलने की इच्छा भी व्यक्त की।
विश्व भर के मुसलमानों के लिए ईद का त्योहार, एक महत्वपूर्ण अवसर, बस आने ही वाला था। बेगम को लगा कि अगर फरज़ाना उनके साथ महल में महारानी को ईद मुबारक कहने जाए तो कोई आपत्ति नहीं होगी; यह पारंपरिक अभिवादन था। फरज़ाना महारानी को उपहार देने के लिए मोतियों की दो सुंदर मालाएँ ले गई थीं। वह महारानी के लिए एक सोने का कंगन भी साथ लाई थीं। जब उन्हें दीवान-

खास मंडप के बगल में स्थित ज़नाना ले जाया जा रहा था, तो वज़ीर की बेगम ने महारानी को तीन बार अदब किया और नज़राना पेश किया। गुलबदन से मिली अपनी सारी शिक्षाओं का उपयोग करते हुए, फरज़ाना ने महारानी को तीन बार तस्लीम किया। फरज़ाना ने नज़राना पेश किया और उन्हें ईद मुबारक की शुभकामनाएं दीं। दोनों ने महारानी को अदब किया और भेंटें दीं। दोनों महिलाओं को महारानी के सामने रेशमी कालीन पर बैठने के लिए आमंत्रित किया गया। महारानी ने फरज़ाना से कहा।
“मैंने सुना है कि तुम आधुनिक युग की रजिया सुल्ताना बनती जा रही हो। हम बहुत ही दिलचस्प दौर में जी रहे हैं जब खूबसूरत लड़कियां योद्धा बनना चाहती हैं।”
"महोदया, मैं आपका दास हूँ, आप जो भी आज्ञा देंगी मैं वही करूँगा।" महारानी प्रसन्न थीं। पहली मुलाकात का गहरा प्रभाव पड़ा था।

Jagirdar

अंततः, वाल्टर और फरज़ाना के प्रयासों का फल मिला और सम्राट ने उन्हें मेरठ के निकट यमुना नदी के पूर्व में एक जागीर प्रदान की। उस स्थान का नाम सरधना रखा गया। नए स्थान पर जाने से पहले, फरज़ाना अपनी बेटी और गुलबदन से मिलना चाहती थीं। लेकिन अब वह एक प्रसिद्ध जागीरदार की बेगम थीं, इसलिए गुलबदन की हवेली जाकर उनसे मिलना उचित नहीं था; इसलिए उन्होंने गुलबदन को नूरो के साथ आने का संदेश भेजा।
अपनी बच्ची को देखते ही फरज़ाना दौड़कर उसके पास गई और उसे गले लगा लिया। उसके आंसू फूट पड़े। उसे अपनी बेटी को खुलकर स्वीकार न करने का गहरा अपराधबोध सता रहा था। वह मन ही मन दुविधा में थी कि गुलबदन की सलाह को नज़रअंदाज़ करे या अपने बच्चे के अस्तित्व को गुप्त रखे, या अपने पति को सब कुछ बता दे। लेकिन उसे यकीन था कि अगर वाल्टर को पता चल गया कि उसने शादी से पहले बच्चे को जन्म दिया है, तो उसका भविष्य खतरे में पड़ जाएगा। इसलिए उसने अपने दिल की आवाज़ को अनसुना कर अपने दिमाग की बात मानी।
फरज़ो को देखकर गुलबदन बेहद खुश हो गया।
“आप कल्पना भी नहीं कर सकतीं कि मैं कितनी खुश हूँ! आपके पति मुगल कुलीन वर्ग के एक महत्वपूर्ण सदस्य बन गए हैं। मुझे वह दिन याद आ रहा है जब बहुत समय पहले जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर आपकी मुलाकात हुई थी। आपकी माँ आपकी इस उपलब्धि पर बहुत प्रसन्न होतीं।”
“अब आप मेरी अम्मा और नूरो की दादी हैं। लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं अंदर से बहुत दुखी हूँ, और इसके कारण आप समझ सकती हैं।”
“मैं तुम्हारी दुविधा समझता हूँ, फरज़ो। लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हें अपना रहस्य कुछ और समय तक छिपाकर रखना चाहिए।”
जब गुलबदन और नूरो जाने ही वाले थे, तब फरज़ाना ने गुलबदन को काफी बड़ी रकम दी। गुलबदन ने विरोध किया, लेकिन फरज़ाना ने कहा:
“अम्मा, कृपया इसे रख लीजिए। इससे मेरे मन का बोझ हल्का होगा। अब से मैं आपको नियमित रूप से पैसे भेजूंगी। मेरी खातिर इसे स्वीकार कर लीजिए।” जल्द ही, वाल्टर को आगरा का राज्यपाल नियुक्त किया गया। उन्हें शहर के नागरिक प्रशासन और सूबे की रक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई। आगरा जाने से

पहले, उन्होंने अपनी जागीर की भूमि का दौरा किया। वे सरधना के आसपास घूमे और यह देखकर सुखद आश्चर्यचकित हुए कि वह क्षेत्र उपजाऊ था और उसमें पानी की प्रचुरता थी। उगती हुई फसलें स्वस्थ दिख रही थीं।
उन्होंने सरधना में नया घर बनने तक एक पुराने मराठा किले में रहने का फैसला किया।

आगरा

आगरा में, वाल्टर और उनकी बेगम उसी पुराने घर में रुके जहाँ वे जाट राजा के साथ रहते समय रहते थे। ईसाई समुदाय वाल्टर सोमब्रे और फरज़ाना के आगरा लौटने से बहुत खुश था। उन्होंने उनके सम्मान में एक स्वागत समारोह आयोजित किया, और पादरी ने सोमब्रे की उस मदद को याद किया, जब धन की कमी के कारण चर्च का निर्माण रुका हुआ था। समुदाय के नेताओं ने फरज़ाना से अनुरोध किया कि यदि सोमब्रे के पास समय न हो तो भी वे उनके घर आएं।
वह सबसे पहले एक तथाकथित अर्ध-ईसाई के घर गई; वह एक श्वेत सैनिक और एक जाट लड़की का बेटा था। उसने एक राजपूत लड़की से शादी की थी और उसके दो बच्चे थे। जब फरज़ाना उनसे मिलने गई, तो छोटा बच्चा तेज़ बुखार से पीड़ित था। फरज़ाना ने शिष्टाचार की परवाह किए बिना बच्ची को उसकी चारपाई पर बिठाया और उसे अपनी बाहों में उठा लिया। एक पल के लिए उसे लगा कि यह उसकी नूरो है। वह अपनी बेटी को कभी भी पर्याप्त प्यार और देखभाल नहीं दे पाई थी। बीमार पड़ने पर उसकी देखभाल कैसे की जाती थी? अपने विचारों से बाहर आने के बाद, उसने माता-पिता को आश्वासन दिया कि शहर का सबसे अच्छा डॉक्टर उनके बच्चे का इलाज करेगा। माता-पिता यह देखकर आश्चर्यचकित और राहत महसूस कर रहे थे कि राज्यपाल की पत्नी उनके बच्चे में व्यक्तिगत रुचि ले रही है।
फरज़ाना ने चर्च के नेताओं से कहा कि वह उनकी देखभाल करेंगी और किसी के बीमार पड़ने पर उन्हें सूचित किया जाए। आगरा का ईसाई समुदाय उनका आभारी था और वाल्टर और फरज़ाना उनके सभी समारोहों और उत्सवों का अभिन्न अंग बन गए। आगरा हिंदुस्तान का वह स्थान था जहाँ सोमब्रे सबसे लंबे समय तक रहे थे। आगरा के ईसाईयों ने उन्हें बहुत स्नेह और सम्मान दिया था, इसलिए वे उनसे बहुत जुड़ाव महसूस करते थे। अब सोमब्रे का उस स्थान से भावनात्मक लगाव हो गया था। उन्हें पता था कि उनका जीवन निकट आ रहा है। उन्होंने आगरा में एक घर बनाने का फैसला किया जहाँ उनके जाने के बाद फरज़ाना रह सकें। उनके मरने के बाद, सम्राट शायद उन्हें जागीर न सौंपें।
उन्होंने आगरा से कुछ ही दूरी पर कुछ जमीन खरीदी और उसे बगीचे के रूप में विकसित करना शुरू किया। वाल्टर ने घर के डिजाइन और निर्माण की देखरेख में गहरी रुचि दिखाई।

फिर एक दिन वाल्टर बीमार पड़ गया। उसकी हालत बिगड़ने पर वाल्टर ने डॉक्टर से थोड़ी देर के लिए उसे अकेला छोड़ने का अनुरोध किया; वह अपनी बेगम से अकेले में बात करना चाहता था। जब दोनों अकेले थे, वाल्टर ने कहा:
“बेगम, मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ। आपको शायद इसकी जानकारी होगी, कम से कम आपने कुछ अफवाहें तो सुनी ही होंगी।”
बेगम और करीब आ गईं।
“जो मैं आपको बता रहा हूँ, वह बहुत लंबे समय से मेरे अंतरात्मा पर बोझ बना हुआ है। लगभग बत्तीस साल पहले, जब मैं यूरोप से इस देश में भाग्य आजमाने आया, तो मुझे बंगाल के नवाब मीर कासिम के अधीन सेवा करने का अवसर मिला। अंग्रेजों के हाथों उन्हें सैन्य हार का सामना करना पड़ रहा था। उन्होंने मुझे सिपाहियों की एक बटालियन की कमान सौंपी। उन्होंने मुझसे अपनी सेना में सख्त अनुशासन बनाए रखने को कहा और वादा किया कि वे और बटालियनें मेरे अधीन कर देंगे। मैं इस अवसर को हाथ से जाने नहीं देना चाहता था। इससे पहले मैं छोटे-मोटे काम करता था; यह मेरे लिए बड़ा बनने का मौका था। मैं नवाब को हर संभव तरीके से खुश करना चाहता था।” वाल्टर का गला सूख गया। उन्होंने पानी का एक घूंट लिया।
मुझे यकीन है कि पूरी कहानी सुनने के बाद आप मेरे बारे में बहुत बुरा सोचेंगे, लेकिन मुझे आपको यह बताना ही होगा। मेरे न रहने पर यही आपके हित में होगा।
“ऐसे विचार अपने मन में न आने दें। मुझे पूरा यकीन है कि आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे।”
“मीर कासिम का खजाना और ज़रूरी सामान मुंगीर में था। अंग्रेजों ने उसका खजाना और सामान वहाँ से छीन लिया। नवाब इस दुर्भाग्य से बहुत क्रोधित हुआ। इससे पहले, उसने कुछ अंग्रेज नागरिकों और सैनिकों को बंदी बना लिया था। उसने उन्हें पटना में रखा हुआ था; उसने मुझे उन सभी को मार डालने का आदेश दिया। मैं एक अजीब दुविधा में था – अगर मैंने इनकार किया तो मैं अपनी कमान खो सकता था, शायद अपनी जान भी। नवाब पागलों की तरह बदला लेने के लिए चिल्ला रहा था। मैंने उसके आदेशों का पालन किया। मैं तो बस अपने मालिक का आदेश मान रहा था, लेकिन तब से अंग्रेज मेरे पीछे पड़े हैं।”
हांफते हुए उसने बोलना जारी रखा।

“वे पूरे हिंदुस्तान में मेरा पीछा कर रहे हैं। मैं ठेकों के लिए जहाँ भी गया, चाहे अवध हो, जयपुर हो या फिर बादशाह के पास, उन्होंने सबको डराया- धमकाया। सिर्फ नुज्जुफ खान ने उनकी धमकियों को नजरअंदाज किया। अब मुझे डर है कि मेरे जाने के बाद वे तुमसे बदला लेने की कोशिश करेंगे। अपना ख्याल रखना।”
वॉल्टर की आवाज कमजोर पड़ गई।
“बेगम, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मैं आपके लिए अपार संपत्ति छोड़ रहा हूँ। मीर कासिम ने मुझे कर देने से इनकार कर दिया था, तब मैंने लगभग सारी संपत्ति लूट ली थी। अवध के नवाब वज़ीर के साथ भी मैंने ऐसा ही किया था, जब उन्होंने मेरा बकाया नहीं चुकाया। मैं बहुत सादगी से रहता था, इसलिए लगभग सारी संपत्ति आपके अधिकार में है। इस बात को गुप्त रखना और इस संपत्ति की सावधानीपूर्वक रक्षा करना।”
वाल्टर की मृत्यु 1778 ई. में हो गई और फरज़ाना अपने जीवन की लड़ाइयों का सामना करने के लिए अकेली रह गई।

कोर

फरज़ाना के मन में सबसे पहली प्राथमिकता समरू पर नियंत्रण हासिल करना थी। कोर। उसने अधिकारियों की सहानुभूति का फायदा उठाकर इस कार्य को अंजाम देना शुरू किया।
जो लोग शोक व्यक्त करने आए थे, उनमें से एक यह भी था कि वह अधिकारियों और सैनिकों के बीच काफी लोकप्रिय थीं। लेकिन सोम्ब्रे के पहले बेगम के पुत्र ज़फ़रयाब ने भी सेना पर अपना दावा ठोक दिया। सेना में उन्हें मंदबुद्धि माना जाता था, फिर भी उन्होंने समर्थकों को जुटाने में कामयाबी हासिल कर ली।
कुछ वरिष्ठ यूरोपीय अधिकारियों ने मिलकर नेतृत्व के मुद्दे पर चर्चा की। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ज़फ़रयाब कोर का नेतृत्व करने के योग्य नहीं थे। उनकी आर्थिक स्थिति के बारे में भी उन्हें संदेह था। इसके अलावा, सभी को पता चल चुका था कि सोमब्रे या समरू, जैसा कि वे लोकप्रिय रूप से जाने जाते थे, ने अपनी लगभग सारी संपत्ति बेगम को वसीयत में दे दी थी। इसलिए व्यापक रूप से यह माना गया कि केवल बेगम ही कोर को नियमित आय सुनिश्चित कर सकती थीं।
तीन वरिष्ठ यूरोपीय अधिकारियों ने सम्राट के वज़ीर नुज्जाफ खान से साक्षात्कार करने की इच्छा व्यक्त की और अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया। “हम इस मामले में आपका समर्थन मांगने आए हैं। यह कोर मूल रूप से आपके सैन्य अभियानों को सहायता प्रदान करने के लिए है। इसलिए हम चाहते हैं कि वाल्टर के जाने के बाद इसकी सैन्य क्षमताओं में कोई कमी न आए। लेकिन बेगम, एक महिला होने के नाते, इसका नेतृत्व करने में कुछ कठिनाई का सामना कर सकती हैं।”
नुज्जाफ खान आराम से बैठ गए और सोचने लगे। “सच कहूँ तो, मुझे लगता है कि बेगम सेना का नेतृत्व करने में पूरी तरह सक्षम हैं, बशर्ते आप लोग उन्हें पूरा समर्थन दें और किसी भी तरह की साजिश को नाकाम कर दें। वैसे भी, मुझे अपना फैसला सुनाने से पहले सम्राट से बात करनी होगी। इस मामले में उत्तराधिकार में कई प्रशासनिक और राजनीतिक मुद्दे भी शामिल हैं, आपने तो सिर्फ सैन्य पक्ष की बात की है।”

“समरू की सेना का कार्यभार संभालने पर मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं। मैं आपकी सफलता की कामना करता हूं।”
"मैं तभी सफल हो पाऊंगा जब मुझे सरधना में काम जारी रखने की अनुमति दी जाएगी।"
मुझे लगा था कि यह स्वाभाविक परिणाम होगा। खैर, मैं संबंधित अधिकारियों से आपके लिए सिफारिश कर दूंगा।
वज़ीर की बेगम ने रानी से मदद मांगी, क्योंकि रानी का मानना था कि बेगम समरू सरधना को अपने पास रखने की हकदार हैं।
अंततः बेगम समरू को शाह आलम की सनद प्राप्त हुई, जिसने उन्हें स्पष्ट कानूनी अधिकार के साथ आजीवन सरधना की जागीर का स्वामित्व प्रदान किया। बेगम रानी और सम्राट दोनों के प्रति व्यक्तिगत रूप से अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उत्सुक थीं, इसलिए उन्होंने रानी से मिलने का समय मांगा।
“सरधना की जागीर मुझे प्रदान करने के लिए मैं आपका अत्यंत आभारी हूं।” “धन्यवाद तो सम्राट को देना चाहिए,” रानी ने उत्तर दिया।
"यदि आप मेरी ओर से उनके महामहिम तक यह अनुरोध पहुंचा दें कि मुझे उनसे मिलने की अनुमति दी जाए, तो मैं आपका सदा आभारी रहूंगा।"
“राजा तस्बीह खाना में हैं। मैं जाकर पता लगाता हूँ कि क्या वे अभी आपसे मिल सकते हैं।”
रानी के साथ समरू बेगम नकाब ओढ़े तस्बीह खाना के सामने गईं और सम्राट को तीन बार प्रणाम किया। फिर वे उस मुसनूद के पास गईं जिस पर महाराज बैठे थे और उन्हें सफेद दुपट्टे में लिपटा एक नजराना भेंट किया। बादशाह ने उपहार स्वीकार किया और उसे वहाँ आए राजकुमार अकबर शाह को दे दिया।
समरू बेगम ने कहा:
"महामहिम, मुझे यह जागीर प्रदान करने के लिए मैं आपका अत्यंत आभारी हूं।" आपके पति वाल्टर रेनहार्ड्ट सोम्ब्रे के निधन पर हमें गहरा दुख है और हम आपके प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं। हमें उम्मीद है कि आप इस बात से अवगत होंगी कि आपके पति की इस दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु के बाद आपने अपने कंधों पर भारी जिम्मेदारी ले ली है।
"जी हां, महाराज।"

"हमें विश्वास है कि आप इस बात से अवगत हैं कि आप हमारे पूरे राज्य में एकमात्र महिला जागीरदार हैं।"
"जी महाराज।"
"आप यह बात भी निःसंदेह जानती हैं कि आप एक विशाल सैन्य बल की एकमात्र महिला कमांडर हैं।"
"जी हां, महाराज।"
“आपसे उत्तर में सिखों पर नजर रखने की उम्मीद की जाती है। आपको रोहिल्लों से भी निपटना होगा, जो काफी परेशानी पैदा कर सकते हैं।”
मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ कि हम आपकी पूर्ण संतुष्टि के लिए अपनी सभी जिम्मेदारियों का निर्वहन करेंगे।
इसके बाद सम्राट साक्षात्कार समाप्त होने का संकेत देते हुए उठ खड़े हुए। शाह आलम से समरू की यह पहली प्रत्यक्ष मुलाकात थी। वह उनके शाही व्यक्तित्व से अभिभूत हो गईं। वे पचपन वर्ष के थे और अत्यंत गरिमामय प्रतीत होते थे। वे लंबे और प्रभावशाली कद-काठी के थे। बेगम समरू को सम्राट तुरंत पसंद आ गए।
जागीर के खर्चों को पूरा करने के लिए एक सुनिश्चित और नियमित आय सुनिश्चित करने हेतु बेगम समरू ने राजस्व प्रणाली का गहन अध्ययन किया, जिससे उन्हें अपनी भूमि से लाभ प्राप्त होने लगा। वे भूमि से अपनी आय बढ़ाना चाहती थीं और जल्द ही उन्हें यह अहसास हो गया कि पटवारी नामक स्थानीय राजस्व अधिकारी ही इस योजना की सफलता की कुंजी है। उन्होंने फसल पद्धति और खेतों की सिंचाई प्रणाली का अध्ययन किया। उन्होंने गांवों का दौरा किया और किसानों से बातचीत करके उनकी समस्याओं पर चर्चा की। समय के साथ, जागीर से अपनी आय बढ़ाने के प्रयास सफल होने लगे। बेगम समरू ने अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए नए रास्ते तलाशने शुरू कर दिए।

बपतिस्मा

बेगम समय-समय पर आगरा आकर अपनी जागीर देखती थीं और अपने दोस्तों से मिलती थीं।
ईसाई मित्र। वह नियमित रूप से चर्च जाती थी और कभी-कभी
प्रार्थना सभा में शामिल हुईं। ईसाई समुदाय के नेताओं ने देखा कि बेगम अपने दृष्टिकोण में लगभग एक ईसाई थीं। फादर ग्रेगरी ने उन्हें सुझाव दिया।
“मैं देख सकता हूँ कि आप हमारे समुदाय में वास्तव में रुचि रखते हैं। मुझे लगता है कि यदि आप औपचारिक रूप से हमारे धर्म को अपना लेते हैं, तो आप हमारे साथ अधिक सहज महसूस करेंगे।”
सच कहूँ तो, मैं धार्मिक व्यक्ति नहीं हूँ। मैं मुस्लिम परिवार में पला- बढ़ा, लेकिन कभी कट्टर मुस्लिम नहीं रहा। मुझे इस बारे में सोचने के लिए थोड़ा समय चाहिए।
बेगम समरू ने पुजारी की बातों पर विचार किया। उन्हें वाल्टर के साथ हुई बातचीत याद आई। वाल्टर ने एक बार कहा था:
“इस भूमि में धन-दौलत की तलाश में मुझे चौदह देशी नवाबों और राजाओं से मिलना पड़ा और मैंने पाया कि उनमें से कोई भी यूरोपीय लोगों की ईसाई नेतृत्व वाली सेनाओं का सामना करने में सक्षम नहीं है। आप मुग़ल राजधानी दिल्ली की स्थिति से भलीभांति परिचित हैं। आप इस बात से सहमत होंगे कि मुग़ल साम्राज्य अपने अंतिम क्षणों में है। मुझे लगता है कि निकट भविष्य में ईसाई इस भूमि पर शासन करेंगे।”
उनका जीवन उनके सैन्य बल के इर्द-गिर्द घूमता था। उन्हें लगता था कि उनके यूरोपीय अधिकारी, जो सभी ईसाई थे, उनके द्वारा औपचारिक रूप से ईसाई धर्म अपनाने से प्रसन्न होंगे। इसके अलावा, उनका एक और मकसद भी था। बेगम समरू को लगता था कि अगर वह ईसाई बन जाएंगी तो ईस्ट इंडिया कंपनी, जिसका सितारा बुलंदियों पर था, के साथ उनका प्रभाव बढ़ जाएगा। 7 मई 1781 को उन्होंने रोमन कैथोलिक के रूप में बपतिस्मा लिया।
धर्म परिवर्तन के लगभग एक महीने बाद, दिल्ली में एक भयंकर धूल भरी आंधी आई। बाद में एक भीषण भूकंप आया। दिल्ली से कुछ ही दूरी पर स्थित झज्जर के पास

एक उल्कापिंड गिरा था। उसे पता चला कि गुलबदन की हवेली में दरारें आ गई हैं। आगरा से लौटने पर, वह गुलबदन और नूरो से मिलने और इमारत को हुए नुकसान का जायजा लेने गई। उसे यह जानकर राहत मिली कि नुकसान ज्यादा गंभीर नहीं था।

नुज्जाफ

इसके कुछ ही समय बाद, बेगम समरू के संरक्षक मिर्जा नुज्जाफ खान को पदोन्नत कर दिया गया।
मुगल साम्राज्य के रीजेंट का पद। उन्हें सेनापति बनाया गया था।
बेगम समरू को शाह आलम द्वारा सभी बलों का अधिकार दिया गया था। वह नुज्जाफ की प्रमुख बेगम से मिलने गईं, जिनसे उनकी बहुत अच्छी दोस्ती थी।
“अल्लाह ने हमारी प्रार्थना सुन ली! अब साम्राज्य अपने शत्रुओं से सुरक्षित है।”
उन्होंने नुज्जाफ की बेगम को हीरे जड़ा एक कीमती कंगन उपहार में दिया। “आपकी शुभकामनाओं और खूबसूरत उपहार के लिए धन्यवाद। मुझे पूरा विश्वास है कि रीजेंट हमेशा आपके हितों का ध्यान रखेंगे।”
नुज्जाफ के प्रशासनिक कौशल और सैन्य अभियानों में उनकी सूझबूझ ने साम्राज्य में व्यवस्था और सद्भाव स्थापित किया। उन्होंने सरकार की अर्थव्यवस्था में भी सुधार किया। जब शाह आलम ने अपने दूसरे और प्रिय पुत्र राजकुमार अकबर शाह के विवाह का आयोजन करने का निर्णय लिया, तो नुज्जाफ ने समारोह को अपने घर पर आयोजित करने की पेशकश की। विवाह समारोह भव्य था। बेगम समरू ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए दुल्हन को हीरे जड़े कंगन और राजकुमार अकबर को शुद्धतम मोतियों की माला भेंट की।
साम्राज्य के किसी भी प्रभावशाली व्यक्ति के लिए मुगल दरबार और लाल किले में होने वाली गतिविधियों की पूरी जानकारी रखना आवश्यक था। बेगम समरू के पास मुखबिरों की एक टीम थी जो उन्हें दिल्ली में होने वाले नवीनतम घटनाक्रमों से अवगत कराती रहती थी।
साम्राज्य का वैभव क्षणभंगुर रहा। नुज्जाफ, अवध सेना के एक सेनापति और हिजड़े लताफत अली खान के बुरे प्रभाव में आ गया। लताफत अली खान ने मोहक सुंदरता वाली एक चरित्रहीन स्त्री महताब से विवाह किया था। नुज्जाफ के करीबी होने के कारण लताफत को मुगल सेना में शामिल किया गया था। उसने अपनी पत्नी का परिचय रीजेंट से कराया, जिसने शराब और स्त्रियों का लालच देकर नुज्जाफ को अपने जाल में फंसा लिया। एक संयमी सिपाही, जिसने कभी भी शराब का सेवन नहीं किया था और न ही किसी कुटिल स्त्री की ओर देखा था, संदिग्ध

चरित्र वाली स्त्रियों की संगति में निजी शराब पार्टियों में मौज-मस्ती कर रहा था। ऐसी ही एक पार्टी में नुज्जाफ ने महताब के सामने अपनी एक इच्छा प्रकट की।
“मुझे बेगम समरू बेहद खूबसूरत लगती हैं। उनके साथ एक रात बिताना मेरी दिली तमन्ना है। क्या आप उन्हें इसके लिए मना सकती हैं?”
“क्यों नहीं? आखिर वो एक कोठावाली थी।” महताब को पूरा भरोसा था।
महताब ने मुगल सेना के एक जनरल की पत्नी बेगम समरू से मुलाकात की। कुछ औपचारिक बातचीत के बाद उन्होंने कहा:
"आप जानते हैं कि रीजेंट आपके बहुत बड़े प्रशंसक हैं।"
“उन्होंने मुझ पर बहुत कृपा की है। रीजेंट बनने के बाद उन्होंने एक अतिरिक्त बटालियन मेरे अधीन कर दी है। यह मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान है। मैं उनका सदा आभारी रहूंगा।”
“अगर आप सामाजिक तौर पर उनसे मेलजोल रखेंगी तो वे आपके प्रति और भी मददगार और दयालु साबित होंगे। आप अविवाहित हैं, इसलिए पार्टी में शामिल होने का उनका निमंत्रण स्वीकार करने में आपको कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।” "क्या उनकी मुख्य बेगम ऐसी पार्टी में शामिल होंगी?"
"महोदया, कृपया समझने की कोशिश कीजिए। अगर उनकी बेगम आस-पास हों तो रीजेंट अन्य महिलाओं के साथ कैसे घुलमिल सकते हैं?"
बेगम समरू महाताब की चाल समझ गईं। वह कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहती थीं, कहीं ऐसा न हो कि रीजेंट के सामने उनकी बुराई हो जाए। उन्होंने मजबूरी का हवाला देते हुए ऐसा करने से इनकार कर दिया।
महताब की बातों से वह बहुत दुखी थी। उसे पता था कि उसके अतीत ने महताब को उसे आसान शिकार समझने के लिए प्रेरित किया होगा। बिस्तर पर लेटे-लेटे वह निराशा में रोने लगी; उसके विचार अपनी बेटी नूरो और गुलबदन की ओर मुड़ गए। उसने गुलबदन को अपने साथ रहने के लिए बुलाने का फैसला किया; ताकि वह अपनी बेटी से दूर रहने के दिनों की भरपाई कर सके।
नुज्जाफ खान को तपेदिक की बीमारी हो गई। भोग-विलास भरी जिंदगी के साथ-साथ, लगभग चार वर्षों के शासनकाल के बाद अप्रैल 1782 में उनका निधन हो गया।

Sardhana

जब कुलबादन ने पीछे मुड़कर नूर बाई की ओर देखा तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।
हवेली को आखिरी बार देख लिया। नूरो को समझ नहीं आ रहा था कि उसकी अम्मा इतनी उदास क्यों थीं।
इस खाली, जर्जर हवेली को छोड़कर जाने से मेरा दिल टूट गया है।
“तुम इतने परेशान क्यों हो? मुझे लगा था कि जब खाला ने हमें अपने साथ रहने का निमंत्रण दिया था, तब तुम बहुत खुश हुए थे।”
“नूरो, मेरी प्यारी, मैं पिछले चालीस वर्षों से इस हवेली में रह रही हूँ। मेरा जीवन बहुत व्यस्त, रंगीन लेकिन फिर भी सुखमय रहा है। मुझे वह पहला पल याद है जब मैंने इस जगह पर कदम रखा था। तब मैं लगभग छह साल की थी। मैंने नूरबाई को देखा और सोचा कि वह कोई परी रानी हैं। वह जीवन भर मेरे प्रति बहुत दयालु रहीं। मुझे उनसे बस एक ही शिकायत है कि उन्होंने मुझे शादी करने और अपनी पसंद का जीवन जीने की अनुमति नहीं दी। खैर, जीवन में सब कुछ नहीं मिल सकता।”
लेकिन नूरो बहुत उत्साहित थी। सरधना के लिए रवाना होने से एक दिन पहले, एक बूढ़ी औरत, जो पिछले कई सालों से उनके पड़ोस में रह रही थी, नूरो से मिलने आई थी।
“मुझे बहुत खुशी है कि आखिरकार फरज़ाना ने तुम्हें अपना मान लिया है। वह तुम्हारी अम्मा है। जब उसने उस फिरंगी से शादी की थी, तब वह तुम्हें चौधरी के पास छोड़कर गई थी,” उसने कहा था।
नूरो अक्सर सोचती थी कि बेगम उसे देखते ही इतनी भावुक क्यों हो जाती हैं।
अब उसे कारण पता चल गया था। लेकिन उसने इस बारे में किसी से न पूछने का फैसला किया।
बेगम समरू ने यात्रा के लिए छत और पर्दों वाली एक विशेष बैलगाड़ी भेजी थी।
दिल्ली में तैनात सरधना बटालियन की एक टुकड़ी को उनकी सुरक्षा के लिए तैनात किया गया था। वे सुबह बहुत जल्दी निकल पड़े। वे दिल्ली के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानते थे, बस शहर के चारों ओर बनी विशाल दीवार के भीतर बसे कस्बे को ही जानते थे। अब, उन्होंने नौकाओं के पुल से यमुना नदी पार की।

उत्तर की ओर बढ़ते हुए उन्हें चारों ओर गेहूँ के खेत दिखाई देने लगे। उन्होंने जाटाना नामक गाँव में एक रात आराम करने का फैसला किया, जहाँ बेगम कोर के एक अधिकारी ने उनका स्वागत किया।
अगली सुबह वे सरधना के लिए रवाना हुए। उन्होंने देखा कि खेत पहले से ज़्यादा हरे-भरे और स्वस्थ थे। रास्ते में वे पानी पीने के लिए एक कुएँ पर रुके। नूरो ने कुएँ पर एक दिलचस्प यंत्र देखा। कुएँ के दोनों ओर दो लकड़ी के खंभों पर एक मोटा लकड़ी का खंभा क्षैतिज रूप से टिका हुआ था। खंभे पर एक पुली लगी थी। घूमती हुई पुली के चारों ओर एक रस्सी लिपटी हुई थी, जिसे ज़मीन में खोदे गए रैंप पर चल रहा एक काला बैल खींच रहा था। जब वे कुएँ पर इंतज़ार कर रहे थे, तभी एक बड़ा चमड़े का थैला पानी से भरा हुआ कुएँ से निकला, जिसे एक सहायक ने पत्थर और गारे से बनी एक नाली में झुका दिया। नाली से पानी खेतों की सिंचाई के लिए एक छोटी सी नहर में बह रहा था। जैसे ही चमड़े का थैला खाली हुआ, उसे कुएँ में नीचे उतार दिया गया और बैल गोलाकार रैंप पर चढ़ने लगा। नूरो और गुलबदन दोनों को यह विचार बहुत रोमांचक लगा। एक व्यक्ति धोती पहने और धागा ओढ़े पास ही स्नान कर रहा था। नूरो उसे ध्यान से देख रही थी और गुलबदन की पैनी नजर ने यह बात भांप ली। उसे एहसास हो गया कि लड़की अब बालिग हो चुकी है।
“वह एक सुंदर ब्राह्मण युवक है,” गुलबदन ने टिप्पणी की। नूरो शरमा गई।
बेगम बेसब्री से उनका इंतजार कर रही थीं। उन्होंने गर्मजोशी से उनका स्वागत किया, गुलबदन को गले लगाया और नूरो को चूमा।
“आशा है आपकी यात्रा सुखद रही होगी।” उसने कहा।
“हाँ, फरज़ो, वाकई बहुत दिलचस्प सफ़र था। रास्ते में हमें यह कुआँ दिखा, और नूरो को कुएँ से पानी निकालने की पूरी प्रक्रिया बहुत रोमांचक लगी। वह चमड़े के थैले को ऊपर आते-जाते देखने की ज़िद कर रही थी। हमने कुएँ के पास एक घंटे से ज़्यादा समय बिताया।”
“हमारे पास ऐसे बहुत से कुएँ हैं। मेरी जागीर लगभग दो नदियों, यमुना और हिंडन, के बीच में स्थित है। इसलिए हमारे कुओं में पानी की कभी कमी नहीं होती। और हम फसलों के लिए जब भी पानी की आवश्यकता होती है, अपने खेतों की सिंचाई कर सकते हैं। हमारे किसान समृद्ध हो रहे हैं और हमारी आमदनी भी बढ़ रही है। अब दूसरे सरदार मुझसे ईर्ष्या करने लगे हैं।”
गुलबदन को फ़रज़ाना पर गर्व महसूस हुआ।

गुलबदन और नूरो बेगम के जीवन को देखकर चकित रह गए। उनके पास कई नौकरानियाँ, सेवक और सुरक्षा गार्ड थे। आलीशान कालीन और यूरोपीय फर्नीचर ने उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया।
“मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि तुम इतनी अच्छी तरह से रहोगे, तुम्हारी दिवंगत मां बहुत खुश होतीं।” गुलबदन ने कहा।
नूरो ने बेगम के जीवन को खुशियों से भर दिया और उनके दिल को शांति से भर दिया। अब उन्हें कभी अकेलापन महसूस नहीं होता था।
गुलबदन नूरो को उर्दू और फ़ारसी पढ़ाना जारी रखती थी, हालाँकि नूरो को पढ़ाई में कोई खास रुचि नहीं थी। गुलबदन ने उसे शतरंज खेलना सिखाया, जो उस दौर के संभ्रांत लोगों का एक लोकप्रिय शौक था। नूरो को लोगों से मिलना और अपनी खाला के घर के आसपास घूमना-फिरना ज़्यादा पसंद था। सरधना की सेना के कई विदेशी और देशी अधिकारी बेगम से मिलने और विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने आते थे। एक फ्रांसीसी अधिकारी, दर्रीबेरे, अक्सर उनसे मिलने आता था। एक दिन, उसने उस युवती को उसके पूरे यौवन में देखा और वह बहुत आश्चर्यचकित हुआ।
“मैंने आपको पहले कभी यहां नहीं देखा, आप कौन हैं?”
मेरा नाम नूरो है।
वह इससे ज्यादा कुछ भी बताना नहीं चाहती थी।
“अच्छा! नूरो, क्या हम दोस्त बन सकते हैं? हम कंचे और शतरंज जैसे खेल खेल सकते हैं।”
“ज़रूर। मैं आपकी उर्दू और फ़ारसी सुधारने में मदद कर सकता हूँ।” “यह बहुत अच्छा होगा,” दर्रीबेरे ने कहा। “क्या आपने कभी घुड़सवारी की है? यहाँ बहुत अच्छे टट्टू हैं और आसपास का इलाका घने जंगलों से बहुत सुंदर है।” मुझे घोड़ों से डर लगता है।
डारिबेरे हँस पड़ा।
मैं तुम्हें टट्टू को संभालना सिखाऊंगा। फिर तुम्हें घोड़ों से प्यार हो जाएगा।
दर्रीबेरे समरू के घर अक्सर आने लगा। उसने नूरो को अपने साथ घुड़सवारी करने के लिए राजी किया। वे साथ मिलकर ग्रामीण इलाकों की सैर करने लगे। वे यमुना नदी के किनारे अपने टट्टुओं पर सवार होकर नावों को बहते हुए देखने गए। उन्होंने यमुना और हिंडन नदियों के पार यात्रियों को जाते हुए देखा।

एक बार वे नीचे उतरे और अपने टट्टुओं की लगाम पकड़े हुए हिंडन नदी के किनारे चलने लगे। वे एक घने जंगल की ओर बढ़े और टट्टुओं को एक पेड़ से बांध दिया। दर्रीबेरे ने नूरो को अपनी ओर खींचा और उसे जोश से चूमा। नूरो की खुशी देखकर, उसने उसे ज़मीन पर लिटाया और उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। यौन संबंध के पहले अनुभव से नूरो पूरी तरह मुग्ध हो गई।
दर्रीबेरे ने कहा,
“चलिए शादी कर लेते हैं। मुझे जल्द ही एक सैन्य अभियान पर जाना है। मेरे लौटने पर हम बेगम साहिबा की अनुमति से औपचारिक रूप से शादी कर लेंगे।” गुलबदन ने नूरो और उस फ्रांसीसी व्यक्ति के बीच आपसी आकर्षण को देखा। उसने मन ही मन मुस्कुराते हुए पाया कि नूरो को भी यूरोपियों के प्रति वही आकर्षण था जो उसकी माँ को था।
जल्द ही दर्रीबेरे को ड्यूटी पर जाना पड़ा। नूरो को उनकी बहुत याद आई और वह दिन-रात उनके लिए तड़पती रही। गुलबदन ने उसकी पीड़ा को समझा और उसका साथ देने की कोशिश की।

ज़ेबुन-निस्सा

मुगल साम्राज्य की राजधानी में व्यावहारिक रूप से कोई शासन व्यवस्था नहीं थी।
रीजेंट नुज्जाफ खान गंभीर बीमारियों के कारण अक्षम हो गए थे और कोई अन्य चिकित्सक उनकी सहायता करने में असमर्थ थे।
निर्णय लिए गए। जल्द ही नुज्जुफ की तपेदिक से मृत्यु हो गई (1782 ईस्वी)। उनके जाने के साथ ही एक युग का अंत हो गया।
नुज्जाफ की मृत्यु के बाद, दरबार में एक बार फिर अफरा-तफरी मच गई, क्योंकि कई लोग रीजेंट नियुक्त होने के लिए होड़ कर रहे थे। शाह आलम ने कुछ असफल नियुक्तियों के बाद, महाधजी सिंधिया को रीजेंट और साथ ही साम्राज्य की सेना के सर्वोच्च कमांडर-इन-चीफ के पद के लिए चुना। बेगम समरू को लगा कि नया रीजेंट काफी समय तक इस पद पर बना रहेगा। उन्होंने महाधजी के करीबी माने जाने वाले जनरल राणे खान के माध्यम से उनसे मुलाकात का अनुरोध किया। जब वह नए रीजेंट से मिलीं तो राणे खान भी उनके साथ थे।
शासक ने कहा, “अब से आप यमुना नदी के पश्चिम में स्थित साम्राज्य की उत्तरी सीमाओं की रक्षा के लिए जिम्मेदार होंगे, जहाँ हमें शत्रुओं से कुछ परेशानी हो सकती है। कृपया सुनिश्चित करें कि आपकी बटालियनें युद्ध के लिए पूरी तरह से तैयार हों।”
हम आपके निर्देशों का अवश्य पालन करेंगे।
बेगम समरू के चले जाने के बाद, जनरल राणे खान ने महादजी से कहा:
“उसे अपने पक्ष में रखने का आपका सपना पूरा हो गया है। वह वाकई बहुत खूबसूरत है। मैंने कभी किसी ऐसी खूबसूरत महिला के बारे में नहीं सुना जो लड़ाकू सैनिकों के दल का नेतृत्व कर रही हो।”
कुछ ही समय बाद बेगम समरू को साम्राज्य की रक्षा की जिम्मेदारी संभालने के लिए कहा गया।
यह देखकर कि महाधजी राजधानी के दक्षिण में सम्राट की संपत्ति की रक्षा में लगे हुए हैं, रुहेला सरदार और सम्राट के रिश्तेदार गुलाम कादिर की नज़र दिल्ली और लाल किले पर पड़ गई। उसने अपनी सेना को राजधानी की ओर बढ़ाना शुरू कर दिया। शाह आलम घबरा गया और उसने बेगम समरू और महाधजी को संदेश भेजा। महाधजी अभी भी अभियान में लगे हुए थे और तुरंत शाह आलम की रक्षा के

लिए नहीं आ सके। लेकिन बेगम तुरंत अपनी सभी बटालियनों के साथ दिल्ली पहुंचीं और यमुना नदी के पश्चिमी किनारे पर किले के पास अपना शिविर स्थापित किया। इस बीच, कादिर ने नदी के दूसरी ओर अपनी सेना तैनात कर दी थी। सम्राट के समर्थन में समरू की सेना को डटे देखकर, चतुर रुहेला ने एक रणनीति बनाई, ताकि बिना किसी गंभीर लड़ाई के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। उसने बेगम से मिलने का अनुरोध किया, जो उसे अपने शिविर में मिलने के लिए सहमत हो गईं।
उसने औपचारिक बातचीत के लिए खुद को तैयार किया। उसके दल के फ्रांसीसी कमांडर ने उसके तंबू को बड़े ही शानदार ढंग से सजाया। फर्श पर एक सुंदर रेशमी कालीन बिछाया गया था और सिरहाने एक आलीशान, गद्देदार कुर्सी रखी गई थी, साथ ही अन्य लोगों के लिए भी बैठने की व्यवस्था थी। लेकिन उसने अपने कमांडर को कादिर और उसके साथ आए सभी लोगों पर कड़ी नज़र रखने का निर्देश दिया। एक शातिर और धोखेबाज के रूप में उसकी प्रतिष्ठा को देखते हुए, वह कोई जोखिम नहीं लेना चाहती थी।
बेगम ने कढ़ाही वाले कश्मीरी ऊन की एक सादी, कसी हुई पगड़ी पहनी हुई थी, जिसके ऊपर एक शॉल ओढ़ी हुई थी, जो उनके गालों, गले और कंधों को ढके हुए थी; और उसकी तहों के बीच से उनकी छोटी-छोटी भूरी आँखें एक झींगुर जैसी तीक्ष्णता से झाँक रही थीं। उनकी पोशाक में एक छोटी, पूरी पेटीकोट थी, जिससे उनकी ब्रोकेड की पतलून का काफी हिस्सा दिखाई दे रहा था, जिसके नीचे से कढ़ाही वाली चप्पलें झाँक रही थीं। उनका पहनावा शालीनता और भव्यता दोनों की आवश्यकताओं को पूरा करता था।
जब कादिर कुछ अंगरक्षकों के साथ पहुंचे (1787 ई.), तो उन्होंने समरू के फ्रांसीसी कमांडर से कहा कि यदि उन्हें कोई आपत्ति न हो तो वे उनसे अकेले में मिलना चाहेंगे। बेगम का अधिकारी उनसे सलाह लेने गया; वह आगंतुक को अकेले में मिलने देने को लेकर आशंकित था। हालांकि, बेगम उनसे अकेले में बात करने के लिए सहमत हो गईं, लेकिन उन्होंने निर्देश दिया कि कादिर के अंगरक्षकों को सुरक्षित दूरी पर रखा जाए। उन्होंने अधिकारी को यह भी सलाह दी कि वे नदी के उस पार कादिर की सेना पर अपनी तोपें ताने रखें और उनके संकेत मिलते ही गोली चलाने के लिए तैयार रहें। फ्रांसीसी अधिकारी ने तंबू के पीछे बने एक छेद से चुपके से सारी कार्यवाही पर नजर रखने का फैसला किया।

कादिर ने बेगम समरू को कभी नहीं देखा था, लेकिन उनके बारे में बहुत कुछ सुना था। जब उन्हें अंदर बुलाया गया, तो उन्होंने सबसे पहले उन्हें पारंपरिक अभिवादन किया। बोलते समय उनकी आवाज़ में आत्मविश्वास झलक रहा था।
“महामहिम, मैं आपके समक्ष एक प्रस्ताव रखता हूँ जो पारस्परिक हित में हो सकता है। आप मेरे साथ मिलकर सम्राट के क्षेत्रों और धन को आपस में बाँट लें, जो वैसे भी काफी कमजोर है और स्वयं की रक्षा करने में असमर्थ है। उसका हिंदू प्रतिनिधि भी अपनी ही समस्याओं में उलझा हुआ है। किसी भी स्थिति में, हम दरबार के कई विरोधियों की मदद से आसानी से उसका सामना कर सकते हैं।”
“मुझे खेद है कि सम्राट की स्थिति के बारे में आपकी धारणा पूरी तरह गलत है। और मैं यहाँ सम्राट की रक्षा करने आई हूँ, न कि उनकी पीठ में छुरा घोंपने।” बेगम ने बढ़ते गुस्से को छुपाने की कोशिश करते हुए जवाब दिया।
“दरअसल, मेरे पास एक और बड़ा प्रस्ताव है। आप मुझसे शादी क्यों नहीं कर लेतीं? इंशाअल्लाह, आप हिंदुस्तान की महारानी बन सकती हैं और हम दोनों लाल किले से शासन करेंगे। लेकिन अगर आप मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं करतीं, तो मैं आपको सलाह देता हूं कि रक्तपात से बचने के लिए अपनी सेना को सरधना वापस बुला लें।”
समरू बेगम अब और खुद को रोक नहीं पाईं। वह चिल्लाईं:
“अरे धूर्त, तुझमें दिल्ली का राजा बनने की धृष्टता करने की हिम्मत कैसे हुई? मैं तेरी धमकियों को घोर तिरस्कार की दृष्टि से देखता हूँ। तेरे अपमानजनक प्रस्ताव का उत्तर मैं शीघ्र ही दूंगा।”
शोरगुल भांपकर फ्रांसीसी महिला अंदर गई। उसने आदेश दिया,
"इस आदमी को बाहर निकालो, और उसके प्रस्तावों के जवाब में उसकी सेना पर गोलियों की बौछार करो।"
रुहेला ने जल्दबाजी में तम्बू छोड़ा और नदी पार कर ली। यह जानकर कि महादजी की सेना दिल्ली के निकट पहुँच रही है, उन्होंने अपनी सेना को अपने क्षेत्र में वापस लौटने का आदेश दिया।
शाह आलम को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बेगम समरू ने उस बदमाश से सफलतापूर्वक छुटकारा पा लिया है। उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और उसे सम्मान के वस्त्रों और बहुमूल्य उपहारों से सुसज्जित किया। उन्होंने कहा:

“हमारी महारानी ने हमें बताया था कि अपनी पहली यात्रा में तुमने खुद को हमारी दासी कहा था। तुम वास्तव में अपनी जाति की शोभा हो। हम तुम्हें यह उपाधि प्रदान करते हैं:
ज़ेबुन निस्सा।"
इसी समय के आसपास, समरू बेगम को अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से शाह आलम के सबसे बड़े पुत्र राजकुमार मिर्ज़ा जवान बुख्त द्वारा ग्रेट ब्रिटेन के राजा जॉर्ज तृतीय को फारसी में लिखे गए एक पत्र की प्रति प्राप्त हुई। उन्होंने पत्र की सामग्री को अत्यंत संवेदनशील माना, क्योंकि राजकुमार ने ब्रिटिश राजा से विनती की थी कि वे कलकत्ता में अपने गवर्नर-जनरल को निर्देश दें कि वे मुगल सत्ता और उनके राज्य की बहाली के लिए तैमूर वंश की सहायता करें। राजकुमार ने लिखा था:
सरकार की शिथिलता और कपटी मराठों तथा सिंधिया (जो राजद्रोहियों का मुखिया है) के आगमन के परिणामस्वरूप, दस गुना अधिक बढ़ चुकी अशांतियों और विद्रोहों ने हमारे महान देश की पीड़ा को और बढ़ा दिया है।
बेगम ने तुरंत महाधजी को देखा और उन्हें पत्र की एक प्रति सौंप दी। महाधजी ने दिल खोलकर हँसा, लेकिन मामले में उनकी चिंता के लिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद दिया और पूछताछ करने का वादा किया।
कुछ समय बाद उन्होंने बेगम को सलाह दी कि राजकुमार ने वह पत्र हताशा में लिखा था और चिंता की कोई बात नहीं है।

थॉमस

बेगम समरू, अपनी अतिरिक्त जिम्मेदारियों के प्रति सचेत रहते हुए, यह बात सबको बता दें।
चारों ओर यही खबर फैली थी कि वह अपनी सेना के लिए एक नए कमांडर की तलाश कर रही है।
जॉर्ज थॉमस, एक आयरिश सैनिक, कुछ समय पहले ही एक ब्रिटिश युद्धपोत में भारत आया था। देश के दक्षिणी भाग में कुछ असंतोषजनक कार्यों के बाद, वह दिल्ली पहुँच गया था। वह लंबा और हट्टा-कट्टा दिखने वाला व्यक्ति था। उसने बेगम से नौकरी के लिए संपर्क किया। बेगम हमेशा से ही यूरोपीय लोगों के प्रति आकर्षित रही थीं, न केवल अपने सैनिकों में, बल्कि अपने निजी जीवन में भी। उन्हें थॉमस में एक संभावित साथी दिखाई दिया। बेगम अपने मन में थॉमस की तुलना अपने दिवंगत पति से करने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सकीं; जॉर्ज थॉमस उनसे काफी छोटा था और शारीरिक रूप से मजबूत और हट्टा-कट्टा दिखता था। थॉमस को सरधना की सेना का नया कमांडर और जागीर का नागरिक प्रशासक नियुक्त किया गया। उसने थॉमस को क्षेत्र से आय बढ़ाने के तरीके खोजने की सलाह दी, क्योंकि उनका कल्याण काफी हद तक जागीर से प्राप्त राजस्व पर निर्भर था। थॉमस एक ऊर्जावान और उत्साही व्यक्ति थे। उन्होंने सरधना के प्रबंधन में स्वयं को पूरी तरह से लगा दिया और कृषि से होने वाली आय को बढ़ाने के उपाय खोजे। उन्होंने क्षेत्र के भीतर के जंगलों से आय उत्पन्न करने की योजनाएँ शुरू कीं। सरधना से दक्षिण से उत्तर और इसके विपरीत विभिन्न प्रकार की उपज की भारी आवाजाही को देखते हुए, उन्होंने बेगम को इस तरह के सभी यातायात पर सीमा शुल्क या पारगमन शुल्क लगाने का प्रस्ताव दिया। उन्होंने यात्रियों पर पारगमन शुल्क लगाने का भी प्रस्ताव रखा। बेगम उनकी सूझबूझ से प्रभावित हुईं, लेकिन यात्रियों पर पारगमन शुल्क लगाने के विचार को स्वीकार नहीं किया।
“सरधना से होकर गुजरने वाले अधिकांश यात्री हरिद्वार जाने वाले हिंदू तीर्थयात्री होते हैं। मैं उन पर किसी प्रकार का बोझ नहीं डालना चाहती।” उन्होंने कहा।

जॉर्ज थॉमस की नियुक्ति ने समरू की सेना के फ्रांसीसी अधिकारियों के बीच असंतोष और ईर्ष्या को जन्म दिया, जो अपने से कहीं कम अनुभव वाले एक नए अंग्रेजी भाषी आयरिश व्यक्ति को अपना बॉस बनाए जाने से नाराज़ थे। यह सर्वविदित था कि जॉर्ज थॉमस की नागरिक जिम्मेदारियों ने उन्हें सेना के किसी भी अन्य अधिकारी की तुलना में बेगम के कहीं अधिक करीब ला दिया था। इस कड़वाहट के कारण अफवाहें फैलने लगीं और थॉमस को बेगम की युवा दासियों से जोड़ने वाली कहानियां प्रसारित की गईं।
जल्द ही जॉर्ज थॉमस को अपनी सैन्य क्षमता दिखाने का मौका मिला। मुगल साम्राज्य के सामंतों में से एक शाह आलम को देय कर देने से इनकार कर रहा था। वह जयपुर के राजा को भी परेशान कर रहा था, जिन्होंने शाह आलम पर उसे रोकने का दबाव डाला। महाधजी अपने सैनिकों के साथ कहीं और व्यस्त थे, इसलिए शाह ने स्वयं एक सैन्य अभियान चलाने का फैसला किया। शाह आलम ने बेगम समरू से अपनी बटालियनों के साथ उनके साथ आने का अनुरोध किया।
सम्राट अपने मुगल सैनिकों और बेगम समरू के साथ, थॉमस की कमान में, रेवाड़ी की ओर अग्रसर हुए (1788 ई.)। उन्होंने गोकलगढ़ के पास डेरा डाला, जहाँ समरू की सेना सम्राट के दाहिनी ओर थी। शाही सेना का इरादा विद्रोही नजफ कुली पर आक्रमण करने का था। हालाँकि, विद्रोही सेना ने अनुशासनहीन मुगल सैनिकों पर रात में अचानक हमला करके उन्हें चौंका दिया। पूरी तरह से हतोत्साहित सम्राट, बेगम के अनुरोध पर, जल्दी से भाग निकले। उन्होंने बेगम समरू की पैदल सेना के चौक में शरण ली।
इसी बीच, उसने नजफ कुली को एक संदेश भेजा, जिसमें उसके आचरण की निंदा करते हुए उसे तत्काल और अनुकरणीय दंड की धमकी दी गई थी। फिर वह अपनी पालकी में सवार हुई और अपने 100 सैनिकों के साथ आगे बढ़ी, जिनके साथ जॉर्ज थॉमस के नेतृत्व में एक छह-पाउंडर तोप भी थी। वह इस छोटी सी टुकड़ी के साथ आगे बढ़ी, पालकी को नीचे उतारने का आदेश दिया और स्वयं तोप और छोटे हथियारों से गोलियों की बौछार का निर्देश दिया। दर्रीबेरे अपनी पलटन का नेतृत्व करते हुए सबसे आगे था, तभी एक बंदूक की गोली से वह गिर गया। थॉमस ने तमाम कोशिशों के बावजूद उसे नहीं बचा सका।
इसके बाद जॉर्ज थॉमस ने कुली की सेना पर सीधा हमला किया, जो बेगम की सेना की सटीक गोलीबारी के आगे पीछे हट गई।

तब विद्रोही को यह एहसास हुआ कि उसके पास एकमात्र मौका यही है कि वह बेगम से विनती करे कि वह अपने व्यापक प्रभाव का इस्तेमाल करके सम्राट की क्षमा प्राप्त करवा दे।
“तुम्हें क्षमादान नहीं मिलना चाहिए, फिर भी मैं सम्राट से बात करूंगी,” बेगम ने कहा।
वह विद्रोही को कुचलने के लिए दृढ़ संकल्पित थी, लेकिन सम्राट अपने पिछले अनुभव से निराश होकर उस उपद्रवी का पीछा करने के मूड में नहीं थे। इसलिए बेगम समरू की मध्यस्थता से शाह आलम शांति संधि करने के लिए सहमत हो गए। बेगम ने पश्चाताप करने वाले कैदी विद्रोही की तरह, नजफ कुली को रुमाल से बांधकर सम्राट के समक्ष प्रस्तुत किया, ताकि सम्राट की शाही गरिमा को शांति मिल सके। उन्होंने सम्राट को कुछ धनराशि देने की पेशकश भी की। सम्राट ने उनके अपराधों को क्षमा कर दिया और उन्हें पहले की तरह कार्य जारी रखने की अनुमति दी।
हालांकि शाह आलम को अपने इस नवीनतम अभियान से कुछ भी हासिल नहीं हुआ, फिर भी वे समरू बेगम के प्रति अत्यंत कृतज्ञ थे, जिन्होंने उन्हें एक बार फिर संकटपूर्ण स्थिति से बाहर निकाला। उन्होंने समरू बेगम को अनेक उपहार दिए और दरबार में उन्हें 'अपनी सबसे प्रिय पुत्री' कहकर संबोधित किया।
सरधना लौटने पर बेगम ने हाल की घटनाओं पर काफी विचार किया और सम्राट के प्रति थोड़ी सहानुभूति महसूस की। वह उनसे काफी स्नेह करने लगी थीं। वास्तव में, शाह आलम उन्हें परिवार का सदस्य मानते थे और सिंहासन के उत्तराधिकारी राजकुमार अकबर शाह उन्हें बहन की तरह मानते थे।
वह अपनी जागीर के प्रबंधन में पूरी तरह से तल्लीन हो गईं। उन्हें यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि कुशल प्रशासन के कारण उनकी आय कई गुना बढ़ रही थी। सरधना के किसानों में अनुशासन बनाए रखने और राजस्व अधिकारियों को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने के लिए वह थॉमस की आभारी थीं। गोकुलगढ़ में नजफ कुली के विरुद्ध हुए युद्ध में बेगम को थॉमस के सैन्य कौशल का भी उतना ही अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ।
एक दिन जब जॉर्ज थॉमस बेगम से कुछ अत्यावश्यक वित्तीय मामलों पर चर्चा करने आए, तो उन्होंने पाया कि वह लगातार रो रही थीं।
घबराकर उसने उससे पूछा, "तुम्हें क्या बात परेशान कर रही है?"

मुझे अभी-अभी विश्वसनीय और गोपनीय जानकारी मिली है कि गुलाम कादिर दो हजार सैनिकों के साथ लाल किले में प्रवेश करने में सफल हो गया है। किले के प्रवेश द्वार पर 'लाल ब्रिगेड' नामक पहरेदारों का एक दल तैनात है। लेकिन महल के अधीक्षक नाज़िर ने विश्वासघात किया। उसने पहरेदारों को सलाह दी कि वे कादिर के आदमियों को बिना किसी बाधा के महल में प्रवेश करने दें।
वह सिसकते हुए बोलती रही।
आप कल्पना कर सकते हैं कि इसके बाद क्या हुआ। उसने सम्राट को मजबूर किया कि वह उसे साम्राज्य का रीजेंट और मीर-बख्शी (सेनापति) का पद दे दे, और उसने कुरान पर शपथ लेकर और सम्राट के सामने सिर झुकाकर यह जताते हुए कि उसका सिर सम्राट के चरणों को छू गया था, तैमूर वंश के प्रति अटूट निष्ठा का ढोंग किया।
इसके तुरंत बाद, उसने शाह आलम को अपमानित करना शुरू कर दिया और हरम की महिलाओं पर हर संभव अत्याचार और यातनाएं दीं। वह सम्राट के खजाने के बारे में जानना चाहता था। और जब उसे बताया गया कि महल में कोई धन नहीं है, तो उसने शाह आलम को शारीरिक रूप से प्रताड़ित करने, राजकुमारियों के वस्त्र उतारने और अपशब्दों का प्रयोग करने का दुस्साहस किया। उसने मल्लिका का भी अपमान किया। बादशाह के प्रसिद्ध धन का पता न लगा पाने के कारण कादिर क्रोध से इतना पागल हो गया कि उसने अंततः अपने हाथों से बादशाह की आंखें निकालकर उसे अंधा कर दिया। (अगस्त 1788 ई.) और फिर उसने शाह आलम के एक दूर के रिश्तेदार बिदर बख्त को बादशाह घोषित कर दिया और शाह आलम और उसके पूरे परिवार को किले के अंदर तहखानों में डाल दिया।
“हे भगवान! बादशाह ने राणे खान या हमें सूचना क्यों नहीं दी? मुझे यकीन है, मैं उस बदमाश का सामना कर लेता।” बेगम की कहानी सुनकर थॉमस हिल गया।
मुझे इस बात का पूरा यकीन है। लेकिन नाज़िर ने बाहरी दुनिया से सभी संचार माध्यमों को अवरुद्ध कर दिया है। मैं बहुत निराश महसूस कर रहा हूँ।
बेगम फिर रोने लगीं। थॉमस ने उन्हें गले लगाकर सांत्वना दी और उनके होठों पर चुंबन किया। बेगम उनकी बाहों में पिघल गईं।
“हमारा तात्कालिक कार्य उस बदमाश को पकड़ना है। रोने से कुछ नहीं होगा।
सम्राट आपको बहुत पसंद करते हैं, आप उनसे मिलने क्यों नहीं जाते और उनकी इस कठिन घड़ी में उनकी मदद करने का प्रयास क्यों नहीं करते?” थॉमस ने सुझाव दिया।

“[redacted]”

शोकगीत

कुछ समय बाद महाधजी के सेनापति राणे खान ने उसे पकड़ लिया।
उस बदमाश को समरू की सेना की सहायता से लोहे की कोठरी में डाल दिया गया। एक विशेष पिंजरे में, जिसे इसी उद्देश्य से बनाया गया था, सेना के सामने रस्सी से लटका दिया गया। सैनिकों ने कैदी पर हर तरह के अपमान और दुर्व्यवहार का बोलबाला किया। शाह आलम की इच्छा के अनुसार, कादिर की आंखें निकाल ली गईं और एक ताबूत में रखकर उसे भेज दी गईं, ताकि राजा की प्रतिशोध की प्यास बुझ सके। कादिर के साथी नाज़िर को हाथी के पैरों तले रौंदकर मार डाला गया।
पुनः स्थापित सम्राट के नाम पर जामा मस्जिद से खुत्बा पढ़ा गया। महाधजी ही शासक बने रहे। अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए शाह आलम ने मथुरा और वृंदावन के हिंदू पवित्र नगरों का शासन महाधजी को सौंप दिया। इसके अलावा, उन्होंने अपने हिंदू प्रजाजनों की भावनाओं का सम्मान करते हुए गौहत्या पर प्रतिबंध लगा दिया।
शाह आलम को अपना सिंहासन तो वापस मिल गया, लेकिन कादिर द्वारा राजमहल से लूटे गए गहने उन्हें नहीं मिले। राणे खान की सेना के एक फ्रांसीसी अधिकारी लेस्टेनो ने कादिर के लूटे हुए गहनों और हीरों से भरे थैलों पर कब्जा कर लिया था। लेकिन उसने इस बात को गुप्त रखा और आगरा लौटकर सिंधिया से अपने सैनिकों का वेतन लिया और सारी नकदी और राजमहल के साथ यूरोप भाग गया। यह बात फ्रांसीसी अधिकारी की पकड़ से बाहर हो जाने के बाद ही सामने आई।
बेगम समरू लाल किले गईं और सबसे पहले मल्लिका के दर्शन करने गईं। "ज़ेबुन-निस्सा, आओ, मैं तुमसे मिलना चाहता था।"
रानी ने रोते हुए उसे गले लगा लिया।
“राजा आपको लगातार याद कर रहे थे। उन्होंने कहा था, अगर ज़ेबुन-निस्सा यहाँ होते, तो हम पर यह विपत्ति न आती। आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि उस दुष्ट ने हमारे साथ क्या किया। ऐसा लग रहा था मानो उसे महाराज को पीड़ा पहुँचाने में बहुत आनंद आता हो। उसने सम्राट को धमकी दी कि अगर उन्होंने हमारे खजाने का पता नहीं बताया, तो वह उनकी आँखें निकाल लेगा। सम्राट ने पलटकर पूछा कि क्या वह उन आँखों को नष्ट करेगा जो पिछले साठ वर्षों से

पवित्र कुरान पढ़ने में लगी हुई हैं। लेकिन उस दुष्ट पर इसका कोई असर नहीं हुआ। उसने महाराज को ज़मीन पर पटक दिया और उनकी छाती पर चढ़कर एक छेनी से उनकी दोनों आँखें भेद दीं।”
यह भयावह कहानी सुनकर समरू बेगम फूट-फूटकर रोने लगीं।
“दिवंगत बादशाह मुहम्मद शाह की विधवाएं मल्लिका जमानी और साहिबा महल शैतान के साथ मिलीभगत कर रही थीं। हर तरफ राजद्रोह फैला हुआ था।”
“वे ऐसा क्यों करेंगे?”
“वे महाराज को पदच्युत करके अपने पोते बिदार बख्त को राजा बनाना चाहते थे। उसने इस सेवा के लिए बारह लाख रुपये की मांग की और महिलाओं ने किसी तरह उसे यह राशि मुहैया करा दी।”
"ओ अल्लाह!"
“बीदर बख्त को महल और किले का कब्ज़ा दे दिया गया और महाराज को किले के भीतर स्थित छोटी मस्जिद, मोती मस्जिद में कैद कर दिया गया। उस दुष्ट ने शाही परिवार को घोर अपमान और पीड़ा पहुँचाई। मुझे व्यक्तिगत रूप से कादिर के जाट साथी मनियार सिंह ने अपमान से बचाया।”
“काश, आपने मुझे सूचित करने का कोई तरीका ढूंढ लिया होता।” “जब कादिर के सैनिकों ने नाज़िर की मदद से किले पर कब्ज़ा कर लिया, तो उन्होंने बाहरी दुनिया से सभी संचार काट दिए और हमारे गहने, हीरे और नकदी लूट ली। उन्होंने कई दिनों तक भोजन और पानी से वंचित रखकर कोमल बच्चों और असहाय महिलाओं को भूखा रखकर मार डाला। उन्होंने सभी राजकुमारों और राजपरिवार के पुरुषों को किले की कालकोठरियों में डाल दिया। जब महादजी के सेनापति ने आठ सप्ताह की कैद के बाद उन्हें छुड़ाया, तो वे जीवित कंकालों की तरह दिख रहे थे, उनके लंबे नाखून, बिना कटी गंदी दाढ़ी और लंबे बाल थे। वे जंगल के निवासियों की तरह लग रहे थे।”
“मैंने आपको बहुत देर तक रोक रखा है, महाराज आपसे मिलकर प्रसन्न होंगे। चलिए उनके पास चलते हैं।”
बेगम समरू ने अपनी एक परिचारिका को बुलाया, जो एक लकड़ी का बक्सा लेकर आई। रानी ने कहा,
"यह क्या है?"
"महामहिम के लिए अफीम।"

“आपकी यह बहुत ही सराहनीय पहल है। उनकी वर्तमान स्थिति में, यह उनके लिए बहुत उपयोगी साबित होगा।”
जब दोनों महिलाएं राजा से मिलने गईं, तो मल्लिका ने कहा,
“महाराज! ज़ेबुन-निस्सा आपसे मिलने आए हैं।”
"उसे मेरे पास लाओ, मैं उसे छूना चाहता हूँ।"
जैसे ही बेगम समरू शाह आलम के करीब आईं, उन्होंने उनके चेहरे को अपनी हथेलियों में थाम लिया। उन्होंने कांपती हुई आवाज में कहा:
"अगर तुम यहाँ होते, तो वह बदमाश हमें छूने की हिम्मत भी नहीं करता।"
"यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं आपकी जरूरत के समय आपकी सहायता नहीं कर सका।" बेगम समरू ने शाह आलम को अफीम का डिब्बा भेंट किया और अपनी अंतिम सांस तक तैमूर के घराने के प्रति निष्ठा रखने की शपथ ली।
ज़ेबुन-निस्सा के प्रति स्नेह और कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में, शाह आलम ने बादशाहपुर झरसा की जागीर उनके सौतेले बेटे ज़फ़रयाब खान को प्रदान की। बेगम समरू ने बहुत पहले ही इस कृपा का अनुरोध किया था। उन्होंने अपने सौतेले बेटे के लिए नवाब की उपाधि का भी अनुरोध किया था। उनकी यह इच्छा भी पूरी कर दी गई।
जब बेगम जाने लगीं, तो मल्लिका ने उन्हें फ़ारसी में लिखे एक पाठ वाला कागज़ का टुकड़ा दिया। मल्लिका ने समझाया कि यह सम्राट द्वारा अपनी दृष्टि खोने के बाद रचित शोकगीत था।
जब बेगम समरू सरधना पहुँचीं, तो वे अपने बिस्तर पर लेट गईं और लंबी रचना पढ़ने लगीं। पहली कुछ पंक्तियाँ पढ़ते ही वे फूट-फूटकर रोने लगीं।
जहां भव्यता से आलीशान गुंबद उठते हैं, उस अंधेरे टावर में एक वृद्ध सम्राट लेटा हुआ है,
अकेला, निराश, अंधा, दुखों से भरा हुआ
आँसुओं में भी उनका गरिमामय स्वरूप झलक रहा है।
हे राजा, एक समय था जब सर्वोच्च शक्ति से परिपूर्ण होकर, आपकी वाणी सुनी जाती थी और राष्ट्र आपके विषय का जयजयकार करते थे; अब सोने की घृणित लालसा के कारण दुखद उलटफेर हो गया है।
विश्वासघाती छल से, तेरा सिंहासन और साम्राज्य बिक गया।’ मेरे बिस्तर के पवित्र साथी, और शांत आनंद,

कभी मेरी खुशी का स्रोत हुआ करता था, लेकिन अब दृश्य कितना बदल गया है! मेरे साथ शोकगीतों में लीन होने के लिए अभिशप्त।
हे सिंधिया, हे महान सरदार,
जिसने एक बार राहत प्रदान करने का वादा किया था
हे प्रभु, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ, अपनी उदारतापूर्वक सहायता प्रदान कर।
और उनके सिर के ऊपर, प्रतिशोध की तलवार लहराए।
भावपूर्ण कविता कई पन्नों में फैली हुई थी।

छापे

इसी बीच, गुलबदन ने देखा कि फरज़ाना को कुछ ज़्यादा ही लगाव होने लगा था। थॉमस। लेकिन इसमें एक अजीब मोड़ था। डारिबेरे की मृत्यु के बाद
गोकलगढ़ में, नूरो भी उस आकर्षक, हट्टे-कट्टे आयरिश व्यक्ति के करीब आ गई थी। यह एक बहुत ही असामान्य स्थिति थी। फरज़ाना लगभग चालीस वर्ष की थी और उसकी बेटी उसकी आधी उम्र से भी कम थी, और दोनों एक ही व्यक्ति की दीवानी हो गई थीं। गुलबदन को अपने पहले प्यार की याद आ गई, जिसे नूर बाई ने बीच में ही रोक दिया था। उसे अभी भी नूर बाई के थप्पड़ का दर्द याद था।
जब मुझे पहली बार प्यार हुआ तो मैं पूरी तरह से जोश से भरी हुई थी;
अब अंत में राख के सिवा कुछ नहीं बचा है।
गुलबदन ने गहरी सांस ली।
उसे पूर्वाभास हो गया था कि मौजूदा हालात में बेगम के लिए कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता। माँ और बेटी के बीच की प्रतिद्वंद्विता और ईर्ष्या का परिणाम विनाशकारी ही होगा। क्या वह विदेशी अपने हरम में माँ और बेटी दोनों को खुश रख पाएगा? यह तो अभूतपूर्व होगा।
गुलबदन ने इस मुद्दे पर विचार किया और फरज़ाना से बात करने का फैसला किया। “मुझे आपसे एक अत्यावश्यक बात करनी है। फरज़ो! मुझे लगता है कि आप जॉर्ज थॉमस के प्रति कुछ ज्यादा ही स्नेह दिखाने लगे हैं।”
मुझे वो ज़रूर पसंद है।
"क्या तुम उसकी रखैल बनना चाहती हो या उससे निकाह करना चाहती हो?" “उन्होंने मुझे शादी का प्रस्ताव दे दिया है। हम दोनों ईसाई हैं, इसलिए आगरा के गिरजाघर में शादी करेंगे। लेकिन इसमें अभी कुछ समय लगेगा। फिलहाल मैं इस बारे में ज्यादा सोचना नहीं चाहती। हम तब तक इंतजार करेंगे जब तक लाल किले में हुई त्रासदी का असर थोड़ा कम नहीं हो जाता।” बेगम ने अपनी योजनाओं का खुलासा किया।
“मुझे कहीं न कहीं ऐसा लगता है कि वह तुमसे तुम्हारी जागीर और उससे मिलने वाली नियमित आमदनी की वजह से शादी करना चाहता है। एक बार तुमसे शादी हो जाए तो वह तुम्हारी सेना का मालिक बन जाएगा। किसी विदेशी भाड़े के सैनिक के लिए हिंदुस्तान की सबसे बेहतरीन सेना और तुम्हारे जैसी खूबसूरत पत्नी से

बेहतर और क्या हो सकता है?” गुलबदन को लगा कि उसकी बातों से बेगम अपना फैसला बदल देंगी। “बहुत समय पहले जब तुम पहली बार मल्लिका से मिलने गई थीं, तब तुमने मुझे बताया था कि वह तुम्हें आधुनिक रजिया सुल्ताना कहती थीं। मुझे हैरानी है कि क्या तुम्हें रजिया की पूरी कहानी पता है। यह 500 साल पहले की बात है। दिल्ली में चार साल के बेहद सफल शासन के बाद उसने एक युवा अबीसीनियाई कर्मचारी के साथ गुप्त संबंध बना लिए। उसकी सेना में बड़े पैमाने पर असंतोष फैल गया और उसके कुलीन वर्ग के एक गुट ने उसे दरकिनार कर दिया।”
फरज़ाना के मन में ईर्ष्या की भावना जगाने के लिए, गुलबदन ने आगे कहा, "थॉमस आपसे काफी छोटा है, वह केवल 32 साल का है और स्वाभाविक रूप से, वह यहाँ युवा लड़कियों के पीछे भागता रहता है।"
“किसकी हिम्मत है उसे मुझसे छीनने की? मैं उसे नहीं छोडूंगी।”
“कृपया इस बात का ध्यान रखें कि इन सब का आपके दल पर क्या प्रभाव पड़ेगा; आप इससे बहुत जुड़े हुए हैं। मुझे डर है कि किसी भी अधीनस्थ के साथ भावनात्मक जुड़ाव दल में अनुशासनहीनता पैदा करेगा। पहले से ही बहुत असंतोष व्याप्त है।”
लाल किले में हुई त्रासदी के बाद, बेगम की असुरक्षा बढ़ती चली गई। वह चिड़चिड़ी और तनावग्रस्त हो गईं। अपनी घबराहट को शांत करने के लिए, उन्होंने हुक्का पीना शुरू कर दिया और उसे अपने साथ हर जगह ले जाती थीं। उसकी मनस्थिति दुखद तरीके से प्रकट हुई।
एक दिन बेगम ने घर के एक सुनसान कोने में एक दासी को जॉर्ज थॉमस को बड़े प्यार से चूमते हुए देख लिया। वह क्रोधित हो उठीं। उन्होंने उस लड़की को अपने दफ्तर में बुलाया और उसकी बेरहमी से पिटाई करवाई, जब तक कि उसकी मृत्यु नहीं हो गई। बड़ी बेपरवाही से उन्होंने कमरे में एक गड्ढा खुदवाया और शव को उसमें दफना दिया। फर्श को मिट्टी से ढक दिया गया और बेगम कब्र के ऊपर बेफिक्र होकर हुक्का पीती रहीं, मानो यह सब मामूली घटना हो। इस घटना से पूरे परिवार में सदमा फैल गया। गुलबदन बेहद परेशान थी और उसे यकीन हो गया था कि फरज़ाना का मानसिक संतुलन बिगड़ गया है; अब वह उसके भविष्य को लेकर गंभीर रूप से चिंतित थी।
1790 में, एक रंगीन मिजाज फ्रांसीसी, ले वासोल्ट, समरू की सेना में एक अधिकारी के रूप में शामिल हुआ। वह अच्छे खानदान के व्यक्ति की तरह व्यवहार

करता था, हालांकि उसका स्वभाव थोड़ा घमंडी था। वह एक तरह का बेपरवाह था। इस आकर्षक युवा फ्रांसीसी ने बेगम को पूरी तरह मोहित कर लिया। वह उनसे अपने देश के बारे में बातें करता और उनकी तुलना महान जोन ऑफ आर्क से करता। इससे बेगम का अहंकार बढ़ गया। धीरे-धीरे, थॉमस बेगम की नजरों में अपनी अहमियत खो बैठा।
एक दिन, फ्रांसीसी अधिकारी कुछ अत्यावश्यक समस्याओं पर चर्चा करने के लिए उनके कार्यालय गए। वह अपने अध्ययन कक्ष में हुक्का पी रही थीं और कुछ कागजात देख रही थीं। कमांडर की वर्दी पहने ले वासोल्ट कमरे में दाखिल हुए और उन्हें सलाम किया।
"महामहिम, मुझे इस समय आपको परेशान करने के लिए खेद है, लेकिन मामला इतना अत्यावश्यक है कि इसमें देरी की कोई गुंजाइश नहीं है।"
मुझे काफी चिंता हो रही है, कृपया बताएं कि क्या बात है।
“थॉमस के करीबी जर्मन अधिकारी शुलानबर्ग, थॉमस के मार्गदर्शन में अपनी यूनिट में असंतोष फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्हें सेवा से बर्खास्त किया जाना चाहिए।”
मुझे मिली जानकारी के अनुसार, हमारी दोस्ती की वजह से सैनिकों के एक वर्ग में कुछ बेचैनी है। उनमें से कुछ सोचते हैं कि मैं अपने पहले पति की पवित्र स्मृति के प्रति विश्वासघात कर रही हूँ, जिन्होंने इस कोर की स्थापना की थी। मुझे लगता है कि शादी के बाद कोई समस्या नहीं रहेगी।
लेकिन मुझे लगता है कि उस जर्मन व्यक्ति को तुरंत हटा देना चाहिए।
"इस स्तर पर मामले को जल्दबाजी में आगे न बढ़ाना ही बेहतर है, क्योंकि इससे और अधिक अशांति पैदा हो सकती है।"
वह अपने अध्ययन कक्ष के कोने में रखे सोफे पर जाकर बैठ गई। उसे लगा कि ले वासोल्ट उसके इस फैसले से निराश और रूठा हुआ है, इसलिए उसने उसे अपने बगल में बैठने के लिए आमंत्रित किया। उसने अलमारी से वाइन की एक बोतल और दो गिलास निकाले।
“उस जर्मन को लेकर आपकी चिंता भरी मुलाकातों के बाद आपको थोड़ी शराब पीने का हक है। हमें कभी-कभी आराम करना सीखना चाहिए।”
दो-चार गिलास शराब पीने के बाद ले वासोल्ट का मूड थोड़ा ठीक हो गया। बेगम भी अपनी शराब का आनंद ले रही थीं। उन्होंने मज़ाकिया अंदाज़ में कहा, "चलो,

हमें मुस्कुराते हुए दिखाओ। खुश रहने पर तुम और भी ज़्यादा आकर्षक लगते हो।"
वह मुस्कुराया और उसका हाथ पकड़ लिया। उसने अपना चेहरा उसकी ओर घुमाया और उसने उसे चूम लिया। बेगम ने कोई विरोध नहीं किया और उसने अपनी जीभ उसके मुंह में गहराई तक डाल दी। उसने उसे ज़मीन पर खींच लिया और फुसफुसाया: "अगर कमांडर अपनी वर्दी में ही अपने सर्वोच्च कमांडर को उसके कार्यालय में लिटा दे तो इससे और भी ज्यादा रोमांच पैदा होगा।"
वह जोर से हंस पड़ी।
अवैध मुलाकातें अक्सर होने लगीं और इस पर व्यापक रूप से चर्चा होने लगी, जिससे उनके दिवंगत पति रेनहार्ड्ट के समर्पित प्रशंसकों में खलबली मच गई। ले वासोल्ट बेगम के अद्वितीय सलाहकार बन गए।
“फ्रांस में कुलीन लोग घोड़ों से खींची जाने वाली गाड़ियों में यात्रा करते हैं। यह बैलगाड़ियों में यात्रा करने से कहीं अधिक गरिमापूर्ण है और निश्चित रूप से, तेज़ और अधिक आरामदायक भी है।” उन्होंने एक बार कहा था। "आप मेरे लिए भी ऐसी ही गाड़ी क्यों नहीं बना देते?"
थोड़े ही समय में ले वासोल्ट ने एक खूबसूरत रथ तैयार कर दिया। उन्होंने रथ खींचने के लिए चार घोड़ों को प्रशिक्षित किया; उन्होंने बताया कि दो घोड़े बैकअप के तौर पर रखे गए थे। दो लोगों को कोचमैन के रूप में प्रशिक्षित किया गया। रथ पूरी तरह तैयार हो जाने पर बेगम ले वासोल्ट के साथ सैर पर निकलीं। सरधना में घोड़े से खींचा जाने वाला यह रथ काफी लोकप्रिय हुआ।
और बेगम और भी ज्यादा मोहित हो गईं।

ले वासोल्ट

बेगम को इस बात से चिढ़ थी कि जॉर्ज थॉमस कम उम्र की महिलाओं को पसंद करता था।
बहरहाल, उसे एक नया आदर्श प्रेमी मिल गया था। वह नहीं चाहती थी कि
अपने निजी जीवन में जॉर्ज थॉमस से संबंधित किसी भी बात के लिए वह आगे नहीं बढ़ना चाहती थी। उसने थॉमस की तुलना में फ्रांसीसी अधिकारी के प्रति स्पष्ट रूप से अधिक तरजीह दिखाई। इससे दोनों अधिकारियों के बीच शत्रुता और सैनिकों के बीच गुटबाजी पैदा हो गई।
गुलबदन ने इस संभावना को पहले ही भांप लिया था और फरज़ाना से इस बारे में विरोध जताया था।
मैंने आपको रजिया की कहानी का सिर्फ पहला भाग बताया है। इसका एक दूसरा भाग भी है। पंजाब के भटिंडा में गर्मियों के चरम पर विद्रोह हुआ। उसने साहसपूर्वक उस किले को पार किया, लेकिन षड्यंत्रकारियों ने उसे घेर लिया और उसके अबीसीनियाई मित्र की हत्या कर दी। वह उसी किले में कैदी बन गई, जिसे छुड़ाने वह गई थी। वहाँ उसने एक षड्यंत्रकारी का समर्थन और स्नेह प्राप्त कर लिया। दोनों ने शादी कर ली और और समर्थन जुटाकर दिल्ली की ओर कूच किया। लेकिन वे पराजित हुए और युद्ध के मैदान से भागते समय पकड़े गए और मारे गए। मैं सिर्फ यह बताना चाहता था कि यदि कोई अविवाहित महिला शासक अपने दिल की भावनाओं को अपने निर्णयों पर हावी होने देती है, तो उसका परिणाम केवल विनाश ही होगा।
लेकिन बेगम पीछे नहीं हटीं और ले वासोल्ट से शादी करने के लिए दृढ़ थीं। दिल्ली में बैठे अंधे सम्राट, जो स्वयं अपनी विपत्तियों में डूबे हुए थे, अपने मुखबिरों के माध्यम से सरधना में हो रहे नवीनतम घटनाक्रमों से अवगत हुए और फ्रांसीसी अधिकारी से शादी करने के बेगम समरू के दृढ़ संकल्प से गंभीर रूप से चिंतित हो गए। उन्होंने सुनी हुई बातों को स्पष्ट करने के लिए बेगम को अपने समक्ष बुलाया।
“मुझे पता चला है कि जॉर्ज थॉमस, वह बहादुर नौजवान जिसने गोकलगढ़ में नजफ कुली के खिलाफ लड़ाई में जीत दिलाई थी, अब आपकी नज़रों से गिर गया है। और आप एक फ्रांसीसी से शादी करने का इरादा रखती हैं, क्या यह सही है?”

"जी हां, महाराज।"
“तुम्हारी मशहूर सूझबूझ और सूझबूझ का क्या हुआ? क्या तुम्हें एहसास है कि ऐसा कोई भी कदम तुम्हारे दल में तुम्हारी प्रतिष्ठा को गंभीर रूप से प्रभावित करेगा? साजिशें और अनुशासनहीनता फैलेगी। मैं तुमसे पुरजोर आग्रह करता हूँ कि ऐसा कोई भी कदम न उठाओ। मैं तुम्हें यह सलाह सिर्फ इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि मैं तुम्हें अपनी बेटी मानता हूँ।”
"मैं जानता हूं कि महाराज, आप वास्तव में मेरी भलाई में रुचि रखते हैं, लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं उन समस्याओं का समाधान कर लूंगा जिनकी आप आशंका कर रहे हैं।"
सम्राट निराश थे, लेकिन वे और कुछ नहीं कर सकते थे। उन्होंने बेगम समरू को विदाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।
अब वह फ्रांसीसी अपने प्रतिद्वंद्वी के प्रभाव को कम करने के लिए दृढ़ संकल्पित था। उसने सरधना कोर के कुछ फ्रांसीसी अधिकारियों को उकसाकर यह अफवाह फैलाई कि थॉमस बेगम के खिलाफ विद्रोह की योजना बना रहा है।
इन घटनाक्रमों से थॉमस बेहद निराश और हताश थे। उन्होंने सेवा से इस्तीफा दे दिया, लेकिन सरधना में स्थित अपने मुख्यालय, टप्पल को खाली करने से इनकार कर दिया। बेगम समरू ने अपना आपा खो दिया और थॉमस को खत्म करने पर तुली हुई थीं। उन्होंने अपनी बटालियनों, बीस तोपों और चार स्क्वाड्रनों के साथ टप्पल की ओर कूच करने की योजना बनाई। कोर के कई अधिकारियों ने उन्हें इस आत्मघाती कदम से रोकने की व्यर्थ कोशिश की।
गुलबदन बेहद चिंतित थी। उसे लगा कि बेगम के दो यूरोपीय दूल्हों में से थॉमस न केवल एक सैनिक के रूप में, बल्कि एक इंसान के रूप में भी बेहतर था। उसने माना कि फ्रांसीसी थोड़ा दिखावटी था और थॉमस कुछ हद तक अनाड़ी था, लेकिन यह कोई कारण नहीं था कि बेगम अपने भविष्य और सुरक्षा से समझौता करे। उसने पहले भी, जब वह एक दरबारी थी, तब से महसूस किया था कि वह जिद्दी और चालाक थी। उसे इस बात का पछतावा था कि उसने बेगम के दिल में थॉमस के प्रति संदेह के बीज बो दिए थे। लेकिन कम से कम मां और बेटी एक ही प्रेमी के कारण आपस में नहीं लड़ेंगी।
अब गुलबदन को नूरो की भी उतनी ही चिंता थी। उसकी शादी होने वाली थी। उसने इस बारे में बेगम से बात की।
“तुम खुद दूल्हा ढूंढ लो और मुझे बता देना,” उसने कहा।

“मैंने सुना है कि आप जॉर्ज को तप्पल से निकालने के लिए उसके खिलाफ सैन्य अभियान चलाने की योजना बना रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि यह एक समझदारी भरा फैसला है। हम अपने इलाके में फ्रांसीसियों और अंग्रेजों के बीच संघर्ष नहीं चाहते। इससे हम दो यूरोपीय देशों के सत्ता संघर्ष में उलझ सकते हैं। मुझे उससे मिलने दीजिए, शायद मैं उसे शांतिपूर्वक चले जाने के लिए मना सकूँ।” बेगम समरू मान गईं।
गुलबदन थॉमस से मिलने गई।
“आपने अभी तक शादी क्यों नहीं की?”
“मुझे लगा कि आपको वजह पता है। मैं बेगम समरू से शादी करना चाहता था और वो भी तैयार थीं। उन्होंने मुझे भरोसा दिलाया था कि लाल किले की त्रासदी का असर कम होने के बाद हम आगरा के गिरजाघर में शादी कर लेंगे। लेकिन फिर ये फ्रांसीसी आ गया और बेगम का मन बदल गया। और उस फ्रांसीसी ने, शायद ईर्ष्या के कारण, मेरे खिलाफ साजिशें रचनी शुरू कर दीं।”
मुझे पूरा यकीन है कि आप अभी भी बेगम को पसंद करते हैं और उनके शुभचिंतक हैं। आप समझ जाएंगे कि अब उनसे शादी करना नामुमकिन है। अगर आप सहमत हों, तो मैं आपके लिए एक उपयुक्त युवती ढूंढ सकती हूँ।
"मेरी सेहत के प्रति आपकी रुचि देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूं। इस संबंध में आप जो भी कदम उठाएंगे, मैं उनका स्वागत करूंगा।"
लेकिन मुझे थोड़ा समय दीजिए। कोई भी जल्दबाजी वाला कदम न उठाएं। और हां, तप्पल को खाली कर दीजिए; आप इतने प्रसिद्ध हैं कि कोई भी सम्मानित सरदार आपको जगह दे सकता है।
"जैसे ही मैं अपने भरण-पोषण के लिए कोई वैकल्पिक व्यवस्था कर लूंगा, मैं टप्पल खाली कर दूंगा।"
गुलबदन ने थॉमस के साथ हुई अपनी बातचीत का सार बेगम को बताया और उन्हें नूरो का विवाह थॉमस से कराने की अपनी योजना के बारे में जानकारी दी। कुछ ही समय में, थॉमस को एक मराठा सरदार से प्रस्ताव मिला।

परम आनंद

जॉर्ज थॉमस ने टप्पल को खाली कर दिया और अप्पा खंडी के साथ सेवा शुरू कर दी राव। इस व्यवहार को लेकर कोर के भीतर काफी असंतोष था।
थॉमस को जो सजा मिली थी, वह तो मिली ही थी। लेकिन उस फ्रांसीसी व्यक्ति के प्रति उसका आकर्षण पल-पल बढ़ता ही जा रहा था।
1793 में, बेगम ने फादर ग्रेगोरियो को एक संदेश भेजा, जिन्होंने बारह साल पहले आगरा में उनका बपतिस्मा किया था, और उन्हें चर्च में ले वासोल्ट से शादी करने के अपने इरादे के बारे में सूचित किया।
फादर ग्रेगोरियो इस संदेश से बेहद उत्साहित और सम्मानित महसूस हुए। उन्होंने उन्हें जवाब में लिखा:
‘महामहिम, हम आगरा के ईसाई आपके लिए बेहद खुश हैं। हमें विवाह समारोह में शामिल होने में अत्यंत प्रसन्नता होगी और उसके बाद स्वागत समारोह आयोजित करना हमें बेहद खुशी होगी। क्या आपको इस बात का ज्ञान है कि यहाँ के ईसाई आप पर बहुत गर्व करते हैं, क्योंकि आप पूरे हिंदुस्तान में एकमात्र ईसाई प्रमुख हैं?’
उनकी शादी एक भव्य और विस्तृत समारोह था। दंपति को अलग-अलग घरों में आमंत्रित किया गया था, लेकिन इन समारोहों में फ्रांसीसी व्यक्ति असहज महसूस कर रहा था, जिससे समरू बेगम काफी हैरान थीं। फादर ग्रेगोरियो की सलाह पर, बेगम ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपने ईसाई नाम में 'नोबिलिस' जोड़ लिया।
विवाह का जश्न मनाने के लिए, आगरा के ईसाईयों ने यमुना नदी के किनारे सम्राट शाहजहाँ द्वारा अपनी प्रिय पत्नी की स्मृति में निर्मित मुमताज महल के प्रसिद्ध मकबरे के पास एक शामियाने में दूल्हा-दुल्हन के लिए भव्य स्वागत समारोह आयोजित किया। शानदार भोज के बाद, मेहमानों के सम्मान में नृत्य प्रस्तुति का आयोजन किया गया, जिसमें चांदनी में जगमगाता मकबरा पृष्ठभूमि प्रदान कर रहा था। बेगम समरू को अपने नृत्यांगना के रूप में बीते जीवन की याद आ गई। उन्होंने अपने भाग्य पर विचार किया और महसूस किया कि यदि वह नूरबाई की हवेली में नर्तकी न होतीं, तो वह अपने दिवंगत पति रेनहार्ट से न मिल पातीं और उनसे विवाह न कर पातीं।

सरधना लौटने पर बेगम के पति उनकी इच्छा पर उनके बंगले में रहने लगे। गुलबदन को वह आदमी तुरंत नापसंद हो गया। लेकिन बेगम तो मानो स्वर्ग में मग्न थीं, मानो परमानंद में डूबी हुई हों। गुलबदन को अब सरधना में अच्छा नहीं लग रहा था। वह कहीं दूर जाना चाहती थीं।
गुलबदन को पता चला कि हरिद्वार में एक भव्य कुंभ मेला आयोजित होने वाला है। तीर्थयात्रियों का यह जमावड़ा बारह वर्षों के अंतराल के बाद आयोजित किया जाता था, जहाँ बंगाल, गुजरात, कश्मीर और पंजाब जैसे दूर-दराज के स्थानों से लाखों लोग गंगा में पवित्र स्नान के लिए एकत्रित होते थे। हरिद्वार। उसका अपना एक निजी उद्देश्य भी था। उसने सुना था कि हरिद्वार के पांडा परिवार विभिन्न तीर्थयात्रियों के पारिवारिक इतिहास को उनकी जाति और जन्मस्थान के अनुसार सहेज कर रखते हैं। गुलबदन को धुंधला सा याद था कि अपनी जिंदगी में अचानक आई उथल-पुथल से ठीक पहले वह अपने माता-पिता के साथ इस पवित्र शहर की यात्रा पर गई थी। वह अपने परिवार के बारे में और अधिक जानना चाहती थी।
“निकट भविष्य में हरिद्वार में कुंभ मेला लगने वाला है। जैसा कि आप जानते हैं, यह अवसर बारह साल में एक बार आता है। मैं हरिद्वार और ऋषिकेश में कुछ दिन बिताना चाहती हूँ। और अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं नूरो को भी अपने साथ ले जाना चाहूँगी। उसके लिए यह एक रोचक अनुभव होगा।” गुलबदन ने अपनी इच्छा व्यक्त की।
बेगम खुशी-खुशी मान गईं। गुलबदन और नूरो की मौजूदगी में उन्हें थोड़ी झिझक महसूस हो रही थी। उन्होंने अपने दल में से एक छोटी टुकड़ी को हरिद्वार तक उनके साथ जाने का आदेश दिया।

हरिद्वार

नूरो और गुलबदन के लिए तंबू गंगा नदी के किनारे लगाए गए थे।
कंखल नामक एक छोटे से गाँव के पास, पवित्र नदी के थोड़ा नीचे की ओर हरिद्वार के घाट। तीर्थयात्रियों की भीड़ दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी। गुलबदन और नूरो नदी के किनारे-किनारे चलते और घाटों पर जाकर रंग-बिरंगे वस्त्र पहने तीर्थयात्रियों की भीड़ को देखते, जो बिल्कुल समझ से परे भाषाएँ बोलते थे। चलते-चलते पहाड़ों से ठंडी, ताज़गी भरी हवा आती। विशाल घाटों में लगभग साठ सीढ़ियाँ थीं और वे लगभग सौ फुट चौड़े थे, जो गंगा के किनारे तक जाते थे। यह हरिद्वार का सबसे पवित्र स्थान था और दिन के अधिकांश समय सैकड़ों पुरुषों, महिलाओं और बच्चों से भरा रहता था, कुछ पवित्र स्नान के लिए नीचे उतरते थे और कुछ भीगे हुए वस्त्रों में ऊपर चढ़ने का प्रयास करते थे। नूरो की निगाहें धोती पहने युवकों पर टिकी रहती थीं।
दोनों लिंगों और सभी उम्र के लगभग 500 या उससे अधिक लोगों ने एक ही समय में पवित्र जल में डुबकी लगाई। पुरुष, विशेषकर बुजुर्ग, प्रार्थना करने में व्यस्त थे, जबकि महिलाएं ज्यादातर हंसती-हंसती और आनंदित थीं।
बड़े घाटों पर, शाम के समय कई तीर्थयात्री प्रार्थना करते हुए, पीपल के सूखे पत्तों से बने प्यालों में छोटे मिट्टी के दीये नदी में बहा देते थे। जलते हुए दीये नदी में बहते हुए अलौकिक दृश्य प्रस्तुत करते थे।
रात में सभी तंबू और स्टॉल रोशन थे, और दिन की तरह रात में भी माहौल उतना ही जीवंत था, लेकिन गुलबदन को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाली बात यह थी कि इतनी बड़ी संख्या में तीर्थयात्रियों और व्यापारियों के जमावड़े के बावजूद वहां व्यवस्था और शांति कायम थी। उन्हें यह देखकर असाधारण लगा कि एक लाख लोगों के बीच, जहां सभी एक-दूसरे के लिए अजनबी थे, महिलाएं और बच्चे पूरी तरह सुरक्षित महसूस कर रहे थे।
विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में साधु भी वहाँ एकत्रित हुए थे। उनमें से कई उत्तर में पहाड़ों में स्थित अपने निवास स्थानों से आए थे; तीर्थयात्री उनका बहुत सम्मान करते थे। इनमें से कुछ साधु बिना वस्त्रों के नग्न अवस्था में विचरण करते थे।

गुलबदन ने अपने एक अंगरक्षक को संबंधित पारिवारिक पांडा को ढूंढने और उसे अपने तम्बू में मिलने के लिए आमंत्रित करने को कहा। पांडा ने उचित समय पर अच्छी भेंट की उम्मीद में सूचना दी। उसने बताया कि उसके पिता एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे जिनके ग्राहक कई प्रतिष्ठित रईस थे और उसके माता-पिता नादिर शाह के आक्रमण से पहले हरिद्वार गए थे। नादिर शाह के आदेश पर हुए नरसंहार में उसके पिता मारे गए और उसकी माँ को बंदी बना लिया गया।
पांडा अपने पिता का नाम जानना चाहती थी।
गुलबदन ने सिर हिलाया। “मुझे नहीं पता। क्या आप मेरी बताई बातों के आधार पर हमारे परिवार की पहचान करने की कोशिश कर सकते हैं?”
अगले दिन पांडा आया और उसने अपनी बहीखाते में दर्ज हिसाब पढ़कर सुनाया: “पंडित राम शास्त्री राजज्योतिषी, पंडित भगीरथ दास के पुत्र, जो दिल्ली के नील कटरा के निवासी थे, 14 सितंबर 1738 को अपनी पत्नी रुक्मिणी और एक छोटी बच्ची भारती के साथ गंगा में पवित्र स्नान करने के लिए हरिद्वार पहुंचे।” विवरण में यह भी बताया गया है कि पांडा को एक चांदी का रुपया अर्पित किया गया था।
गुलबदन के पास रिकॉर्ड की पुष्टि करने का कोई साधन नहीं था, लेकिन उसने इसे स्वीकार कर लिया।
जैसे-जैसे गंगा में स्नान करने का शुभ दिन नजदीक आता गया, एक भव्य बाज़ार, यानी सामान बेचने का विशाल व्यापारिक केंद्र, पूरी तरह से गुलजार हो गया। घोड़े, ऊंट, बैल, सूखे मेवे, केसर और कश्मीर से लाए गए शॉल दूर-दूर से आने वाले तीर्थयात्रियों को आकर्षित करने के लिए मौजूद थे। पंजाब के वस्त्रों का भी विशेष महत्व था।
आस-पास के गांवों के निवासियों को तीर्थयात्रियों से बहुत लाभ हुआ। वे उनकी छोटी-मोटी दुकानों में व्यापार लेकर आए। तीर्थयात्रियों से चौकीदारों को एक छोटा सा कर देने की अपेक्षा की जाती थी। मंदिरों और तीर्थस्थलों के रखरखाव के लिए जिम्मेदार ब्राह्मणों को भेंट चढ़ाई जाती थी।
मराठों ने तीर्थयात्रियों पर भारी कर लगाए थे। मेले में लाए गए प्रत्येक घोड़े और पहिएदार गाड़ी के लिए आठ आना का शुल्क लिया जाता था। ऊंट पालकों को प्रत्येक जानवर के लिए छह आना देने पड़ते थे। प्रत्येक पालकी के लिए दो आना का शुल्क लिया जाता था।

नूरो ने गुलबदन से कहा:
"मैं इतने समय से यही सोचता आ रहा हूं कि अलग-अलग क्षेत्रों के लोग, अलग-अलग भाषाएं बोलने वाले लोग, जो सैकड़ों मील की दूरी से अलग हैं, हरिद्वार में एक ही समय पर कैसे एकत्रित होते हैं?"
“ब्राह्मण लोग शुभ मेलों और त्योहारों का कैलेंडर क्षेत्र की भाषा में काफी पहले से जारी कर देते हैं। हरिद्वार और काशी में लगने वाले कुंभ मेले तीर्थयात्रियों के बीच सबसे लोकप्रिय हैं और लंबी दूरी की यात्रा की कठिनाइयों और जोखिमों के बावजूद भारी भीड़ को आकर्षित करते हैं।” गुलबदन ने बताया।
कुछ दिनों बाद नूरो और गुलबदन तरोताज़ा और खुश होकर सरधना लौट आए। इसी बीच, समरू बेगम को जीवन की वास्तविकताओं का धीरे-धीरे एहसास होने लगा था।

दासता

बेगम के विवाह का उल्लास काफी अल्पकालिक था। ले वासोल्ट
उनमें शिष्टाचार का बिल्कुल भी अभाव था। वे अपने ग्राहकों से प्रभावी ढंग से संवाद नहीं कर पाते थे।
वह न तो उर्दू और न ही फारसी पर उचित पकड़ रखता था और न ही धाराप्रवाह अंग्रेजी बोल पाता था, इसलिए वह कोर में अपने अधीनस्थों के साथ ठीक से काम नहीं कर पाता था।
शादी के तुरंत बाद, फ्रांसीसी व्यक्ति ने सरधना के सैन्य बलों और राजस्व अधिकारियों के बीच अपना दबदबा कायम करना शुरू कर दिया। वह अहंकारी और घमंडी था, और जल्द ही अपने दबंग और उद्दंड व्यवहार से सैन्य बलों के अधिकारियों और सैनिकों को नाराज़ करने लगा। वह थॉमस के करीबी माने जाने वाले किसी भी अधिकारी को परेशान करता था। एक फ्रांसीसी अधिकारी, जो सैनिकों के बीच बहुत लोकप्रिय था और थॉमस के करीबी के रूप में जाना जाता था, विशेष रूप से उसकी शत्रुता का शिकार हुआ। ले वासोल्ट ने फ्रांसीसी अधिकारी का पदावनति कर दिया, जिससे दुश्मनी पैदा हो गई। कुछ अधिकारियों ने मिलकर बेगम और उसके पति को सत्ता से हटाने की साजिश रची।
इन घटनाओं से बेगम चिंतित हो गईं और उन्होंने अपने पति को रोकने की कोशिश की। उन्होंने उन्हें अन्य अधिकारियों की भावनाओं का सम्मान करने की सलाह दी, लेकिन उन्होंने उनकी बात नहीं मानी। यहाँ तक कि उन्होंने अपने से कम दर्जे के अधिकारियों के साथ भोजन करने का भी विचार किया और उन्हें यूरोपीय समाज का नीच और असभ्य व्यक्ति समझा।
गुलबदन द्वारा रजिया सुल्ताना के बारे में बताई गई कहानी बेगम को परेशान करने लगी। वह वही गलती दोहराना नहीं चाहती थी; वह अपने दल पर अपना नियंत्रण खोना नहीं चाहती थी। दल और अपने पति के बीच, वह किसी भी दिन दल को ही चुनती। दल ही उसका पहला प्यार था।
यह षड्यंत्र गंभीर रूप ले चुका था। षड्यंत्रकारियों की इच्छा थी कि दिवंगत रेनहार्ड्ट सोम्ब्रे के पुत्र ज़फ़रयाब खान को कोर की कमान सौंपी जाए। ज़फ़रयाब ने इस जोखिम भरे सम्मान को आसानी से स्वीकार नहीं किया, क्योंकि उन्हें इसके परिणामों को लेकर काफी संशय था। लेकिन अंततः, कुछ

अधिकारियों और सैनिकों के आश्वासन पर, उन्होंने उनके प्रस्ताव को मान लिया।
सेना में विद्रोह इतना व्यापक था कि बेगम और उनके पति दोनों को अपनी जान का खतरा महसूस होने लगा। उन्होंने आपस में समझौता किया कि अगर विद्रोहियों ने उनमें से किसी एक को मार डाला तो दूसरा नहीं बचेगा। वे तुरंत अवध में शरण लेने की उम्मीद में भाग निकले। उनकी योजना की भनक जफरयाब को लग गई, जिसने उन्हें रोकने के लिए घुड़सवार सेना भेजी। सरधना से मात्र चार मील दूर, घुड़सवार सेना ने बेगम को उनकी पालकी में घेर लिया। जफरयाब ने बेगम के साथ मौजूद कुछ सशस्त्र सेवकों को इस शर्त पर क्षमादान देने की घोषणा की कि वे बेगम और उनके पति को, जो आगे निकल चुके थे, सौंप देंगे।
अपने पालकी में बैठी, जिसे उसके भारवाहकों ने ऊपर उठा रखा था, उसने घासी राम को देखा, जो उस सेना का एक सूबेदार था और जिसे वह अच्छी तरह जानती थी। उसने कठोर स्वर में आदेश दिया:
“घासी राम! इधर आओ।”
वह पालकी तक दौड़ा और उसे प्रणाम किया।
“Huzoor?”
“तुमने हमारा नमक चखा है। मेरी टुकड़ी के तुम सभी जवानों को हिंदुस्तान की सभी निजी सेनाओं में सर्वश्रेष्ठ चीजें मिली हैं। पूरे देश में तुम्हारा इज्जत-ओ-इकबाल सबसे ऊंचा है। इस बकवास का क्या मतलब है?”
मैं केवल अपने वरिष्ठों के आदेशों का पालन कर रहा हूँ।
और उनके आदेश क्या हैं?
"तुम्हें और तुम्हारे पति को गिरफ्तार करके जफरयाब खान के हवाले कर देना है।"
सूबेदार के जवाब से बेगम क्रोधित हो गईं और चिल्लाईं,
“क्या तुम हमें मारना चाहते हो? विश्वासघाती विद्रोहियों द्वारा अपमानित और मारे जाने के बजाय, हम अपने ही हाथों मरना पसंद करेंगे।”
बेगम ने अपना रत्नजड़ित खंजर निकाला, जिसे वह हमेशा अपने साथ रखती थी, और उससे अपनी छाती पर वार किया। खून बह निकला।
चारों ओर अफरा-तफरी मची हुई थी, और किसी ने चिल्लाकर कहा,
बेगम ने आत्महत्या कर ली है।

ले वासोल्ट, जो अपने घोड़े पर आगे चल रहा था, ने पीछे मुड़कर देखा। उसने पालकी से खून टपकता हुआ देखा।
“क्या हुआ है?” वह चिल्लाया।
सैनिकों ने एक स्वर में चिल्लाया,
बेगम समरू ने आत्महत्या कर ली है।
ले वासोल्ट को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। लेकिन भागने से पहले बेगम के साथ हुए समझौते के अनुसार, उसने अपनी पिस्तौल निकाली, उसे अपने मुंह में रखा और ट्रिगर दबा दिया। गोली लगते ही ले वासोल्ट एक फुट हवा में उछला और फिर नीचे गिरकर मर गया। उसकी मृत्यु पर सैनिकों में किसी ने सहानुभूति नहीं दिखाई। शव को लात मारी गई और घसीटा गया, फिर उसे एक खाई में फेंक दिया गया (1795 ई.)।
बेगम को बंदी बनाकर सरधना वापस ले जाया गया। उनका घाव गंभीर नहीं था और वे जल्दी ही ठीक हो गईं।
कड़ी सुरक्षा के बीच एक छोटी सी कोठरी में कैद बेगम समरू को अपनी कमियों और गलतियों पर विचार करने का भरपूर समय मिला। उन्हें एहसास हुआ कि यूरोपियों के प्रति उदारता दिखाने की उनकी प्रवृत्ति ही उनके पतन का एक कारण थी। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि वाल्टर के साथ अपने सुखद और सफल विवाह के बाद, वे उन सभी यूरोपियों के प्रति आकर्षित हो गईं जो उनके संपर्क में आए, चाहे वह थॉमस हो, या फ्रांसीसी अधिकारी मोंटिनी जो थॉमस से पहले उनसे विवाह का प्रस्ताव रखता था, या फिर रंगीन मिजाज ले वासोल्ट। उन्हें लगा कि उन्होंने अपने शुभचिंतकों के भरोसे को धोखा दिया है। संक्षेप में, अनेक प्रेमियों के साथ उनके प्रेम-प्रसंग ही उनके पतन का कारण बने और अंततः उनका बुरा समय उनके सामने आ गया।
गुलबदन को यह जानकर राहत मिली कि फरज़ाना अपने आप को लगी चोट से उबर चुकी है। उसके अनुरोध पर, उसे कैद में समरू से मिलने की अनुमति दी गई। समरू को देखकर गुलबदन रोने लगी। उसने समरू से कहा:
हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, बल्कि अपनी ही बनाई इस दयनीय स्थिति से निकलने की कोशिश करनी चाहिए। मुझे पता चला है कि शाह आलम आपकी कैद से बहुत परेशान हैं, लेकिन जनरल राणे खान की मृत्यु और हाल ही में महादजी की मृत्यु के बाद, वे असहाय महसूस कर रहे हैं और अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। अब शायद एकमात्र व्यक्ति जो मदद कर सकता है, वह जॉर्ज थॉमस हैं। लेकिन जिस तरह

से आपने उनके साथ व्यवहार किया और उन्हें नष्ट करने की कोशिश की, मुझे यकीन नहीं है कि वे हमारी मदद के लिए आगे आएंगे। लेकिन उनसे मदद की गुहार लगाने में कोई हर्ज नहीं है, आखिरकार, वे अब भी आपके शुभचिंतक हैं।
“अम्मा! मुझे एहसास है कि मैंने जॉर्ज के साथ बहुत अन्याय किया। पीछे मुड़कर देखने पर मुझे लगता है कि मैंने कई गलतियाँ की हैं। अगर मुझे मेरी जागीर वापस मिल जाए, तो मैं वादा करता हूँ कि मैं अधिक ज़िम्मेदार और न्यायपूर्ण तरीके से व्यवहार करूँगा। लेकिन बताइए, ज़फ़रयाब मुझसे इतना शत्रुतापूर्ण क्यों है?”
“खैर, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। वह अपने दिवंगत पिता, धनी और समृद्ध वाल्टर रेनहार्ड्ट सोम्ब्रे के इकलौते बेटे हैं। लेकिन उन्हें अपने पिता की समृद्ध विरासत से काफी हद तक वंचित रखा गया है। आपको याद होगा कि अपने पिता के निधन के तुरंत बाद वह कोर और सरधना का कार्यभार संभालने के लिए बहुत उत्सुक थे। उन्हें ठेस पहुंची है और वह उस संपत्ति को हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं जो उनके अनुसार कानूनी रूप से उनकी होनी चाहिए।” लेकिन वह किसी भी ज़िम्मेदारी भरे पद को संभालने के लिए पूरी तरह अयोग्य थे। वैसे भी, सम्राट अब जागीर किसी और को नहीं देंगे और रखरखाव के साधनों के बिना यह जागीर भी बिखर जाएगी। और फिर, मेरे अनुरोध पर ही सम्राट ने ज़फ़रयाब को बादशाहपुर झरशा की जागीर दी और उन्हें नवाब की उपाधि प्रदान की, हालांकि योग्य नवाब उस छोटी सी जागीर का भी प्रबंधन नहीं कर सके। मुझे उनकी जागीर की भी देखभाल करनी पड़ी। मैंने उनकी जागीर में खेती में सुधार किया है और राजस्व बढ़ाया है।
“मैं फरज़ो को जानता हूँ, लेकिन अपने सौतेले बेटे के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना बेहतर होता। आप उसकी पत्नी जूलियाना, उनकी बेटी जूलिया ऐन और उसकी माँ को अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित कर सकते थे।”
मैंने इस बारे में सोचा था, लेकिन मुझे उसकी वफादारी पर भरोसा नहीं था। मुझे लगा कि वह मेरे खिलाफ साजिश रच सकता है। खैर, अगर मुझे मेरी जागीर वापस मिल जाती है, तो मैं ज़फ़रयाब और उसके परिवार को अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित करूंगा और उनकी देखभाल करूंगा।
जीवन में आई असफलताओं ने बेगम को गंभीर और अधिक बुद्धिमान बना दिया था।

बचाव

कुलबादन को इस बात की राहत मिली कि फरज़ाना उन स्व-निर्मित बंधनों से मुक्त हो गई थी जो
उसकी नासमझी भरी शादी ने उसे इस स्थिति में डाल दिया था। उसे शक था कि फरज़ाना ने अपने फ्रांसीसी पति से छुटकारा पाने के लिए इस अनूठे नाटक की योजना बनाई थी। जॉर्ज थॉमस को पूरा यकीन था कि बेगम ने अपने पति के बोझ से मुक्ति पाने के लिए हमेशा की तरह चालाकी का सहारा लिया था। फिर भी, जॉर्ज अपने पुराने प्रतिद्वंद्वी के इस घिनौने अंत से खुश था।
गुलबदन की सलाह पर बेगम ने जॉर्ज थॉमस की मदद लेने का फैसला किया। वह घबराई हुई थीं और उन्होंने कई मसौदे तैयार किए। अंत में उन्होंने उन्हें एक पत्र भेजा।
मेरे प्यारे जॉर्ज,
आप मेरी पीड़ा और अपमान की कल्पना कर सकते हैं, जो मुख्यतः मेरी अपनी मूर्खता के कारण है। मैंने अपने मामलों के प्रबंधन में आपकी सलाह नहीं मानी। अब मैं पूरी तरह पराजित हो चुका हूँ। मैंने कोर, अपनी मानसिक शांति और आप जैसे सच्चे और भरोसेमंद मित्र को खो दिया है। मुझे आधिकारिक और निजी जीवन में हमारे बीच के उत्कृष्ट संबंध याद हैं। यहाँ तक कि महाराज ने भी मुझे गोकलगढ़ में आपकी उपलब्धियों की याद दिलाई थी।
इस स्थिति को सुधारने की मेरी एकमात्र आशा आप पर टिकी है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप मुझे इस पीड़ा से मुक्ति दिलाएंगे।
मैं निश्चित रूप से किसी भी सैन्य अभियान के लिए होने वाले सभी खर्चों को वहन करूंगा।
आपकी खुशी और अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना।
आपका स्नेहपूर्वक
ज़ेबुन-निस्सा.
जॉर्ज थॉमस पत्र पढ़कर मुस्कुराए बिना नहीं रह सके और बेगम समरू की मदद करने में जुट गए। उन्होंने अपने मालिक अप्पा खंडी राव से संपर्क किया और उन्हें मदद करने के लिए राजी किया, साथ ही आश्वासन दिया कि बेगम पर्याप्त भुगतान करेंगी।

थॉमस ने ढोल बजाकर यह घोषणा की कि सरधना में बेगम समरू ही सर्वोपरि सत्ता हैं और यदि कोई भी उनकी सत्ता का विरोध करेगा तो उसे कड़ी सजा दी जाएगी। उन्होंने इस मामले पर कोर के अधिकारियों से भी चर्चा की।
“यदि बेगम की मृत्यु उस मानसिक और शारीरिक यातना के कारण हो जाती है, जिसके अधीन आप उन्हें रख रहे हैं, तो सम्राट बहुत जल्द आपके भुगतान के लिए आवंटित भूमि को वापस ले लेंगे और उस अव्यवस्थित और सम्राट के लिए किसी भी काम की न होने वाली सेना को भंग कर देंगे।” उन्होंने उनसे कहा।
उन्होंने सरधना कोर के अपने कुछ पुराने साथियों को राजी किया,
इनाम का वादा करके, सत्ता हथियाने वाले को गिरफ्तार करने और बेगम को बहाल करने का आदेश दिया गया। बेगम को बहाल कर दिया गया, लेकिन एक प्रति-क्रांति हो गई। ज़फ़रयाब ने सीमित सेना के साथ आए थॉमस पर हमला करने का आदेश दिया। लेकिन थॉमस की अतिरिक्त सेना समय रहते पहुँच गई और विद्रोहियों को आत्मसमर्पण करना पड़ा।
बेगम को औपचारिक रूप से बहाल कर दिया गया और थॉमस की देखरेख में निष्ठा की शपथ दिलाई गई। ज़फ़रयाब को लूट लिया गया और बंदी बना लिया गया। उन्हें दिल्ली ले जाया गया और वहाँ कैद कर दिया गया, जहाँ उन्होंने उर्दू कविता लिखने का अपना शौक फिर से शुरू कर दिया। उन्होंने अपने पिता की विरासत में किसी भी प्रकार का हिस्सा पाने की सारी उम्मीदें छोड़ दीं।
अपनी जागीर पुनः प्राप्त करने के शीघ्र ही बेगम ने 'जोआना नोबिलिस सोमर' नाम की मुहर अपना ली। वह अपने प्रथम पति की आभारी थीं, जिन्होंने उन्हें सरधना कोर विरासत में दी थी और इस प्रकार उन्हें वर्तमान सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान की थी। उनके नाम के एक अंश को अपनी मुहर में शामिल करके उनकी स्मृति को अमर रखना उनके लिए स्वाभाविक था।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

विश्वास और समर्थन प्राप्त है। उन्होंने मुझसे यह भी कहा है कि मैं आपको आश्वस्त करूँ कि वे आपके हितों का हमेशा ध्यान रखेंगे।
मुझे पूरा यकीन है कि तुमने ऐसा व्यवहार इसलिए किया क्योंकि जब तुमने सिंधियाओं में शामिल होने से पहले मुझसे विनती की थी, तब मैंने तुम्हें अपनी सेना में शामिल होने की अनुमति नहीं दी थी। तुम्हारा व्यवहार मेरे फैसले को सही साबित करता है। मुझे सचमुच आश्चर्य है कि उन्होंने तुम्हें डी-बोइग्ने जैसे उत्कृष्ट सेनापति का उत्तराधिकारी चुना, जो फ्रांस लौटने के बाद नेपोलियन का करीबी विश्वासपात्र बन गया था। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर तुम अपने देश लौटने पर नेपोलियन से संपर्क करने की कोशिश करोगे, तो वह तुम्हें निकाल देगा।
बेगम की फटकार के बाद, पेरोन पूरी तरह से हतोत्साहित और खुद को बहुत मूर्ख महसूस करते हुए वहां से चले गए।

हरना

गुलबदन ने अब नूरो की शादी जॉर्ज से कराने की अपनी योजना पर आगे बढ़ना शुरू कर दिया।
थॉमस। वह चाहती थी कि शादी पहले हो जाती लेकिन
बेगम की ले वासोल्ट से शादी के बाद जो विपत्ति आई, उसने उसकी सारी योजनाओं को तहस-नहस कर दिया था।
उसने थॉमस को जल्द से जल्द मिलने का संदेश भेजा। वह मराठा सरदार की ओर से हरियाणा में अपने सैन्य अभियान में व्यस्त था, इसलिए वह कुछ महीनों बाद ही आ सका। जब उसने उसका प्रस्ताव सुना, तो उसने कहा,
“मैं बेहद प्रसन्न और सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। मुझे पता चला है कि वह स्वयं बेगम समरू की बेटी हैं, लेकिन उनका पालन-पोषण आपने किया है।”
मैं इस पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता। लेकिन अगर आप उससे शादी करने के लिए राजी हो जाते हैं, तो आप खुद को बेगम का रिश्तेदार नहीं कहेंगे।
“मैं बेगम पर किसी भी तरह का कोई दावा किए बिना, अपना और अपने परिवार का ख्याल रखने में पूरी तरह सक्षम हूँ। वैसे, क्या नूरो को अपने अतीत के इस हिस्से के बारे में पता है?”
मुझे इस पर बहुत संदेह है।
इसके कुछ समय बाद ही, थॉमस ने एक निजी समारोह में ईसाई रीति-रिवाजों के अनुसार नूरो से शादी कर ली। बेगम समरू इस समारोह में शामिल नहीं हुईं। थॉमस अपनी नवविवाहित पत्नी को लेकर जॉर्जगढ़ किले में गया, जिसका निर्माण उसने अपने सैन्य अभियानों को सुगम बनाने के लिए करवाया था। किले की रक्षा के लिए एक शक्तिशाली सैन्य टुकड़ी तैनात थी। नूरो रेगिस्तानी इलाके और देश की शुष्क स्थिति को देखकर आश्चर्यचकित रह गया और उसे लगा कि सरधना कहीं बेहतर जगह है।
उन्होंने फारसी में एक-दूसरे से बात की। थॉमस ने नूरो को समझाया कि वह अपना एक स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहता है।
“क्या यह बहुत महत्वाकांक्षी होना नहीं है?” नूरो संशय में थी।
लेकिन थॉमस अपने मन में पूरी तरह आश्वस्त था।

“हरियाणा की भूमि ने अनेक वर्षों तक किसी स्वामी को स्वीकार नहीं किया। इस क्षेत्र की वर्तमान अशांत स्थिति किसी भी दृढ़ निश्चयी सैनिक को इस देश पर कब्जा करने का सर्वोत्तम अवसर प्रदान करती है। परन्तु मेरी दृष्टि केवल अपनी रियासत स्थापित करने तक ही सीमित नहीं है। मैं पंजाब को जीतने और अंततः अपने राजा और अपने देश के लिए अटक पर ब्रिटिश ध्वज फहराने का सपना देखता हूँ।”
मुझे लगता है कि यह एक अवास्तविक सपना है।
उन्होंने अपनी बात को और स्पष्ट करने की कोशिश की।
“हिंदुस्तान में भारतीय सरदारों की सेवा शुरू करने के बाद से मेरा अनुभव काफी निराशाजनक रहा है। पहले तो मैं बेगम समरू के साथ जुड़ा। मैं पूरी तरह से उनके प्रति समर्पित था। यहां से कुछ ही दूरी पर स्थित गोकलगढ़ में जब मैंने शाह आलम को एक बेहद मुश्किल स्थिति से निकाला, तो वे भी मेरे आभारी थे। उस घटना के बाद सम्राट के बीच बेगम का रुतबा काफी बढ़ गया। फिर भी, ध्यान रहे, ले वासोल्ट से शादी से पहले उन्होंने मुझे सरधना से जबरदस्ती निकालने की कोशिश की। जब उनके सौतेले बेटे ने उनकी सेना में विद्रोह भड़काया और उन्हें बंदी बना लिया, तब मैंने उन्हें बचाया। दरअसल, मैंने खुद उन्हें सरधना में फिर से पद पर बिठाया।”
"कृतज्ञता की इस कमी को देखकर मैं वास्तव में आश्चर्यचकित हूं।"
“फिर मैं अप्पा खंडी राव के साथ जुड़ गया। उन्होंने मुझे मेवात क्षेत्र का वह हिस्सा कम करने को कहा जहाँ गाँव वाले उन्हें अपना बकाया नहीं चुका रहे थे। मैंने उन्हें काबू में किया और उन्होंने सारा बकाया चुका दिया। कुछ समय बाद अप्पा के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। उनकी जान खतरे में थी और उन्होंने मदद के लिए मुझे बेचैनी भरे संदेश भेजे। भीषण बारिश के बावजूद मैं उनकी मदद के लिए तुरंत पहुँचा और अप्पा और उनके परिवार को सुरक्षित स्थान पर ले आया। उन्होंने मुझे अपना बेटा कहा और जागीर के रूप में कुछ अतिरिक्त क्षेत्र दे दिया। उन्होंने मेरी सेना के लिए अतिरिक्त सैनिक भी मुहैया कराए। फिर भी, वे मेरी सैन्य सफलता से ईर्ष्या करने लगे और मेरे खिलाफ साजिश रचने लगे।”
मुझे कभी पता नहीं था कि लोग इतने क्रूर हो सकते हैं।
“आपने अभी पूरी बात नहीं सुनी है। कुछ समय बाद ही अप्पा की मृत्यु हो गई और मैंने बड़ी मूर्खता से अप्पा के पुत्र वामन राव के यहाँ नौकरी स्वीकार कर

ली, जो उनके बाद मुखिया बना। इस व्यक्ति में सामान्य समझ की कमी थी और वह मेरी शक्ति से भयभीत था। उसने सिंधिया सेनापति पेरोन के साथ मिलकर मुझे नष्ट करने की साजिश रची। बड़ी मुश्किल से मैंने अपने शत्रुओं की सेना को भेदकर उत्तर में स्थित अपने किले हांसी तक पहुँच पाया। उसके बाद मैंने अपनी स्थिति मजबूत कर ली, जिससे मेरे विरोधी मुझे परेशान करने से हिचकिचाने लगे। मैंने अपने शत्रुओं को लूटकर खूब धन कमाया है। इन सभी भयानक अनुभवों के बाद एक स्वतंत्र रियासत की चाहत रखने के लिए क्या आप मुझे दोषी ठहरा सकते हैं?”
नूरो चुप रही। वह थॉमस की भावनाओं को समझती थी। धीरे-धीरे, अपने सैनिकों की अपने कमांडर के प्रति निष्ठा देखकर वह अपने पति की प्रबल प्रशंसक बन गई। उनमें से कई ने उससे थॉमस की अद्वितीय वीरता और सैन्य कौशल के बारे में बात की। उसने निष्कर्ष निकाला कि उसका पति जन्मजात नेता था।
थॉमस अपनी पत्नी को हांसी ले गया, जिसे उसने अपनी राजधानी बनाया था। किला एक ऊँचाई पर स्थित था और देखने में बेहद प्रभावशाली और अभेद्य माना जाता था। किले के पास पहुँचते ही थॉमस ने नूरो को बताया कि यह किला उसे उस छोटे राजा के विरुद्ध एक दृढ़ संघर्ष के बाद मिला था, जो पहले इसका स्वामी था। उसने अब इसकी मरम्मत और कुछ बदलाव करवा लिए थे।
नूरो को उमटी तालाब के किनारे स्थित बंगला बहुत पसंद आया। अब यही उसका घर था। सुरक्षा के लिए बंगले के चारों ओर एक किला बना हुआ था। नूरो ने अपने बंगले की तुलना सरधना स्थित बेगम के घर से की, जो उसे हरे-भरे लॉन और बगीचे के साथ कहीं अधिक सुंदर लगा। हांसी रेगिस्तान के बीचोंबीच स्थित था, जहाँ पानी की उपलब्धता सीमित थी।
थॉमस नूरो को किले का पूरा दौरा कराने ले गया। उसने उसे वह टकसाल दिखाई जहाँ वह अपने सिक्के ढालता था। यह देखकर नूरो बहुत हैरान हुई – वह सोच भी नहीं सकती थी कि सरदार अपने सिक्के खुद ढाल सकते हैं। थॉमस ने उसे अपनी फैक्ट्रियाँ भी दिखाईं, जहाँ वह अपनी तोपें, बंदूकें और मस्कट बनाता था। वह अपना बारूद और युद्ध सामग्री भी खुद तैयार करता था। नूरो को यह स्पष्ट हो गया कि थॉमस ने अपनी संपत्ति को स्थायी रूप से अपने पास रखने के लिए हर संभव प्रयास किया था।
थॉमस ने उसे हांसी के पूर्व स्वामी, उस तुच्छ राजा के बारे में एक दिलचस्प कहानी सुनाई। कामुकता और विलासिता के प्रति उसका जुनून असीम था।

एक बार वह दिल्ली में एक मुगल राजकुमार द्वारा आयोजित एक भव्य भोज में उपस्थित था। वह राजकुमार की पत्नी की दासी, एक युवा और सुंदर नर्तकी पर बुरी तरह मोहित हो गया। भोज समाप्त होते ही हांसी के राजा ने नर्तकी को पकड़ लिया और उसे हांसी ले गया। जब दिल्ली से कुछ सैनिकों ने उसका पीछा किया, तो उसने खुद को अपने घर में बंद कर लिया। सैनिकों ने घर को घेर लिया और प्रतिरोध को पूरी तरह से विफल कर दिया। लड़की को सौंपने के बजाय, उसने उसे चांदी के सिक्कों के बदले खरीदने की पेशकश की। सौदा तय हो गया, तराजू लाया गया और युवती को चांदी के रुपयों के मुकाबले तौला गया। अंत में, अपहरणकर्ता ने अपना इनाम हासिल कर लिया।
“यह आश्चर्य की बात नहीं है कि ऐसा व्यक्ति आपके विरुद्ध अपनी संपत्ति की रक्षा नहीं कर सका।” नूरो को गर्व महसूस हुआ।
नूरो ने एक संतुष्ट वैवाहिक जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया, हालांकि उसके पति के बार-बार होने वाले सैन्य अभियानों से वह तब तक व्यथित रहती थी, जब तक कि वह सुरक्षित घर नहीं लौट आया।

गुलबदन

गुलबदन बूढ़ी हो रही थी और बुढ़ापे की बीमारियां उसे सताने लगी थीं।
उन्हें सांस लेने में तकलीफ होने लगी थी। बेगम बहुत चिंतित थीं।
गुलबदन की सेहत के बारे में। जल्द ही गुलबदन बिस्तर पर पड़ गईं, और बेगम समय-समय पर उनके साथ बैठकर उनका साथ देती थीं।
एक दिन गुलबदन ने कहा,
“फरज़ो! मुझे लगता है कि मेरे दिन गिने-चुने रह गए हैं। मैं तुम्हें अपने बारे में कुछ बताना चाहती हूँ। नूरबाई ने मरने से पहले मुझे बताया था कि मैं सचमुच एक ब्राह्मण की बेटी हूँ। जिस बूढ़े मुल्ला ने मुझे उठाया और नूरबाई के घर ले गया, वह मेरे पिता को अच्छी तरह जानता था। उसने नूरबाई को बताया कि मेरे पिता एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे, जिन्हें उस समय के मुगल सम्राट मुहम्मद शाह का संरक्षण प्राप्त था। मुगल दरबार के कई उच्च अधिकारी भी उनसे सलाह लेते थे। मुल्ला ने मेरे पिता को भाले से मारते हुए और मेरी माँ को बंदी बनाते हुए देखा था।”
“हाय अल्लाह!” बेगम ने सहज भाव से कहा।
“उन्हें एहसास हुआ कि मुझे बचाने की एकमात्र उम्मीद यही थी कि मुझे तुरंत नूर बाई की हवेली ले जाया जाए, क्योंकि वह पास ही थी। उन्होंने नूर बाई से कहा कि वह मुझे मुसलमान के रूप में पाल-पोस सकती हैं या जब हालात सामान्य हो जाएं तो मुझे किसी ब्राह्मण परिवार को सौंप सकती हैं। लेकिन नूर बाई को मैं बहुत सुंदर लगी और उन्होंने मुझे अपने पास रखने का फैसला किया। उन्होंने मुझे नृत्य और संगीत का प्रशिक्षण दिया। एक कोठावाली होने के नाते, मेरा धर्म मायने नहीं रखता था।”
गुलबदन ने आगे बोलने से पहले एक पल के लिए विराम लिया।
“फरज़ो, लेकिन अब मैं तुमसे निवेदन करता हूँ कि जब मेरी मृत्यु हो जाए तो मेरे शरीर को दफ़नाना मत। उसका अंतिम संस्कार करके मेरी अस्थियों को हरिद्वार में गंगा में विसर्जित कर देना। मुझे लगता है इससे मेरे पिता की आत्मा को शांति मिलेगी।”
“तुम इतनी बुरी बातें क्यों कहते हो? मुझे पूरा यकीन है कि तुम लंबी उम्र जिओगे। मैं तुम्हारे अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करूंगा।”

“मैं आपसे एक और बात कहना चाहता हूँ। ज़फ़रयाब से सुलह कर लीजिए, वह इतना समझदार नहीं है और आसानी से बहक जाता है। लेकिन अब जब जॉर्ज की बदौलत आप फिर से सत्ता में मज़बूती से लौट आए हैं, तो आप उसे माफ़ कर सकते हैं। मैं ज़फ़रयाब से मिलने के लिए उत्सुक हूँ, क्या आप कृपया उसे बुलवा सकते हैं?” बेगम ने ज़फ़रयाब को संदेश भेजा कि गुलबदन की तबीयत ठीक नहीं है और उसने उनसे मिलने की इच्छा जताई है। उन्होंने ज़फ़रयाब को आश्वस्त किया कि सरधना में उन्हें कोई खतरा नहीं है।
जब ज़फ़रयाब ने गुलबदन को देखा, तो उसकी हालत बहुत खराब थी। उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी और उसका दम घुटने लगा था। कुछ देर बाद तिब्बी की दवाइयों से उसकी हालत सुधर गई। उसने ज़फ़रयाब को अपने पास बुलाया।
“मैं आपके पिता वाल्टर रेनहार्ड्ट को अच्छी तरह जानता था। मैं आपका शुभचिंतक हूँ, इसलिए मुझे लगता है कि एक महत्वपूर्ण मामले पर आपको सलाह देने का मुझे अधिकार है। कृपया सरधना कोर में हुए विद्रोह में अपनी भूमिका के लिए बेगम से क्षमा मांग लें। मुझे पूरा विश्वास है कि वह इतनी उदार होंगी कि आपको क्षमा कर देंगी। यह सभी के हित में होगा।”
ज़फ़रयाब बेगम के पास गया, अपना सिर उनके चरणों में रख दिया और पश्चाताप भरे स्वर में उनसे क्षमा मांगी।
उसने उसका चेहरा ऊपर उठाया और कहा:
“मैं तुम्हारी अम्मा हूँ, अच्छा हुआ कि तुम यहाँ आ गए। अब तुम्हें अपने परिवार के साथ यहीं रहना चाहिए। बड़ी बीबी को भी साथ ले आओ। हम तुम्हारे आराम से रहने का पूरा इंतजाम कर देंगे। तुम उर्दू कविता लिखने के अपने शौक को पूरा कर सकते हो।”
ज़फ़रयाब गुलबदन को धन्यवाद देने गया, यह समझते हुए कि उन्हीं की मध्यस्थता से सुलह इतनी आसान हो पाई थी।
ज़फ़रयाब के दिल्ली चले जाने के बाद, गुलबदन ने बेगम से कहा,
मुझे ज़फ़रयाब की आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी नहीं है। अगर उन्हें सहायता की आवश्यकता हो, तो कृपया उनकी मदद करें।
“वाल्टर ने बारी बीबी और उनके बेटे ज़फ़रयाब के लिए पर्याप्त व्यवस्था कर रखी थी। मैं भी समय-समय पर उनकी मदद करता रहा हूँ।”
हालांकि बैरी बीबी ने सरधना में स्थानांतरित होने का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया, लेकिन उन्होंने धन्यवाद दिया।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जॉन

थॉमस अक्सर अपनी सैन्य स्थिति को मजबूत करने के लिए सैन्य अभियानों पर बाहर रहते थे।
हरियाणा के भीतर स्थित क्षेत्र में और अपने खजाने में नियमित भुगतान सुनिश्चित करने के लिए।
वह भुगतान न करने वालों के प्रति बहुत ही कठोर था, और इसलिए उसका खजाना हमेशा भरा रहता था।
जब वह युद्ध की चिंताओं से मुक्त हो जाते थे, तो अपनी सेना को पर्याप्त आराम देते थे। आराम करने के लिए, वह हांसी के पड़ोस में शिकार पर जाते थे। नूरो भी उनके साथ जाती थीं, दोनों शानदार घोड़ों पर सवार होते थे। हांसी के आसपास की झाड़ियों में नीलगाय, काले हिरण, खरगोश, तीतर, जंगली पक्षी और जल स्रोतों के पास बत्तखें बहुतायत में पाई जाती थीं। थॉमस कभी नीलगाय का वध नहीं करते थे, क्योंकि उनके कुछ सैनिक इसे गायों के समान मानते थे, जिन्हें वे पवित्र मानते थे। उन्हें तीतर और बत्तखें बड़े चाव से खाती थीं। कभी- कभी, वह काले हिरणों का शिकार करते थे और उनका मांस संरक्षित करवाते थे। नूरो को भी शिकार बहुत पसंद था।
उन्होंने नूरो के लिए दिल्ली में एक घर बनवाया। वे हमेशा सैन्य दौरों पर बाहर रहते थे; उनका जीवन कभी सुरक्षित नहीं था। वे नहीं चाहते थे कि अगर उन पर कोई विपत्ति आ पड़े तो उनकी पत्नी को कष्ट सहना पड़े।
फिर एक दिन नूरो ने थॉमस को खुशखबरी दी – वह गर्भवती थी। थॉमस की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा, और वह नूरो के स्वास्थ्य और अपने बच्चे को लेकर चिंतित होने लगा। क्या वह सब कुछ अच्छे से संभाल पाएगा?
इसी बीच, मराठों को थॉमस की महत्वाकांक्षाओं को लेकर चिंता होने लगी और उन्होंने उसे वश में करने का फैसला किया। सिंधिया के सेनापति पेरोन ने थॉमस से संपर्क किया और उन्हें सिंधिया के अधीन उदार शर्तों पर नौकरी स्वीकार करने की सलाह दी। थॉमस एक स्वतंत्र कमान चाहते थे, लेकिन पेरोन ने जोर दिया कि थॉमस को उनके अधीन ही काम करना होगा। थॉमस ने इनकार कर दिया, और पेरोन ने उन्हें चेतावनी दी कि उन्हें सिंधिया और उनके सहयोगियों की

संयुक्त सेनाओं का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि सिंधिया हिंदुस्तान में किसी अन्य प्रतिद्वंद्वी शक्ति को बर्दाश्त नहीं करना चाहते थे।
थॉमस को यह एहसास हो गया था कि हांसी में स्थित उनके शस्त्र और गोला-बारूद कारखाने के बारे में जानकर मराठा चिंतित हो गए थे। वे सिक्कों की ढलाई के लिए उनके टकसाल को भी पसंद नहीं करते थे। उन्हें एक निरंतर सैन्य अभियान के लिए तैयार रहना था।
उन्होंने नूरो को लंबे समय तक चलने वाले अभियान की संभावना के बारे में बताया।
“क्या आप सरधना जाना चाहेंगे? तब मुझे पता चल जाएगा कि आप सुरक्षित हाथों में हैं।”
नूरो गुलबदन और बेगम से मिलने के लिए बेताब थी, लेकिन फिर भी वह अपने पति को अकेले छोड़कर सुरक्षित स्थान पर भागने से खुश नहीं थी। लेकिन थॉमस अपनी बात पर अड़ा रहा। उसने उसे पचास हजार रुपये दिए और सलाह दी कि वह अपने साथ सारे गहने, अन्य कीमती सामान, निजी कपड़े और शॉल लेकर सरधना चली जाए।
जब नूरो अपने अंगरक्षकों के एक चुस्त-दुरुस्त दल के साथ सरधना पहुंची, तो वहां काफी हलचल मच गई। वह सबसे पहले बेगम से मिलने गई, जिन्होंने उसे गले लगाया और पूछताछ की,
"क्या तुम खुश हो?"
"हाँ।"
“क्या वह आपके साथ अच्छा व्यवहार करता है? क्या आपकी देखभाल के लिए पर्याप्त नौकर हैं?”
“हाँ! हाँ! खाला।”
नहीं, आपको मुझे अम्मा ही कहना होगा।
बेगम समरू ने नूरो के गालों पर चुंबन किया और नूरो खुशी के आंसू रोने लगी। नूरो गुलबदन को देखने के लिए दौड़ी और झट से बोल पड़ी।
बेगम ने मुझसे कहा है कि मैं उन्हें अम्मा कहकर बुलाऊं।
“नोरो, यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। लेकिन बताओ, जॉर्ज थॉमस तुम्हें कैसे लगे?”
“वह मुझसे प्यार करता है और मेरी परवाह करता है, मैं और क्या मांग सकती हूँ? आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि उसके निजी अनुयायी और चुने हुए सैनिक

उसके प्रति कितने समर्पित हैं, जो उसके चरित्र को ही साबित करता है। वह स्पष्टवादी, उदार और मानवीय है।”
सिंधिया की सेना ने जॉर्जगढ़ स्थित थॉमस के किले पर हमला किया और उसे किला खाली करने पर मजबूर कर दिया। भारी जानमाल के नुकसान के बाद ही वह हांसी भागने में सफल हो सका। जॉर्जगढ़ की लड़ाई के बाद हथियार डाल चुके थॉमस के सैनिकों को मराठों ने सेवा की पेशकश की। लेकिन वे थॉमस से इतने जुड़े हुए थे कि उन्होंने बिना किसी अपवाद के शोक में अपने कपड़े फाड़ दिए और कहा, "हम थॉमस के खिलाफ लड़ने के बजाय भिखारी बनना पसंद करेंगे।"
सिंधिया ने थॉमस का पीछा किया और हांसी स्थित उसकी राजधानी को घेर लिया। सिख सेना भी मराठों के साथ मिल गई। थॉमस का मनोबल गिर गया और वह हताश हो गया। आगे और रक्तपात से बचने के लिए, फ्रांसीसी कमांडर ने थॉमस के पास एक दूत भेजा ताकि शांति समझौता किया जा सके। समझौता हुआ कि थॉमस को उसकी सभी निजी संपत्ति, जिसमें नकदी भी शामिल थी, के साथ रिहा कर दिया जाएगा, बशर्ते वह मराठा क्षेत्र छोड़कर कंपनी के क्षेत्र में चला जाए। जॉर्ज ने ये शर्तें मान लीं, और फ्रांसीसी अधिकारी बोरक्वीन, जो सैनिक बनने से पहले एक रसोइया था, ने उसे शाम के खाने पर आमंत्रित किया। वहाँ खूब मौज-मस्ती और शराब का सेवन चल रहा था, तभी अचानक बोरक्वीन ने पुकारा,
"आइए जनरल पेरॉन की सेना की सफलता के लिए जाम उठाएं।"
थॉमस बेहद परेशान हो गया और उसने अपना हाथ अपनी तलवार पर रख लिया।
"मेरी हार का कारण तुम नहीं, बल्कि मेरा अपना दुर्भाग्य है।"
फिर अपनी तलवार निकालते हुए थॉमस चिल्लाया,
"एक आयरिश तलवार आज भी सौ फ्रांसीसियों के लिए पर्याप्त है।"
बोरक्वन को थॉमस को मनाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। थॉमस कंपनी के इलाके में जाने के लिए तो राजी हो गया, लेकिन आगे बढ़ने से पहले वह सरधना में अपनी पत्नी से मिलना चाहता था। सिंधिया बटालियन ने उसे सरधना तक सुरक्षा दी।
जॉर्जगढ़ में हुई लड़ाई, नरसंहार और हांसी में हुई हार की खबरें अब सभी को पता थीं।
जब नूरो ने जॉर्ज को देखा तो वह पूरी तरह से टूट चुका था।
मेरे सारे सपने हवा में गायब हो गए हैं।
"अब क्या करें?"

मैं अपने देश वापस जाना चाहता हूँ। तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।
"मुझे आपके साथ जाना बहुत अच्छा लगेगा, लेकिन मेरी वर्तमान स्थिति में, मैं ज़मीन या समुद्र मार्ग से यात्रा करने की स्थिति में नहीं हूँ।" “मेरे आत्मसमर्पण की शर्तों के अनुसार मुझे सिंधिया देश छोड़ना होगा। मैं कंपनी के क्षेत्र में कहीं तुम्हारा और हमारे बच्चे का इंतज़ार करूँगा। शायद मैं बनारस में रुक जाऊँ जहाँ मेरा एक मित्र है, बशर्ते अंग्रेज़ मुझे अनुमति दे दें।”
मुझे आपके साथ जुड़ने की बहुत इच्छा है; जैसे ही मैं इस कठिन यात्रा को करने के लिए पूरी तरह से स्वस्थ हो जाऊंगा, मैं आपको सूचित कर दूंगा।
दिन बीतते गए। नूरो के घर एक प्यारा सा बेटा पैदा हुआ। सभी ने उसे बेटे के जन्म पर बधाई दी।
“नूरो भाग्यशाली है, उसका बेटा उसके और जॉर्ज थॉमस के लिए बहुत बड़ा सहारा बनेगा।” गुलबदन ने बेगम से कहा।
“मुझे नूरो के जन्म पर किन्नर की कही बात याद आ रही है। उसने कहा था कि मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे बेटी हुई है। उसने कहा था कि बेटा किसी काम का नहीं होता, क्योंकि हमें उसका पालन-पोषण करना पड़ता, जबकि बेटी नर्तकी और दरबारी बनकर घर में धन लाती। समय कितना बदल गया है।”
बेगम ने आह भरी।
“वाल्टर मुझसे एक बेटा पैदा करने के लिए बहुत उत्सुक थे। लेकिन ऐसा नहीं हो सका।”
लेकिन उसके पास ज़फ़रयाब था।
मैं साफ-साफ कहूंगा। वाल्टर को ज़फ़रयाब कभी पसंद नहीं था क्योंकि वह मंदबुद्धि था। वास्तव में, उसे इतना कम महत्व दिया जाता था कि उसके पिता की मृत्यु के बाद उसे नाममात्र का मुखिया भी नहीं माना गया।
थॉमस को अपने बच्चे और उसकी माँ को देखने का सौभाग्य नहीं मिला। बनारस पहुँचने के कुछ ही समय बाद मलेरिया से उनकी मृत्यु हो गई (1801 ईस्वी)। एक ईसाई रीति-रिवाज के अनुसार, नूरो के बच्चे का नाम जॉन रखा गया। बेगम ने फैसला किया कि लड़का बड़ा होने तक नूरो उनके साथ ही रहेगी।

जूलिया

इसके कुछ ही समय बाद समरू बेगम को एक और दुखद खबर मिली। उनके सौतेले बेटे ज़फ़रयाब का निधन (1802 ईस्वी) अचानक हो गया, संभवतः दिल का दौरा पड़ने से। दिल्ली में हमला।
अपने निजी संबंधों में कभी-कभार आने वाली परेशानियों के बावजूद, बेगम ज़फ़रयाब को बहुत प्यार करती थीं। वह उनके सबसे करीबी रिश्तेदार थे और जब भी वह उनसे मिलतीं, उन्हें अपने पहले पति वाल्टर की याद आ जाती थी। शोक की इस घड़ी में बैरी बीबी के साथ रहने और उन्हें अपना निरंतर समर्थन देने के लिए वह तुरंत दिल्ली चली गईं। वह बैरी बीबी को ज़फ़रयाब की विधवा जूलियाना और उनकी बारह वर्षीय बेटी जूलिया ऐन के साथ सरधना में बसने के लिए मनाने में सफल रहीं।
जूलिया हंसमुख, चुलबुली और जीवन के प्रति उत्साही थी। उसने सरधना में रौनक और खुशी भर दी। वह जॉन से बहुत प्यार करती थी, जो उस समय मुश्किल से एक साल का था, और उसे घर में इधर-उधर घुमाती और लॉन में उसके साथ खेलती रहती थी। नूरो को साथ पाकर राहत मिली। उसने जूलिया को शतरंज खेलना सिखाया और दोनों घंटों खेल में मग्न रहती थीं। नूरो अंग्रेजी सीख रही थी और जूलिया के साथ अंग्रेजी बोलने का अभ्यास करती थी। दोनों ग्रामीण इलाकों में टट्टू की सवारी करने जाती थीं; जूलिया शुरू में थोड़ी झिझकती थी, लेकिन बाद में उसमें आत्मविश्वास आ गया। उसे टट्टू की सवारी इतनी पसंद आने लगी कि वह बीच-बीच में नूरो को मनाती रहती थी, भले ही नूरो उसके साथ जाना न चाहती हो। जूलिया को प्रकृति से प्यार था। उसे पता चला कि यमुना में नौका विहार किया जा सकता है। उसने नूरो को नौका विहार के लिए राजी किया। उसने बेगम से अनुमति मांगी, जिन्होंने अपने एक कर्मचारी को उनके साथ भेज दिया। नदी के पूर्वी किनारे के पास, एक मोड़ पर एक सुंदर सा मंदिर था, जिसके किनारे तक जाने के लिए सीढ़ियों की एक श्रृंखला बनी हुई थी, जिसे घाट कहा जाता था। बेगम के सेवक ने एक नाविक को बुलाया। उसके पास चप्पू और एक लंबा डंडा था। पानी साफ तो नहीं था, लेकिन एकदम शांत था, उसकी सतह धुंधले शीशे जैसी थी।
नाविक नदी के मध्य की ओर धारा के विपरीत दिशा में नाव चलाने लगा। वहाँ उसने

नाव को मंदिर के शिखर के ठीक सामने, मध्य में खड़ा किया और डंडे को पानी में तब तक डुबोया जब तक वह तल से न टकरा गया और नाव स्थिर हो गई।
नाविक ने कहा:
“इस मंदिर का निर्माण मराठों ने करवाया था। कुछ क्षण शांत बैठिए और इसे ध्यानपूर्वक देखिए।”
बादलों से घिरी हुई मंदिर की मीनार आकाश में बुलंद थी। पानी में मंदिर का प्रतिबिंब, जिसमें वह सुंदर, पतली इमारत पानी में उल्टी दिखाई दे रही थी, मीनार और बादलों सहित, एक अलौकिक दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। ऐसा लग रहा था मानो जमीन के ऊपर स्थित मंदिर पानी में मौजूद वस्तु का दर्पण प्रतिबिंब हो।
जूलिया बेहद रोमांचित थी। घर पहुँचते ही वह बेगम के पास दौड़ी और बोली: “दादी, मैंने आज कुछ ऐसा देखा है, जो मुझे यकीन है कि आपने कभी नहीं देखा होगा।”
बेगम मुस्कुराईं।
"डार्लिंग, तुम्हें मुझे बताना होगा कि तुमने क्या देखा।"
मैंने दो मंदिर देखे हैं, एक जमीन पर और दूसरा नदी में।
"तो आपने पानी में प्रतिबिंब देख लिया है।"
"लेकिन यह बहुत ही जादुई था, मैं बहुत खुश हूं।"
बेगम समरू ने लड़की को स्नेहपूर्वक गले लगाया।
बच्चों के आने से विशाल हवेली का कुछ शांत वातावरण अचानक शोरगुल भरा और खुशनुमा हो गया। चारों ओर हंसी गूंज रही थी; नन्हे जॉन की प्यारी-प्यारी बातों से सबका मन प्रसन्न हो गया। बेगम समरू को शांति और सुकून का अनुभव हुआ, जो एक सुखी और संतुष्ट परिवार अपने साथ लाता है।
बेगम ने गौर किया कि जूलिया कई मायनों में वाल्टर से मिलती-जुलती थी। उसके बोलने का तरीका, उसके हाव-भाव सब वाल्टर जैसे ही थे। स्वाभाविक रूप से बेगम को जूलिया से बहुत लगाव हो गया और उन्होंने उसकी परवरिश में विशेष ध्यान रखा। कभी-कभी जब उनकी जागीर के काम से उन्हें राजशाही के अधिकारियों से मिलना होता था, तो बेगम उसे अपने साथ दिल्ली ले जाती थीं।
बादशाहपुर झरसा, जिसे बेगम की सिफारिश पर सम्राट ने जफरयाब को जागीर के रूप में दिया था, जागीर पाने वाले की मृत्यु के बाद राज्य के अधीन हो जाना

था। लेकिन बेगम इस व्यवस्था को चुनौती देने के लिए दृढ़ थीं। उन्होंने सम्राट के समक्ष एक याचिका प्रस्तुत की; उन्होंने निवेदन किया,
'यदि सम्राट द्वारा जागीर पर कब्जा कर लिया जाता है तो मूल जागीरदार के परिवार को गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा, इसलिए प्रार्थना की जाती है कि संपत्ति मृतक की सौतेली माँ बेगम समरू के नाम पर स्थानांतरित कर दी जाए।'
उन्होंने स्पष्ट किया कि वह जाफरयाब के परिवार, जिसमें उनकी मां भी शामिल हैं, के लाभ के लिए संपत्ति का प्रशासन और प्रबंधन उसी तरह करेंगी जैसे वह मूल लाभार्थी के जीवनकाल में कर रही थीं।
हालांकि कई अधिकारियों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया, फिर भी सम्राट ने उनकी विनती मान ली।

झील

कुछ दिनों की शांति के बाद एक बार फिर से नई मुसीबतें पनपने लगी थीं। बेगम समरू अपने सबसे अच्छे सलाहकार गुलबदन के पास गई।
“मैं एक अत्यावश्यक मामले पर आपकी सलाह लेने आया हूँ। महादजी के उत्तराधिकारी दौलत राव के नेतृत्व में मराठा प्रशासन अत्यंत अक्षम है। दौलत एक नौजवान है, जिसे शासन करने से ज़्यादा पतंग उड़ाने में रुचि है। उसने बुरी संगति कर ली है और महादजी की विधवाओं की बात नहीं सुनता। मराठा खजाना खाली होता जा रहा है, क्योंकि उन्हें कोई राजस्व प्राप्त नहीं हो रहा है। मुझे सूचना मिली है कि पानीपत के तीसरे युद्ध के विजेता अहमद शाह दुर्रानी के पुत्र, अफ़गान बादशाह ज़मान शाह, हमारे देश पर आक्रमण करने की योजना बना रहा है। संभवतः बादशाह भी उसका स्वागत करेगा, क्योंकि वह सिंधिया के कुप्रबंधन से तंग आ चुका है। मैं सिंधिया का सहयोगी हूँ, इसलिए मेरी स्थिति जटिल हो गई है, खासकर इसलिए कि मराठा अफ़गानों से युद्ध करने की संभावना मात्र से ही भयभीत हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि मैं अपनी जागीर और अपनी सेना की सुरक्षा के लिए क्या करूँ।”
गुलबदन ने इस बारे में सोचा।
मुझे संदेह है कि ज़मान शाह पंजाब पार कर पाएगा; सिख एक मजबूत बाधा के रूप में काम करेंगे। अब स्थिति उसके पिता के समय से बहुत अलग है। वैसे भी, आपकी बातों से मुझे पूरा यकीन है कि इन घटनाक्रमों का मुख्य लाभ कंपनी की सेना को ही मिलेगा। मुझे लगता है कि हमें अपने हितों की रक्षा के लिए अंग्रेजों के साथ कोई समझौता कर लेना चाहिए।
उस समय, समरू की बटालियनें कंपनी की सेनाओं के खिलाफ लड़ाई में मराठा सेना की सहायता के लिए दक्कन भेजी गई थीं। हालांकि बेगम गुलबदन के पूर्वानुमान से सहमत थीं, लेकिन उन्हें यह स्पष्ट नहीं था कि अंग्रेजों से मित्रता करने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। अंततः, उन्होंने अपने एक विश्वासपात्र मीर मोहम्मद जाफर को बरेली में स्थित कंपनी के एजेंट से संपर्क करने के लिए कहा। संयोगवश, कंपनी भी आने वाले संकट को देखते हुए नए गठबंधन बनाने के लिए उत्सुक थी। कंपनी की सेनाओं का विश्वास जीतने के लिए,

बेगम ने अपनी बटालियनों को दक्कन से वापस बुला लिया और कंपनी के जनरल से मित्रता करने के लिए कदम उठाए।
कुछ समय बाद ही, जनरल पेरोन के नेतृत्व में मराठा सेना और कंपनी की सेना का पटपड़गंज के निर्णायक युद्ध में आमना-सामना हुआ। सिंधिया की सेना ने वीरता और साहस का परिचय दिया, फिर भी उन्हें भारी हार का सामना करना पड़ा और दिल्ली तथा राजा का शासन अंग्रेजों के हाथ में चला गया। (1803 ई.) दिल्ली के युद्ध से पहले, अंग्रेजों को चिंता थी कि मराठा शाह आलम को किसी सुरक्षित स्थान पर ले जा सकते हैं, क्योंकि वह हिंदुस्तान की संप्रभुता का प्रतीक थे। उन्होंने मुगल दरबार के असंतुष्ट तत्वों की मदद से ऐसी स्थिति को रोकने के लिए कदम उठाए थे।
ब्रिटिश सेना की शानदार जीत ने बेगम को वाल्टर की बातें याद दिला दीं। वाल्टर ने उन्हें आगाह किया था कि अंग्रेज उनसे बदला लेने की कोशिश कर सकते हैं क्योंकि वे उन अपराधों के लिए उन्हें दंडित करने में विफल रहे थे, जिनका आरोप उन्होंने उन पर लगाया था। उन्होंने विजयी सेना के कमांडर लॉर्ड लेक से सीधे मिलने का फैसला किया। अपने शाही वस्त्रों से सजी और एक दरबारी के रूप में सीखी अपनी कलाओं से लैस होकर, वह भोजन के तुरंत बाद जनरल के मुख्यालय पहुंचीं और अपनी पालकी में बैठकर स्वागत तम्बू तक गईं। लॉर्ड लेक उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए।
पेय और भोजन का आनंद लेने के बाद, महाराज प्रसन्न थे और अपनी आकर्षक अतिथि पर पूरी तरह मोहित हो गए थे। वे बड़े ही सलीके से उनकी ओर बढ़े और उन्हें बाहों में भरकर उनके होठों पर गर्मजोशी से चुंबन किए, जिससे उनके सेवक और बेगम दोनों ही अचंभित रह गए। समरू बेगम के दिल में हलचल मच गई, लेकिन उन्होंने खुद को संभाला। उन्हें अभी भी बुद्धिमान यूरोपीय पुरुषों के प्रति आकर्षण था!
बेगम भविष्य को लेकर अपनी आशंकाओं से उबर नहीं पाईं और उन्होंने अंग्रेज़ सेनापति के साथ जल्द से जल्द संधि करने का फैसला किया। उन्होंने क्षेत्र के अन्य सरदारों, विशेषकर यमुना के पश्चिम में स्थित सिखों से भी परामर्श करना शुरू कर दिया, जो सभी उनकी आशंकाओं का भरपूर फायदा उठा रहे थे। ‘अंग्रेजों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। अपनी सैन्य स्थिति मजबूत करने के बाद वे अपना असली रंग दिखा देंगे।’

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

उसने रेजिडेंट से मिलने का समय मांगा और उनके लिए काफी मात्रा में उत्तम गुणवत्ता वाला तंबाकू ले गई। जैसे ही वह उनके कार्यालय में दाखिल हुई, वे खड़े हो गए और बड़े उत्साह से बोले:
"महामहिम, आपका हार्दिक स्वागत है।"
उसने उसे तंबाकू का डिब्बा भेंट किया।
"अंग्रेजों की विजय के बाद दिल्ली में पहले रेजिडेंट के रूप में आपकी नियुक्ति पर बधाई।"
“लॉर्ड लेक ने आपके बारे में मुझसे बात की। हमें एक-दूसरे से बहुत सारी बातें करनी होंगी। मुझसे संपर्क में रहना।”
बेगम समरू ओचटरलोनी के साथ अपनी पहली मुलाकात से संतुष्ट थीं और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वह उनके साथ व्यापार कर सकती हैं।
सरधना लौटने पर, उसे पता चला कि उसके डर निराधार थे और वाल्टर्स की मृत्यु से पहले की चिंता सच हो गई थी।
दिल्ली का नियंत्रण अंग्रेजों के हाथों में आने के बाद, गवर्नर-जनरल ने लॉर्ड लेक को निर्देश जारी किए:
बेगम की जागीर को एक उपयुक्त वजीफे में परिवर्तित किया जाए, जिसकी सीमा उसके द्वारा वास्तव में अपनी क्षेत्रीय संपत्तियों से प्राप्त होने वाले मुनाफे के आधार पर निर्धारित की जानी चाहिए।
इन घटनाक्रमों से बेगम को बहुत कष्ट हुआ। उन्होंने इन निर्देशों के विरुद्ध गवर्नर-जनरल से अपील की, जिसके बाद गवर्नर-जनरल ने थोड़ा नरम रुख अपनाया। उन्होंने अपने पूर्व आदेशों में संशोधन किया, लेकिन फिर भी इस बात पर जोर दिया कि बेगम सरधना को खाली कर दें और बदले में उन्हें यमुना नदी के पश्चिम में एक अन्य क्षेत्र दिया जाए। इसके अलावा, उन्हें रेजिडेंट से मिलने की सलाह दी गई।
जब उन्होंने नवंबर 1803 के मध्य में रेजिडेंट से मुलाकात की, तो उन्हें आजीवन पट्टे पर एक वैकल्पिक स्थान की पेशकश की गई। वह अपनी मौजूदा संपत्तियों को बनाए रखने के लिए दृढ़ थीं। उन्होंने ओचटरलोनी को समझाया: “क्या तुम, मेरे भाई, आकर मेरा हाथ पकड़कर मुझे मेरे घर से निकाल दोगे? दुनिया छोटी नहीं है और मैं लंगड़ा भी नहीं हूँ। मैं किसी कोने में बैठ जाऊँगा और एकांत में अपना समय बिताऊँगा।”

“ब्रिटिश सरकार का कोई बुरा इरादा नहीं है। दीर्घकालिक राजनीतिक कारणों से, आपको किसी अन्य, समान रूप से बेहतर स्थान पर स्थानांतरित करना आवश्यक समझा जाता है।”
मैंने इमारतों और आवासों पर लाखों रुपये खर्च किए हैं। मेरे क्षेत्र में लगभग एक हजार बेसहारा और अपंग एवं नेत्रहीन लोग हैं, जिनके लिए मैंने अपने पैसों से घर बनवाए हैं। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि अंग्रेजों के समान आस्था रखने वाले व्यक्ति के साथ इतना कठोर व्यवहार किया जाएगा। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप हमसे मिलने आएं और स्वयं देखें कि सरधना के मेरे अधिकार में आने के बाद पिछले तीस वर्षों में हमने क्या-क्या उपलब्धियां हासिल की हैं।
रेजिडेंट बेगम का निमंत्रण स्वीकार करने के लिए उत्सुक थे, लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि सरकार इस पर कैसी प्रतिक्रिया देगी। उन्होंने कहा: “सरधना की मेरी यात्रा के बारे में हम बाद में देखेंगे। फिलहाल, मैं आपकी टिप्पणियों का सार और आपकी तीव्र भावनाओं को कलकत्ता तक पहुंचा दूंगा। मैं इस विषय पर लॉर्ड लेक से भी बात करूंगा।”
यह मामला एक वर्ष से अधिक समय तक पत्राचार में ही रहा। इसी दौरान सिखों ने सहारनपुर पर आक्रमण कर कलेक्टर गुथरी को बंधक बना लिया। बेगम समरू के सिखों के साथ अच्छे संबंध थे, क्योंकि उन्होंने शाह आलम को दिल्ली में सिखों को कुछ गुरुद्वारे बनाने की अनुमति देने के लिए राजी कर लिया था। बेगम समरू ने गुथरी को छुड़ाने के लिए बातचीत की और उनके बंधकों को पंद्रह हजार रुपये दिए, जो बाद में उन्हें कंपनी से प्राप्त हुए।
लेफ्टिनेंट कर्नल स्टुअर्ट भी सिखों के हाथ लग गए थे। उन्होंने उनकी सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की। इन घटनाओं से कंपनी के अधिकारियों के बीच उनकी प्रतिष्ठा में सुधार हुआ।
बहुत विवाद के बाद, अगस्त 1805 में, दिल्ली के मुगल बादशाह पर नियंत्रण स्थापित करने के दो साल बाद, कंपनी ने समरू बेगम को सरधना की जागीर पर आजीवन पूर्ण अधिकार दे दिया। उन्हें अपनी सेना रखने की अनुमति दी गई, इस शर्त के साथ कि उनकी सेना हिंदुस्तान में ब्रिटिश सेना के लिए उपलब्ध रहेगी।
बेगम को यह बात अच्छी तरह समझ आ गई थी कि ओचटरलोनी ने उनके पक्ष में फैसला दिलाने में बहुत मदद की थी। उन्होंने तुरंत अपना आभार व्यक्त किया।

“इस मामले में आपकी सहायता के लिए मैं आपका आभारी हूं। अब आपको सरधना अवश्य आना चाहिए। इस यात्रा से आप विभिन्न क्षेत्रों में हमारी उपलब्धियों को स्वयं देख सकेंगे।”
समरू बेगम को एहसास हुआ कि ओचटरलोनी की जीवनशैली को देखते हुए, उसे पैसों की कमी जरूर होगी। उसने उचित अवसर मिलने पर उसकी मदद करने की उम्मीद की। रेजिडेंट ने बेगम का निमंत्रण स्वीकार कर लिया और अपने युवा भतीजे अल्फ्रेड डाइस के साथ एक सप्ताहांत में सरधना की यात्रा की।
रेजिडेंट ने गौर किया कि आस-पास के इलाकों की तुलना में यहाँ के खेत ज़्यादा हरे-भरे और उपजाऊ दिख रहे थे। लोग भी ज़्यादा खुश और समृद्ध लग रहे थे। रेजिडेंट अपनी जागीर के बेहतरीन प्रबंधन से प्रभावित और कुछ हद तक आश्चर्यचकित भी हुईं।
मेहमानों का शाही स्वागत किया गया। बेगम ने भव्य भोज का आयोजन किया और आयातित शराब परोसी। उन्हें बच्चों समेत परिवार के सभी सदस्यों से मिलवाया गया।
युवा अल्फ्रेड डाइस बेगम की शाही जीवनशैली देखकर चकित रह गए। वे 16 वर्षीय जीवंत जूलिया ऐन से बेहद प्रभावित हुए। जूलिया ऐन ने अपने हमेशा के उत्साहपूर्ण अंदाज में अल्फ्रेड को खींचते हुए कहा,
"आपको मेरे साथ बाहर लॉन में चलना होगा, मैं आपको एक ऐसा दृश्य दिखाऊंगा, जो आपने शायद पहले कभी नहीं देखा होगा।"
उन्हें बाहर जाते देख छोटा जॉन भी उनके पीछे-पीछे धीरे-धीरे चलने लगा, उसके पीछे उसकी आया भी थी। जूलिया ने जॉन से ज़ोर से कहा, 'तेज़ चलो, बूढ़े आदमी। हमें तुमसे काम करवाना है।'
उसने अल्फ्रेड को लॉन के दूर कोने तक पहुंचाया, जहां एक छोटा सा पेड़ खड़ा था, जो शहद जैसी सुगंध वाले सफेद छोटे-छोटे हरसिंगार के फूलों से लदा हुआ था।
जूलिया ने हवा में लहराती हुई हरसिंगार की छोटी-छोटी पंखुड़ियों की ओर इशारा किया, जो पेड़ के नीचे एक सफेद बिस्तर बना रही थीं। अल्फ्रेड ने कहा, “ये तो अद्भुत हैं। ये बिल्कुल छोटे-छोटे बर्फ के टुकड़ों जैसे दिखते हैं!”
जूलिया ने जॉन से ज़मीन से पंखुड़ियाँ इकट्ठा करने को कहा। उत्साह से भरे जॉन ने अपने गोल-मटोल हाथों से जितनी हो सके उतनी पंखुड़ियाँ इकट्ठा करना

शुरू कर दिया। थोड़ी देर में, पंखुड़ियों का एक छोटा सा ढेर बन गया। पंखुड़ियाँ गिरती रहीं। जूलिया ने इकट्ठा की हुई पंखुड़ियों को एक टोकरी में रखा, और सभी लोग उसे लेकर अंदर चले गए।
सरधना में एक सुखद सप्ताहांत बिताने के बाद, ओचटरलोनी ने जाने का फैसला किया। जूलिया ने उससे कहा:
"महोदय, कृपया अपना प्रवास थोड़ा और बढ़ा लें; मैं अल्फ्रेड को नौका विहार के लिए ले जाऊंगा।"
"डार्लिंग, मुझे बहुत काम करना है।"
जाते समय ओचटरलोनी ने बेगम से कहा,
आपकी पोती बहुत प्यारी है।

परम शांति

शाह आलम एक दयनीय, दृष्टिहीन व्यक्ति थे। बेगम उनसे बहुत स्नेह करती थीं।
वह राजा के दरबारी थे और नियमित रूप से लाल किले का दौरा करते थे।
“मैंने सुना है कि महाराज राजकुमार अकबर को इतना पसंद करते हैं कि उन्हें अपने कमरे में सुलाते हैं। क्या यह सच है?” एक दिन बेगम ने रानी से पूछा। “वह पहले इस बात पर जोर देते थे, लेकिन अब नहीं। आखिरकार, अकबर खुद पैंतालीस वर्ष के करीब पहुंच रहे हैं। लेकिन बादशाह अब भी चाहते हैं कि अकबर उनके साथ एक ही थाली में भोजन करें।”
राजा ज़ेबुन-निस्सा को अपने पास पाकर बहुत प्रसन्न थे। जब भी वह शाही जोड़े से मिलने आतीं, राजा कहते: "उसे मेरे पास लाओ, मुझे उसे छूने दो।"
जब वह उसके पास जाती, तो वह कहता,
“ज़ेबुन-निस्सा, मेरे हाथ थाम लो। तुम्हारा साथ मुझे सुकून देता है। मैं ज़्यादा दिन तक जीवित नहीं रह पाऊँगी। इस राजा को कितना दुखमय जीवन मिला है! अब मैं परम शांति की प्रतीक्षा कर रही हूँ।”
एक बार उन्होंने कहा था:
मैंने अकबर से कहा है कि जब वह राजा बने तो वह तुम्हारे साथ बहन जैसा व्यवहार करे, हालांकि मुझे लगता है कि उसे तुम्हारे समर्थन की जरूरत होगी, न कि इसके विपरीत।"
शाह आलम का निधन सन् 1806 में तिरासी वर्ष की आयु में हुआ। बेगम समरू शोक संतप्त रानी को सांत्वना देने के लिए दिल्ली पहुंचीं। विधवा रानी ने कहा: “जैसे-जैसे अंत निकट आता गया, उन्होंने मुझसे वह शोकगीत पढ़ने को कहा जो उन्होंने कई साल पहले अपनी दृष्टि खो जाने के समय लिखा था। जब मैंने पढ़ना शुरू किया, तो उन्होंने ध्यान से सुना और जब मैं उन पंक्तियों पर पहुँचा तो मुझे रोक दिया:
उस शाही गौरव और तारों से सजी शक्ति को जानो,
ये तो बस एक घंटे के क्षणिक तमाशे मात्र हैं;
घोर संकट की वास्तविक अग्निपरीक्षा में,
अशुद्धियों से मुक्त होकर, तुम्हारे दुख शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे;
बेगम फूट-फूटकर रोने लगीं।

जब वह जा रही थी, अकबर शाह की मां, मल्लिका ने कहा,
मैंने अकबर से कहा है कि जब वह राजा बने तो वह आपको दिल्ली में जमीन का एक अच्छा टुकड़ा दे दे।
1806 में अकबर के राजा बनने के तुरंत बाद और उनके नाम पर जामा मस्जिद से खुत्बा पढ़े जाने के बाद, उन्होंने ज़ेबुन-निस्सा को खास महल नामक बाग और उसकी विशाल भूमि दान में दे दी। उन्होंने तैमूर वंश को कई बहुमूल्य सेवाएं दी थीं और कम से कम दो मौकों पर दिवंगत सम्राट शाह आलम को व्यक्तिगत रूप से संकट की स्थिति से बचाया था।
खास महल लाल किले के पास, चांदनी चौक से सटा हुआ था और सरू के पेड़ों से भरा हुआ था। इसमें मुगल शैली का एक मंडप भी था। समरू बेगम ने तुरंत इस भूमि पर अपने लिए एक भव्य महल की योजना बनाना और उसका निर्माण शुरू कर दिया। वह ब्रिटिश सत्ता के केंद्र के भौतिक रूप से करीब रहना चाहती थीं। उन्हें अब अपनी जागीर और सेना की चिंता नहीं थी, फिर भी वह नए शासकों पर अपना प्रभाव अधिकतम रूप से डालना चाहती थीं।
कुछ ही समय में एक भव्य महल बनकर तैयार हो गया, जो दिल्ली का एक महत्वपूर्ण स्थल बन गया। यह महल एक विशाल और सुरुचिपूर्ण ढंग से बनाए गए बगीचे के बीचोंबीच भव्यता से खड़ा था। इसमें एक विशाल हॉल था जिसमें बेहतरीन लकड़ी का फर्श लगा था और यह यूरोपीय कुलीन वर्ग के लिए भोज कक्ष के रूप में उपयोग किया जाता था। मुख्य महल तक चांदनी चौक से सरू के पेड़ों से घिरी एक सड़क से पहुंचा जा सकता था। आगंतुक अपनी गाड़ियों से एक विशाल सीढ़ी के नीचे उतरते थे।
जब महल बनकर तैयार हो गया, तो गुलबदन समेत उनके सभी आश्रित महल देखने के लिए दिल्ली आए। बड़ी बीबी ने बेगम समरू से कहा:
“आपका महल दिल्ली का सबसे शानदार महल है। लाल किले के भीतर स्थित राजसी निवास का अपना एक इतिहास है, लेकिन वह पुराना और बहुत फैला हुआ है। मुझे यकीन है कि स्वर्ग में बैठे वाल्टर आपकी उपलब्धियों से बहुत प्रसन्न होंगे।”
गुलबदन और समरू बेगम इमारत की छत पर गईं। समरू बेगम अपने महल की छत पर खड़ी होकर नूर बाई की हवेली ढूंढने की कोशिश करने लगीं, जो सिर्फ एक मील दूर थी। उन्होंने गुलबदन से पूछा कि क्या वह उसे पहचान सकती हैं। कई इमारतों के

कारण उनकी पुरानी हवेली दिखाई नहीं दे रही थी। लेकिन जामा मस्जिद के गुंबद साफ दिख रहे थे। गुलबदन ने कहा:
“आप चार दशक से भी अधिक समय पहले फरज़ाना बनकर नूर बाई की हवेली में आई थीं। तब किसने सोचा होगा कि एक दिन आप अपने लिए इतना विशाल और सुंदर महल बनवाएंगी।”
मैं अब उस हवेली को देखना चाहूंगा।
“यह 1803 के भूकंप में बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। अब इसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। यह ढह रहा होगा। लेकिन हम आपकी पहचान छिपाकर वहां जा सकते हैं ताकि आपको किसी तरह की शर्मिंदगी न हो।”
अगले दिन दोनों महिलाएं, साधारण बुर्का पहने हुए, पालकी किराए पर लेकर चावड़ी बाजार गईं, जहां पुरानी हवेली स्थित थी।
रास्ते में जब वे उर्दू बाजार के पास पहुंचे, तो गुलबदन ने कहा:
"क्या आपने कभी मियान हाइगा के बारे में सुना है?"
"नहीं।"
“वह सांवले रंग का एक हिजड़ा था, जो प्रतिदिन सामने वाले चौक में बड़ी खूबसूरती से नाचता था। उसे नाचते देखने के लिए भारी भीड़ जमा हो जाती थी। कई संभ्रांत लोग उसे देखने के लिए बाज़ार में टहलते थे। वे आश्चर्य से उसके चारों ओर जमा हो जाते थे। कभी-कभी वह शहरवासियों को प्रसन्न करने के लिए गीत भी गाता था। उसके नृत्य के चरम पर पहुँचते ही दर्शक जयजयकार करने लगते थे। ऐसे हर प्रदर्शन के अंत में मियां हाइगा थोड़ा और अमीर हो जाता था।”
“मुझे कभी एहसास नहीं हुआ कि हिजड़े भी लोगों को मोहित कर सकते हैं।” “कई प्रसिद्ध हिजड़ा नर्तक हुए हैं। उनमें से एक सुल्ताना था, जो केवल बारह वर्ष का था, लेकिन वह मोटी फीस लेता था। लेकिन बाद में हिजड़ा नर्तकों की लोकप्रियता फीकी पड़ गई।”
नूर बाई की हवेली में समरू बेगम ने देखा कि प्रवेश द्वार पर लगा नीम का पेड़ बहुत बड़ा हो गया था और उसकी शाखाएँ टेढ़ी-मेढ़ी और गांठदार हो गई थीं। प्रवेश द्वार खुला देखकर वे अंदर चले गए। चारों ओर सड़न और सीलन के निशान थे। कई कमरों की छतें गिर चुकी थीं। बचे हुए कमरों में कुछ गरीब मजदूर रह रहे थे। जगह बहुत गंदी थी। वे जल्दी से वापस लौट आए। गुलबदन ने कहा:

“जीवन आश्चर्यों से भरा है। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरी हवेली इतनी दयनीय हालत में होगी। लेकिन आपकी कृपा से मेरा जीवन बहुत सुखमय रहा है और अब मुझे इस हवेली की ज़रूरत नहीं है। मैं अक्सर आपको देखकर आश्चर्यचकित हो जाता हूँ, फरज़ो, आपने बिना किसी बड़े युद्ध का सामना किए इतनी ऊँचाई कैसे हासिल कर ली। कभी-कभी मुझे लगता है कि आपकी वर्तमान सफलता आपके पिछले जन्म के अच्छे कर्मों का फल है।”
बेगम समरू भी आश्चर्य करती थीं कि क्या किसी ने कभी सपने में भी सोचा होगा कि वह एक कोठावाली से ज़ेबुन-निस्सा बन जाएंगी! उन्होंने प्रभु यीशु मसीह की दया और कृपा के लिए उनका हार्दिक धन्यवाद किया।
अपने महल के निर्माण की खुशी में उन्होंने एक भव्य समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया। नए महल की पूरी चौड़ाई में एक विशाल तंबू लगाया गया। प्रवेश द्वार से लेकर बगीचे तक रेशम और सोने का कालीन बिछाया गया। चमकदार रोशनी लगाई गई। एक भव्य भोज की योजना बनाई गई।
मुख्य अतिथि बादशाह अकबर शाह और उनका परिवार तथा महारानी थीं। रेजिडेंट ओचटरलोनी, उनका परिवार और अल्फ्रेड डाइस बेगम के प्रिय अतिथि थे। इसके अतिरिक्त, कंपनी बहादुर के वरिष्ठ सैन्य और नागरिक अधिकारी भी स्वागत समारोह में उपस्थित थे।
अल्फ्रेड डाइस ने जूलिया को ढूँढा, जो अपनी पार्टी ड्रेस में बेहद खूबसूरत लग रही थी। लिटिलजॉन उत्सव और उल्लास को लेकर बहुत उत्साहित था। यह माहौल अल्फ्रेड के लिए जूलिया को शादी का प्रस्ताव देने के लिए एकदम सही था, जिसे जूलिया ने तुरंत स्वीकार कर लिया।
स्वादिष्ट भोज के बाद, अतिथियों का मनोरंजन उस समय के प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा संगीत और नृत्य प्रस्तुतियों से किया गया। सभी समारोहों में हिंदू नर्तकी आसा पुरा को विशेष सम्मान दिया गया। उनका गायन महान गुरुओं के नियमों और शैली का अनुसरण करता था।
अकबर शाह पार्टी से बेहद प्रसन्न हुए और उन्होंने इस शानदार रात के लिए ज़ेबुन-निस्सा को दिल से धन्यवाद दिया।
जब ओचटरलोनी ने समरू बेगम को अल्फ्रेड के प्रस्ताव के बारे में बताया तो वे बहुत प्रसन्न हुईं। वे हमेशा खुद को यूरोपीय अभिजात वर्ग से जोड़ती थीं और जूलिया और अल्फ्रेड का प्रस्तावित विवाह उनके लिए एक सौभाग्यपूर्ण

घटना थी, जिससे उन्हें अपार संतुष्टि मिली। कुछ महीनों बाद, बेगम के नए महल में उनका विवाह संपन्न हुआ।
रेजिडेंट ओचटरलोनी का तबादला रणजीत सिंह के सिख साम्राज्य की सीमा पर स्थित लुधियाना के सीमावर्ती थाने में कर दिया गया। बरेली के सेटन को नया रेजिडेंट नियुक्त किया गया। इससे समरू बेगम को अपने नए महल में एक बार फिर भव्य भोज देने का मौका मिल गया।
यूरोप के उच्चवर्गीय गणमान्य व्यक्तियों की शैली की नकल करने के लिए, बेगम ने अपने लिए एक भव्य राजसी रथ बनवाने का निर्णय लिया। उनके अस्तबल में पहले से ही उत्तम दर्जे के घोड़े थे। कलकत्ता की एक कंपनी को चार घोड़ों और दो सहायकों द्वारा खींचे जाने वाले एक उच्च श्रेणी के रथ का निर्माण करने का आदेश दिया गया। रथ के निर्माताओं ने बेगम को निराश नहीं किया। रथ चमकीले पीले रंग का था, जिस पर चांदी की नक्काशी की गई थी, और बैंगनी रंग के साटन से अस्तर लगा हुआ था, जिस पर चांदी के सितारों की कढ़ाई की गई थी। रथ की खिड़कियों के फ्रेम ठोस चांदी के थे, जिन पर लेस और रिबन लगे थे, जिनमें चांदी के बुलियन के गुच्छे थे। पहिए अस्तर से मेल खाते हुए गहरे नीले रंग के थे। सहायकों ने लाल रंग की जैकेट और टोपियाँ पहनी हुई थीं, जो लगभग पूरी तरह से चांदी की लेस से ढकी हुई थीं।
उसने मन ही मन ले वासोल्ट द्वारा निर्मित पुराने कोच की तुलना की और यह जानकर खुशी हुई कि नया कोच कहीं बेहतर था।
इसी समय गुलबदन ने अंतिम सांस ली, जिससे बेगम गहरे शोक में डूब गईं। वह चार दशकों से अधिक समय से उनकी मित्र और सहयोगी थीं।
नूरो, जिसका पालन-पोषण गुलबदन ने जन्म से ही किया था और जॉर्ज थॉमस से शादी होने तक वह उन्हीं की देखरेख में रही, का दिल टूट गया था।
गुलबदन की इच्छा के अनुसार उनका अंतिम संस्कार हिंदू रीति-रिवाजों के अनुरूप किया गया। उनकी अस्थियों को हरिद्वार स्थित गंगा में विसर्जित किया गया।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

मैं भूख से मर रहा एक निर्धन व्यक्ति हूँ। खुद ही देख लीजिए, मेरी दयनीय हालत देखिए।
अंग्रेज गुस्से में आकर भाषण देता है, जिसमें वह 'ईश्वर का लानत' और 'गंदे आदिवासी' जैसे अपशब्दों का भरपूर इस्तेमाल करता है। फिर वह कैंची निकालता है, उस बेचारे को पकड़ता है और उसके सिर के पास से उसके लंबे, घने बालों का गुच्छा काट देता है, उसे अपनी जेब में ठूंसता है और गालियां देते हुए वहां से निकल जाता है।
बेगम अपनी धूर्त बुद्धि के लिए प्रसिद्ध थीं।
इस मूक अभिनय ने अंग्रेजों को शर्मिंदा कर दिया, लेकिन इससे एक संदेश स्पष्ट हो गया। इसने उन्हें याद दिला दिया कि 1803 में आगरा किले पर कब्जा करने के बाद दिवंगत लॉर्ड लेक ने वहां क्या किया था।
एक युवा सहायक रेजिडेंट काफी परेशान था, और चिढ़कर उसने अपने बगल में बैठे अंग्रेज के कान में कुछ बुदबुदाया:
एक धूर्त वेश्या।

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

वाक्पटु थीं और एक बेहतरीन कहानीकार थीं। दोनों ने एक-दूसरे की संगति का आनंद लिया। हेस्टिंग्स को शराब पीने की आदत थी और कभी-कभी वे अपना आपा खो बैठते थे। वे बेगम से इतने मोहित थे कि उनकी बातचीत देर रात तक चलती रही। हेस्टिंग्स कंपनी के क्षेत्रों में सुरक्षा जोखिमों के बारे में उनके आकलन को जानने के लिए उत्सुक थे। अफ़गानों से खतरा और पंजाब के सिख शासक रणजीत सिंह की वफादारी का सवाल उनके मन में गहरा बैठा हुआ था। उन्होंने उनसे भरतपुर के जाट राजा और राजपूत राज्यों के बारे में जानकारी प्राप्त की। वे जाट राज्य के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे, क्योंकि यह एकमात्र ऐसा राज्य था जिसने लॉर्ड लेक के आक्रमण को विफल किया था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि अपनी सफलता के बाद जाट राजा काफी अभिमानी हो गए थे। गवर्नर-जनरल आगरा जाना चाहते थे और उन्होंने बेगम से साथ चलने का अनुरोध किया। उन्हें लगा कि बेगम जाट राजा और ब्रिटिश अधिकारियों के बीच तनाव कम करने में मदद कर सकती हैं। आगरा में भी दोनों के बीच खूब मेलजोल रहा। ऐसा लगता था कि वे एक-दूसरे की संगति से कभी ऊबते ही नहीं थे।
बेगम ने उन्हें 1781 में ईसाई धर्म में परिवर्तित होने के बारे में बताया। चूंकि रेवरेंड फादर ग्रेगोरियो, एक कार्मलाइट भिक्षु जिन्होंने उन्हें बपतिस्मा दिया था, अभी भी आगरा में थे, इसलिए उन्होंने हेस्टिंग्स को सुझाव दिया कि यदि उन्हें कोई आपत्ति न हो तो वह उन्हें रात्रिभोज पर आमंत्रित कर सकती हैं। गवर्नर-जनरल ने इस सुझाव का स्वागत किया, क्योंकि वह धर्मांतरण के क्षेत्र में हुई प्रगति के बारे में जानना चाहते थे। हेस्टिंग्स ने भोजन की मेज पर बातचीत शुरू करने का अवसर लिया:
"जिस आसानी से आपने जेगुम समरू को बपतिस्मा दिया, उसे देखते हुए, मेरा अनुमान है कि आप बड़ी संख्या में अनुयायी प्राप्त करने में काफी सफल रहे हैं।"
“मुझे खेद है कि उस दिशा में हमारी प्रगति बहुत धीमी है,” फादर ग्रेगोरियो ने कहा। “महामहिम का मामला अनूठा है। वे अपने दिवंगत पति के साथ चर्च में आती थीं, जब इसका जीर्णोद्धार हो रहा था। उन्होंने चर्च के निर्माण कोष में उदारतापूर्वक योगदान दिया था, जिसके लिए भूमि महान सम्राट अकबर ने 250 वर्ष से भी अधिक समय पहले दान की थी।”
ग्रेगोरियो ने बेगम की ओर मुड़कर देखा और मुस्कुराया।

"महामहिम ने स्वेच्छा से और वास्तविक रूप से हमारे धर्म को अपनाया था, हमने इस मामले में बहुत कम प्रयास किया।"
"प्रगति इतनी धीमी क्यों है?" हेस्टिंग्स ने पूछा।
“स्थानीय भाषाओं और बोलियों के ज्ञान की कमी के कारण हम मूल निवासियों से प्रभावी ढंग से संवाद नहीं कर पाते। शायद ही कोई यूरोपीय मुझसे अधिक स्वतंत्र रूप से सभी वर्गों के मूल निवासियों के साथ घुलमिल पाया हो; फिर भी जब मुझे उनसे किसी भी विषय पर चर्चा करनी होती है तो मैं खुद को बहुत असमर्थ महसूस करता हूँ।”
तो फिर इसका समाधान क्या है?
"हमें स्थानीय बोलियाँ सीखनी होंगी, लेकिन देश इतना विशाल है और भाषाएँ इतनी अधिक हैं कि किसी भी व्यक्ति के लिए सभी स्थानीय भाषाओं में पर्याप्त दक्षता हासिल करना मुश्किल होगा।"
बेगम समरू ने हस्तक्षेप किया।
"अगर हम स्थानीय लोगों को अंग्रेजी सिखा सकें तो शायद इससे मदद मिलेगी।" “बिल्कुल! लेकिन यह एक लंबा और थकाऊ मामला होगा; फिलहाल तो कंपनी के अधिकारी भी स्थानीय भाषाओं से इतने अनभिज्ञ हैं कि कई बार वे हास्यास्पद परिस्थितियों में फंस जाते हैं।”
मैं आपको एक सच्ची घटना सुनाता हूँ, जो महामहिम को शायद मज़ेदार लगे: नेपाल के विरुद्ध पहले अभियान के दौरान, एक वरिष्ठ अधिकारी, दरअसल एक रेजिमेंट के कमांडर को राजा की राजधानी दरभंगा से होकर गुज़रना पड़ा। राजा कमांडर को सम्मान देने आए थे। वे कई उपहार लाए थे, लेकिन कमांडर ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने विनम्रतापूर्वक उपहार लेने से इनकार कर दिया और कहा, 'मैंने सुना है कि दरभंगा में कौवा (कॉफ़िया) पैदा होता है, मुझे कुछ मिल जाए तो मुझे खुशी होगी।' अधिकारी कॉफ़ी या कहवा चाहते थे, लेकिन राजा ने सोचा कि वे कौवे चाहते हैं, क्योंकि कौवा का अर्थ कौवा होता है। राजा ने घूरकर देखा और कहा कि उनके राज्य में तो कौवे बहुतायत में हैं, लेकिन उन्हें लगता है कि देश के सभी हिस्सों में कौवे समान रूप से बहुतायत में पाए जाते हैं।
अधिकारी को अभी भी भ्रम की स्थिति समझ नहीं आ रही थी और उन्होंने कहा कि अगर वे इनमें से कुछ कौवे उपलब्ध करा सकें तो वे वास्तव में आभारी होंगे।

शाम को जब कमांडर की अगुवाई में अधिकारी भोजन करने बैठे, तभी एक आदमी राजा के उपहार की घोषणा करने आया। तीन बड़े थैले लाए गए, और बटलर ने तुरंत उनमें से एक को खोला। उसने कौवे को उसके पैरों से पकड़कर बाहर निकाला। कमांडर ने तुरंत अपनी गलती पहचान ली और हंसने लगा।
गवर्नर-जनरल और बेगम भी दिल खोलकर हंस पड़े।
बेगम समरू ने चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहा:
“इन परिस्थितियों में, बेहतर विकल्प यही होगा कि स्थानीय मिशनरियों को प्रशिक्षित किया जाए। कृपया इस बारे में सोचें और अगर मैं इस मामले में किसी भी तरह से आपकी मदद कर सकूँ तो मुझे बताएं।”
फादर ग्रेगोरियो ने बेगम और गवर्नर-जनरल को हार्दिक धन्यवाद देते हुए प्रस्थान किया। जाने से पहले, उन्होंने हेस्टिंग्स से अपने चर्च में आने और संभव हो तो प्रार्थना सभा में शामिल होने का अनुरोध किया, हालांकि यह एंग्लिकन रीति-रिवाज के अनुसार नहीं होगी; उन्होंने समरू से महामहिम को इस उद्देश्य से चर्च तक ले जाने का भी अनुरोध किया।
हेस्टिंग्स चर्च को देखना और ईसाई समुदाय को करीब से देखना चाहता था; आखिरकार, कंपनी अपने क्षेत्रों में ईसाई अनुयायियों की संख्या को, भले ही गुप्त रूप से, बढ़ाना चाहती थी।
इस घटना में, गवर्नर-जनरल चर्च की अपेक्षाकृत साधारण संरचना को देखकर काफी निराश हुए; क्योंकि उन्होंने इंग्लैंड और यूरोप में कुछ उत्कृष्ट चर्च भवन देखे थे। उन्होंने महसूस किया कि भारत में सुंदर और प्रभावशाली चर्चों के निर्माण के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है। उन्होंने इस विषय पर समरू बेगम से चर्चा की।
मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं। मैं अपने खुद के पैसों से सरधना में एक भव्य गिरजाघर बनवाने का इरादा रखता हूं।
जब वे जा रहे थे, तो फादर ग्रेगोरियो ने गवर्नर-जनरल को भीतरी मेहराब की दीवार पर खुदा हुआ शिलालेख दिखाया, जिसमें लिखा था कि चर्च भवन के नवीनीकरण और बदलाव का खर्च सिग्नोर वाल्टर रेनहार्ड्ट सोम्ब्रे की उदारता से वहन किया गया था।
गवर्नर-जनरल भरतपुर के जाट राजा के रवैये से चिंतित थे, जिन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों के इशारों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी थी। वे चाहते थे कि बेगम मध्यस्थ की भूमिका निभाएं। उन्होंने जाट राजा से आगरा आकर बातचीत करने का

अनुरोध किया। जाट राजा ब्रिटिश इरादों को लेकर काफी आशंकित थे, इसलिए उन्होंने आगरा जाने में असमर्थता व्यक्त की; इसके बजाय उन्होंने संदेश भेजा कि वे अपनी राजधानी में उनका अतिथि के रूप में स्वागत करने में प्रसन्न होंगे।
लॉर्ड हेस्टिंग्स और समरू बेगम राजा से मिलने गए और उन्हें बहुमूल्य उपहार दिए। बेगम ने राजा को अपने तम्बू में आने का निमंत्रण दिया। राजा उनसे मिलने गए, लेकिन कोई खास प्रगति नहीं हुई। गवर्नर-जनरल ने विदा ली और राजा मथुरा के लिए रवाना हो गए।
हेस्टिंग्स आगरा यात्रा के परिणामों से काफी निराश थे।

सांझ

दिल्ली लौटने पर, ज़ेबुन-निस्सा लाल किले को देखने के लिए गए।
मल्लिका जमानी (रानी) और अकबर शाह। हमेशा की तरह मल्लिका
वह बहुत स्नेहशील था।
“अगर शाह आलम जीवित होते, तो कूटनीतिक क्षेत्र में आपकी सफलता देखकर उन्हें बहुत खुशी होती। आप जानते हैं कि वे कहा करते थे कि उनकी सबसे प्रिय बेटी ज़ेबुन-निस्सा अपनी पृष्ठभूमि के बावजूद जीवन में बहुत ऊंचाइयों तक पहुंचेगी।”
उसने राजा को सारी घटना बता दी। उसे एहसास हुआ कि राजा उसके प्रति काफी उदासीन और बेपरवाह था। उसकी आवाज़ में एक तरह की झुंझलाहट थी, शायद ईर्ष्या के कारण।
बेगम के पास अपने पुराने मित्र सर डेविड ओचटरलोनी से बात करने के लिए बहुत कुछ था, जो कई बार पदस्थापन के बाद दूसरी बार रेजिडेंट के रूप में दिल्ली लौटे थे (1820)। सर डेविड ने अपनी पहली मुलाकात में उनसे कहा...
मुझे पता चला है कि आपने मार्क्विस ऑफ हेस्टिंग्स के साथ बहुत अच्छे संबंध बना लिए हैं। उच्च पदों पर बैठे लोगों से दोस्ती करने की आपकी क्षमता देखकर मैं दंग रह जाता हूँ। आपको पता ही होगा कि लॉर्ड लेक हमेशा आपकी प्रशंसा करते थे।
"इन सज्जनों का मेरे बारे में अच्छी बातें कहना उनकी दयालुता है, इस मामूली जागीरदार में कुछ सराहनीय बात ढूंढना उनकी महानता को दर्शाता है।" बेगम के निमंत्रण पर ओचटरलोनी सरधना जाने के लिए सहमत हो गया। उसने अनुरोध किया कि डाइस और जूलिया, और उनका बेटा डेविड भी उसके साथ चलें। डेविड घुंघराले बालों वाला दस साल का एक सुंदर लड़का था, और वह पहले से ही समरू बेगम का प्रिय था।
सरधना में उन्होंने रेजिडेंट को आगरा और भरतपुर में घटी सारी घटनाओं का विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने कौवा और कॉफी से जुड़ी एक मजेदार कहानी भी सुनाई, जिससे ओचटरलोनी को खूब हंसी आई। उन्होंने ओचटरलोनी को सरधना में बनने वाले चर्च का नक्शा भी दिखाया।

उन्होंने सतलुज नदी के उत्तर में सिख शक्ति के बारे में चर्चा की। ओचटरलोनी ने उन्हें सिख सम्राट महाराजा रणजीत सिंह के घोड़ों के प्रति प्रेम, विशेषकर उनकी प्रिय घोड़ी लैली के प्रति प्रेम के बारे में बताया। उन्होंने प्रसिद्ध हीरा कोही-नूर के बारे में भी बताया, जिसे रणजीत सिंह ने एक चतुर रणनीति से अफगान अमीर से छीन लिया था। सिखों द्वारा अफगान सेना को हराने के बाद, अफगान अमीर ने शांति की अपील की। शांति समझौते के तहत, सिख सम्राट ने अफगान से प्रसिद्ध हीरा मांगा, जिसने कहा कि उसके पास वह हीरा नहीं है, क्योंकि वह उससे चोरी हो गया था।
रनजीत को पहले से ही पता था कि हीरा अफगान द्वारा पहनी गई पगड़ी में छिपा हुआ है। इसलिए उसने कहा,
‘आइए हम अपने-अपने लोगों के बीच शाश्वत शांति और भाईचारे के प्रतीक के रूप में अपनी पगड़ियों का आदान-प्रदान करें।’
अफगान के पास अनुरोध मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। रेजिडेंट के दिल्ली रवाना होने से पहले, आपसी सहमति से यह तय किया गया कि डाइस और उनका परिवार सरधना में स्थानांतरित हो जाएगा। चूंकि डाइस को अपनी सैन्य सेवा के लिए समय-समय पर बाहर जाना पड़ता था, इसलिए सरधना में उनके परिवार की बेहतर देखभाल हो सकेगी। नूरो का बेटा जॉन थॉमस अब एक युवक बन चुका था। यह तय किया गया कि उसके शिक्षक, रेवरेंड जॉन चैंबरलेन, डेविड को भी शिक्षा प्रदान करेंगे।
जॉन को सरधना कोर में कैडेट के रूप में भर्ती किया गया था। एक फ्रांसीसी अधिकारी को जॉन के एक सबाल्टर्न के रूप में उचित पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। जॉन थॉमस के समरू की कोर में शामिल होते ही नूरो एक स्वतंत्र आवास में रहने लगीं। गुलबदन की तरह नूरो को भी उर्दू ग़ज़लें पसंद थीं। वह अपने जीवन से काफी संतुष्ट और खुश थीं।
1821 में, रेजिडेंट ओचटरलोनी को फिर से राजपूताना स्थानांतरित कर दिया गया। तत्कालीन कलेक्टर हेनरी मिडलटन को कार्यवाहक रेजिडेंट बनाया गया। 1823 में, विलियम फ्रेजर को कार्यवाहक रेजिडेंट नियुक्त किया गया। हमेशा की तरह, समरू बेगम ने नए रेजिडेंट के सम्मान में एक भव्य भोज का आयोजन किया, जिसमें नृत्य भी शामिल था। समारोह के बाद, उन्होंने कार्यवाहक रेजिडेंट की ओर मुड़कर कहा: "विलियम, आपको सरधना में हमसे मिलने अवश्य आना चाहिए।"

“महोदया, रेजिडेंट के पद की गरिमा के साथ खिलवाड़ नहीं किया जाना चाहिए। सभी नागरिकों को उन्हें ‘सर’ कहकर संबोधित करना चाहिए।” यह उत्तर आया।
बेगम समरू इस अपमान से बहुत आहत हुईं। उन्हें आश्चर्य हुआ कि लॉर्ड हेस्टिंग्स के मित्र और ओचटरलोनी के इतने करीबी व्यक्ति के साथ इतना बुरा बर्ताव कैसे किया जा सकता है। उन्होंने सोचा कि उनका व्यवहार उनकी अपनी कमियों और आत्मविश्वास की कमी को दर्शाता है।
शाम को बिस्तर पर लेटते समय भी वह इस घटना के बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रही थी। उसे लगा कि चूंकि फ्रेजर उसकी आधी उम्र से भी कम था, इसलिए उसे उसके पहले नाम से पुकारे जाने पर अपमानित महसूस करने का कोई कारण नहीं था। उसने निष्कर्ष निकाला कि गवर्नर-जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स से उसकी कथित निकटता ने शायद उसे चिढ़ा दिया होगा।
इसके कुछ समय बाद दिल्ली में एक और घटना घटी, जिसने उनकी मानसिक शांति भंग कर दी। जब अकबर शाह शुक्रवार की नमाज के लिए जामा मस्जिद जा रहे थे, तब उनका हाथी उनके सामने नहीं झुका। अकबर शाह को यह व्यवहार बिल्कुल पसंद नहीं आया और उन्होंने अपनी नाराजगी गुलबदन तक पहुंचा दी। अब उन्हें गुलबदन की बहुत याद आने लगी। अगर वह जीवित होतीं, तो वह उनसे सांत्वना और सलाह ले सकती थीं। जीवन के अंतिम पड़ाव में उन्हें एक भरोसेमंद साथी की सख्त जरूरत थी।
बेगम को लगा कि दिल्ली का वातावरण अब पहले जैसा सौहार्दपूर्ण नहीं रहा। उन्होंने अपना अधिकांश समय सरधना में बिताने का निर्णय लिया। वे गिरजाघर के निर्माण में भी शामिल थीं, जो उनका सपना था।
ज़ेबुन-निस्सा काफी उम्रदराज़ थीं और सत्तर वर्ष से अधिक जी चुकी थीं। वे अक्सर सोचती थीं कि उनके जाने के बाद उनकी विशाल संपत्ति का क्या होगा, क्योंकि उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था। उन्होंने अपने सौतेले बेटे ज़फ़रयाब के पोते डाइस को औपचारिक रूप से गोद ले लिया। डाइस ने अपना पूरा नाम डेविड ओचटरलोनी डाइस सोम्ब्रे रख लिया।
यह सर्वविदित था कि उनकी मृत्यु के बाद सरधना कंपनी के क्षेत्र का हिस्सा बन जाएगी और इस पर किसी का कोई दावा नहीं हो सकता था।
बेगम समरू ने डेविड के पिता कर्नल डाइस को जागीर का प्रबंधक नियुक्त किया। लेकिन इस सज्जन ने इतना गड़बड़झाला किया कि उन्होंने थोड़े ही समय में उन्हें हटाकर उनकी जगह डेविड को नियुक्त कर दिया, जिससे नए नियुक्त

व्यक्ति के पिता बेहद नाराज हो गए। उम्र ने उनके निर्णायक निर्णय लेने की क्षमता को कम नहीं किया था।

ड्रेवर

1883 में, बेगम समरू ने महाराजा रणजीत सिंह के एक दूत का स्वागत किया।
पंजाब के शासक ने अपने राजा की ओर से एक असामान्य अनुरोध किया।
रणजीत सिंह चाहते थे कि बेगम के लंबे समय से चिकित्सक रहे डॉक्टर ड्रेवर की सेवाएं उन्हें उपलब्ध कराई जाएं।
बेगम ने उत्तर दिया,
मुझे लगा था कि लाहौर में पहले से ही कुछ बेहतरीन डॉक्टर मौजूद हैं।
"जी हां, महाराज, दो ब्रिटिश डॉक्टर, हार्वे और बेनेट, महाराज की सेवा में हैं। लेकिन महाराज डॉक्टर ड्रेवर की सेवाएं भी चाहते हैं क्योंकि उनके काम की बहुत अच्छी रिपोर्ट मिली हैं।"
“मुझे इस बात से बेहद खुशी है कि महाराज मेरे डॉक्टर को इतना सम्मान देते हैं। लेकिन आपको वचन देने से पहले मुझे ड्रेवर से पूछना होगा।”
"मुझे महामहिम द्वारा यह आश्वासन देने का अधिकार दिया गया है कि ड्रेवर को बहुत उदार शर्तें पेश की जाएंगी और उन्हें खालसा सेना का सर्जन-जनरल भी नियुक्त किया जाएगा।"
मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि महामहिम को अब अचानक ड्रेवर में दिलचस्पी कैसे हो गई है।
“मैं महाराज के स्वास्थ्य से संबंधित कुछ संवेदनशील मामलों का वर्णन करूंगा। उन्हें ब्रिटिश डॉक्टरों पर भरोसा नहीं है और पिछले चार वर्षों से उनकी देखभाल जर्मन चिकित्सक मार्टिन होनिबर्गर कर रहे हैं। वे एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। 1829 में लाहौर पहुंचने से पहले उन्होंने व्यापक यात्रा की थी। उन्होंने काहिरा, बगदाद, सीरिया और सेंट पीटर्सबर्ग के दरबारों में अपनी सेवाएं दी थीं। महाराज उनसे बहुत स्नेह करने लगे थे। दरबारी चिकित्सक के रूप में अपने कर्तव्यों के अतिरिक्त, उन्हें बारूद और गोला-बारूद कारखानों की जिम्मेदारी भी सौंपी गई थी।”
“जिम्मेदारियों का यह तो काफी असामान्य संयोजन है!”
दूत ने अपनी बात जारी रखी।
"इतना ही नहीं, होनिबर्गर को सौंपा गया एक और कर्तव्य एक बहुत ही शक्तिशाली शराब के आसवन की देखरेख करना था, जिसका आविष्कार उन्होंने राजा

के विशेष आनंद के लिए किया था, क्योंकि राजा साधारण शराब का स्वाद खो चुके थे।"
"बहुत ही रोचक!"
दूत ने आगे विस्तार से बताया।
लाहौर में चार साल रहने के बाद, डॉ. होनिबर्गर को यूरोप की इतनी तीव्र याद सताने लगी कि उन्होंने वापस लौटने का फैसला किया। राजा नहीं चाहते थे कि वे जाएं, क्योंकि राजा उन्हें बहुत पसंद करते थे। उन्होंने डॉक्टर का वेतन बढ़ा दिया और उन्हें जनरल अविताबिल की तरह एक जिले का प्रभार देने की पेशकश की। बताया जाता है कि डॉक्टर ने अपने कुछ मित्रों से कहा था कि उन्हें जाने की इतनी तीव्र इच्छा थी कि राजा का प्रसिद्ध हीरा कोही-नूर भी उन्हें रुकने के लिए प्रेरित नहीं कर पाता।
मैं डॉक्टर के रवैये से चकित हूं।
"होनिबर्गर के पद छोड़ने के दृढ़ निश्चय से विचलित होकर, महाराज ने एक प्रतिस्थापन नियुक्त करने का निर्णय लिया। उनके सलाहकारों ने ड्रेवर की बहुत प्रशंसा की, उन्होंने महाराज के अच्छे स्वास्थ्य का श्रेय उनकी चिकित्सा कुशलता को दिया। इसी कारण मैं यहाँ हूँ।"
“मुझे गर्व है कि इतने शक्तिशाली शासक ने किसी काम के लिए मुझसे संपर्क किया है। देखते हैं कि ड्रेवर आपके प्रस्तावों पर क्या प्रतिक्रिया देते हैं।”
बेगम ने डॉक्टर ड्रेवर को बुलवाया, जबकि दूत को एक अलग कमरे में प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया। उन्होंने महाराजा रणजीत सिंह के प्रस्ताव को उनके सामने समझाया और कहा,
क्या आप लाहौर जाना चाहेंगे?
"जब मेरी यहाँ ज़रूरत है तो मैं कैसे जा सकता हूँ?"
“देखिए! प्रस्ताव स्वीकार करना आपके हित में है। पंजाब के राजा बहुत उदार नियोक्ता हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मैं दिल्ली से एक और चिकित्सक बुला लूँगा। वैसे भी, आपका सहायक मेरी देखभाल कर सकता है।”
“माननीय महोदय, मुझे पंजाब के शासक की समस्याओं की जानकारी है। वे अत्यधिक मात्रा में शराब पीते हैं और अस्वस्थ होने के बावजूद भी व्यभिचार में लिप्त रहते हैं। मुझे पता चला है कि वे मेरी सहायता से अपना जीवन लंबा करना चाहते हैं। उन्हें ब्रिटिश डॉक्टरों पर भरोसा नहीं है और वे उनके द्वारा

बताई गई दवाइयाँ नहीं लेते। मुझे खेद है कि मैं ऐसे दुराचारी व्यक्ति की सहायता नहीं कर सकता। फिर भी, मैं आपको आपकी वर्तमान स्थिति में अकेला नहीं छोड़ सकता।”
समरू बेगम अपने डॉक्टर की निष्ठा देखकर चकित रह गईं। संयोगवश, जब बेगम का निधन हुआ, तो उनके पार्थिव शरीर को कंधा देने वालों में ड्रेवर भी शामिल थे। बेगम ने अपनी वसीयत में उन्हें बीस हजार रुपये की राशि भेंट की।
अपनी वसीयत में बेगम ने वफादार डॉक्टर को इनाम के तौर पर 20,000 रुपये अलग रखे थे।

अंतिम श्रद्धांजलि

बेगम समरू ने अब उन कार्यों पर ध्यान केंद्रित किया जो उनके दिल के करीब थे। उनका भाग्य अच्छा था।
यह उसकी जरूरतों के लिए पर्याप्त से भी अधिक था। उसने इसका सदुपयोग करने का फैसला किया।
इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। उनके द्वारा निर्मित उत्कृष्ट गिरजाघर 1823 में बनकर तैयार हो चुका था। उन्होंने इसकी देखरेख और मरम्मत के लिए एक लाख रुपये की राशि आवंटित की थी।
आगरा में मार्क्विस ऑफ हेस्टिंग्स और फादर ग्रेगोरियो के साथ भारत में धर्मांतरण के विषय पर हुई चर्चा ने बेगम को यह विश्वास दिला दिया था कि भारतीय मिशनरियों को प्रशिक्षित करने के लिए एक महाविद्यालय की आवश्यकता है। बेगम समरू ने एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जहाँ स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रोमन कैथोलिक पादरियों को शिक्षित किया जा सके। उन्होंने गरीबों के कल्याण के लिए उदारतापूर्वक दान दिया; सरधना के गरीबों की सहायता के लिए एक कोष में पचास हजार रुपये और कलकत्ता के जरूरतमंदों की सहायता के लिए पचास हजार रुपये दिए गए। उन्होंने मेरठ और दिल्ली में गिरजाघर बनवाए।
उन्होंने पोप के विवेकानुसार दान कोष के रूप में उपयोग किए जाने हेतु रोम में एक लाख पचास हजार रुपये भेजे। उन्होंने दान के प्रयोजनों के लिए कैंटरबरी के आर्कबिशप को भी पचास हजार रुपये दान में दिए।
आगरा के जिस गिरजाघर में उनका बपतिस्मा हुआ था, उसे भी उनकी उदारता का लाभ मिला, जब उन्होंने उन्हें तीस हजार रुपये भेजे। कलकत्ता, बंबई और मद्रास के कैथोलिक मिशनों को उन्होंने एक-एक लाख रुपये भेजे। कलकत्ता के प्रोटेस्टेंट चर्च के गरीब लोगों के लिए शिक्षकों की व्यवस्था करने के लिए भी इतनी ही राशि अलग रखी गई थी। विभिन्न क्षेत्रों में उनके इस उदार योगदान की व्यापक रूप से सराहना की गई और लोग एक समय की वेश्या रहीं इस शख्सियत के चरित्र की दृढ़ता पर आश्चर्य करने लगे।
बेगम ने सरधना में एक विशाल और भव्य महल का निर्माण भी शुरू करवाया। गिरजाघर की योजना और निर्माण करने वाले वास्तुकार को इसके निर्माण का

दायित्व सौंपा गया। महल के कमरे विशाल और सुव्यवस्थित थे। मुख्य द्वार तक जाने वाली घुमावदार सीढ़ियों ने महल की भव्यता को और बढ़ा दिया। उन्होंने नए महल को भव्य यूरोपीय फर्नीचर से सजाया। यह नया महल दावतों और पार्टियों के लिए एक आदर्श स्थान था।
अपने परोपकारी और धार्मिक कार्यों के बावजूद, समरू बेगम राजनीतिक मामलों में सक्रिय रहीं, जिससे उनके हितों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता था। भरतपुर की घेराबंदी के दौरान, उन्होंने अपने सैनिकों के साथ ब्रिटिश सेना के साथ जाने पर जोर दिया, हालांकि उन्हें बताया गया था कि ब्रिटिश सेना सैन्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है और वह पास के मथुरा में रह सकती हैं। लेकिन उन्होंने दृढ़ता से कहा:
“बकवास! अगर मैं भरतपुर नहीं गया, तो पूरा हिंदुस्तान कहेगा कि मैं बुढ़ापे में कायर हो गया हूँ।”
इसी समय उन्हें दिवंगत सम्राट शाह आलम की विधवा महारानी के निधन की खबर मिली, जो उनके महान संरक्षक थे। वे शोक व्यक्त करने के लिए लाल किले की ओर रवाना हुईं। बादशाह शाह अकबर अपने तस्बीह खाने में थे; उन्होंने महारानी को भी वहाँ आने का निमंत्रण दिया। महारानी भी वहाँ मौजूद थीं।
“वह मेरे प्रति बहुत दयालु और विचारशील थीं,” बेगम समरू ने याद किया। "हां, वह आपको बहुत पसंद करती थी; वह हमेशा शाही आभूषण, माणिक, हीरे आदि को वापस पाने के लिए आपके द्वारा किए गए जोरदार प्रयासों के बारे में बात करती थी, जिन्हें गुलाम कादिर ने महल से लूट लिया था।"
“जी हां, हम सभी बहुत निराश थे कि हम रानी को शाही आभूषण वापस नहीं लौटा सके।” बेगम ने आह भरी।
दिल्ली में बेगम को पता चला कि मुगल राजधानी पर अंग्रेजों का नियंत्रण होने के बाद वहां कानून-व्यवस्था बेहतर हो गई थी। व्यापार और कारोबार में सुधार हो रहा था और रोजगार के अवसर भी बढ़ रहे थे।
चांदनी चौक से गुजरने वाली प्राचीन नहर, जिसका निर्माण मूल रूप से सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में ईरानी इंजीनियर अली मर्दान खान ने करवाया था, डेढ़ सौ वर्षों से अधिक समय से निष्क्रिय पड़ी थी। गवर्नर जनरल, अर्ल ऑफ मोइरा, मार्क्वेस ऑफ हेस्टिंग्स ने इसके जीर्णोद्धार का आदेश दिया। नहर में पानी आने पर दिल्ली के लोग इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने फूलों की मालाएँ और लड्डू नहर में बहा दिए, मानो किसी देवता को अर्पण कर रहे हों। नहर के

किनारे लोकप्रिय सैरगाह बन गए। बेगम समरू अपने भव्य रथ में नहर के किनारे- किनारे गईं और गवर्नर जनरल की इस दूरदर्शिता से बहुत प्रभावित हुईं।
इसी बीच, अवध एक कठिन दौर से गुजर रहा था, खासकर 1784 के विनाशकारी अकाल के बाद। शासन व्यवस्था अप्रभावी हो गई थी। परिणामस्वरूप, कलाकार, शिल्पकार, कवि और यहां तक कि नर्तकियां भी दिल्ली लौट रही थीं।
बेगम समरू ने सरधना के पास स्थित मेरठ सैन्य स्टेशन पर आने वाले उच्च अधिकारियों के साथ अपने संबंध बनाए रखे। मेरठ में उनका एक आलीशान बंगला भी था। भारत में ब्रिटिश सेना के कमांडर-इन-चीफ लॉर्ड कॉम्बरमेयर कलकत्ता अधिकारियों के नियंत्रण वाले उत्तरी क्षेत्रों के दौरे के दौरान मेरठ पहुंचे। बेगम ने तुरंत कमांडर-इन-चीफ को अपने नए महल में भोज का निमंत्रण दिया, जहां केवल वरिष्ठतम नागरिक और सैन्य अधिकारियों के उपस्थित होने की उम्मीद थी। लगभग अस्सी वर्ष की आयु में होने के बावजूद, उन्होंने महल की सीढ़ियों पर लॉर्ड कॉम्बरमेयर का व्यक्तिगत रूप से स्वागत किया।
पार्टी में साठ मेहमान थे। बेगम मेज के मुखिया के स्थान पर बैठी थीं, उनके बगल में उनका शानदार हुक्का रखा था; उन्होंने कमांडर-इन-चीफ को भी वैसा ही हुक्का भेंट किया। भोजन के दौरान बेगम बहुत खुश थीं और कमांडर-इन-चीफ के साथ हंसी-मजाक और प्रशंसा का सिलसिला जारी रखा। लेकिन भोजन समाप्त होते- होते वह थक गईं।
दावत समाप्त होने के बाद, उनकी सेवा में तैनात एक फ्रांसीसी अधिकारी ने मेज के चारों ओर घूमकर प्रत्येक अतिथि को मोतियों का एक लंबा हार पहनाया। भोजन के बाद मेहमानों का मनोरंजन नृत्य प्रदर्शन से किया गया।
लॉर्ड कॉम्बरमेयर उस महिला के कट्टर प्रशंसक बन गए और उनके करीबी दोस्तों में से एक बन गए।
उन्होंने वृद्धावस्था में एक अन्य अंग्रेज गणमान्य व्यक्ति को अपने वश में कर लिया था।
समरू बेगम अपने कई कर्मचारियों और आश्रितों को लेकर लगातार चिंतित होती जा रही थीं। खराब स्वास्थ्य के बावजूद, वह ब्रिटिश अधिकारियों पर दबाव डाल रही थीं कि वे उनके कोर के फ्रांसीसी कमांडर सैलूर समेत विभिन्न व्यक्तियों के लिए पेंशन स्वीकृत करें। उनकी वसीयत पहले ही तैयार हो चुकी थी।

बेगम समरू जानती थीं कि उनका जीवन लगभग समाप्त हो चुका है। अक्सर, वे अपने बचपन के बारे में सोचने लगती थीं। उनका बचपन कभी सुखद नहीं था; उन्होंने अपने पिता की बड़ी बेगम के बेटे द्वारा अपनी माँ के साथ दुर्व्यवहार और उत्पीड़न होते देखा था। वे वास्तव में चाहती थीं कि उनकी माँ उन्हें जीवन में आगे बढ़ते हुए और अपनी संपत्ति अर्जित करते हुए देख पातीं।
उन्हें अक्सर सम्राट शाह आलम का चेहरा याद आता था। उन्होंने ही उन्हें ज़ेबुन-निस्सा नाम दिया था - 'अपनी स्त्रीत्व की शोभा', एक ऐसा नाम जिसे वे सबसे अधिक महत्व देती थीं। उन्हें अपने पिता का चेहरा भी याद नहीं था, लेकिन सम्राट ने ही उन्हें 'मेरी सबसे प्रिय पुत्री' कहकर पुकारा था।
इसी बीच, उन्हें निवर्तमान गवर्नर-जनरल बेंटिंक से एक असाधारण पत्र मिला। बेंटिंक अक्सर जूलिया से उस पत्र को ज़ोर से पढ़ने के लिए कहती थीं। कार्यकाल समाप्त होने से लगभग एक सप्ताह पहले, जूलिया ने वह पत्र पढ़ा: महामहिम बेगम सुमरो को
मेरे प्रिय मित्र, मैं आपके चरित्र के प्रति अपने हार्दिक सम्मान को व्यक्त किए बिना भारत नहीं छोड़ सकता। आपके उदार स्वभाव और व्यापक दानशीलता ने आपको हजारों लोगों का प्रिय बना दिया है, और मेरे मन में आपके प्रति गहरी प्रशंसा की भावनाएँ जागृत हुई हैं; और मुझे आशा है कि आप आने वाले कई वर्षों तक अनाथों और विधवाओं के लिए सहारा और अपने असंख्य आश्रितों के लिए अटूट समर्थन बने रहेंगे।
कल सुबह मैं इंग्लैंड के लिए रवाना हो रहा हूँ; और मेरी प्रार्थनाएँ और शुभकामनाएँ आपके साथ हैं, और उन सभी के साथ हैं जो आपकी तरह भारत के लोगों के कल्याण के लिए प्रयासरत हैं।
मैं बना रहता हूँ,
बहुत विचार-विमर्श के बाद,
आपका सच्चा मित्र,
डब्ल्यू. बेंटिंक.
कलकत्ता, 17 मार्च, 1835
इस पत्र में बेगम की जीवन भर की उपलब्धियों का सार समाहित था। यह देश के सर्वोच्च पदाधिकारी की ओर से व्यक्त की गई सच्ची श्रद्धा का अंतिम प्रतीक था।

जोआना नोबिलिस सोमर जेबुन-निस्सा बेगम, जो पूरे हिंदुस्तान में एकमात्र ईसाई प्रमुख और सैन्य टुकड़ी की एकमात्र महिला कमांडर थीं, ने बेंटिंक के पत्र के एक वर्ष से भी कम समय के भीतर अंतिम सांस ली।

शब्दकोष

अदब एक औपचारिक अभिवादन; बुर्का मुस्लिम महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला पर्दा; चौधरी किसी प्रतिष्ठान की मुखिया, वेश्यालय की मालकिन; चपटी समलैंगिक महिला
देओर्ही लॉबी
लकड़ी की समुद्री नाव (धो), दीये, मिट्टी के दीपक
ईद-उल-ज़ुहा मुसलमानों का बलिदान का त्योहार है।
गौ (घड़ी के आकार का तकिया), ग़ज़ल (उर्दू कविता का एक रूप), घाट (नदी के किनारे उतरने की जगह), हवेली (उत्तरी भारत का एक पारंपरिक मकान), हिंदुस्तान (उत्तरी भारत, बंगाल के पश्चिम में, मुख्य रूप से गंगा का मैदानी क्षेत्र), हुक्का (बुलबुला), हुज़ूर (माननीय)।
ईद-ओ-इकबाल के मुस्लिम त्योहार पर मुबारकबाद! सम्मान और प्रतिष्ठा के प्रतीक ईद-उल-इकबाल के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं।
सैनिकों के रखरखाव के लिए एक रईस को पट्टे पर दी गई भूमि
जागीर
शासक की सेवा
Jagirdar holder of a jagir Jama masjid congregation mosque Jemadar subordinate junior commissioned officer Jhoot lie
कंचानी वेश्या
कथकली एक प्रकार का भारतीय शास्त्रीय नृत्य है। खुत्बा एक मुस्लिम शासक के राज्याभिषेक के समय की गई घोषणा है।
एक ऐसा सैलून जहाँ नाचने वाली लड़कियाँ मनोरंजन करती हैं, उसका भी यही अर्थ है
कोठा
वेश्यालय
कोठावाली: कोठे में काम करने वाली महिला; कोतवाल: कस्बे का पुलिस प्रमुख; लड्डू: उत्तर भारतीय मिठाई; मल्लिका: रानी
मल्लिका ज़मानी (विधवा रानी), नमाज़ (मुस्लिम प्रार्थना), नाच (भारतीय नृत्य)

किसी शासक को भेंट किए गए सोने के सिक्के, प्राप्त होने पर Nazarana
श्रोता
सम्राट के निवास के अधीक्षक नाज़िर
इस्लामी कानून के अनुसार सगाई दोनों पक्षों पर बाध्यकारी है। निकाह
शादी
Patwari village revenue record keeper
मार्की, कपड़े या कैनवास से बना एक खुला हॉल जो टिका हुआ होता है शामियाना
बांस के खंभे
Subah province
सूबेदार (सेना में कनिष्ठ कमीशन अधिकारी), तस्बीह खाना (माला सहित प्रार्थना के लिए व्यक्तिगत माला), तस्लीम (सिर पर दाहिना हाथ उठाकर अभिवादन करना), तवायफ (वेश्या)
ज़नाना महिला आवास।

संदर्भ

‘मुरक्का दिल्ली’ मूल रूप से फारसी में (1742 से पहले)
दरगाह कुली खान
खालिक अंजुम द्वारा उर्दू में अनुवादित (1993)
एंटोनी लुई हेनरी
शाह आलम द्वितीय और उनका दरबार (1779)
पालिशगर
डब्ल्यू फ्रैंकलिन द्वारा लिखित शाह औलूम के शासनकाल का इतिहास (1798), डब्ल्यू.एच. स्लीमैन द्वारा लिखित एक भारतीय अधिकारी के भ्रमण और संस्मरण (1844)।
जे. बैले फ्रेजर द्वारा लिखित लेफ्टिनेंट कर्नल जेम्स स्किनर के सैन्य संस्मरण (1856) जनरल गॉडफ्रे
भारत में कलम और पेंसिल से बनाए गए रेखाचित्र (1858)
चार्ल्स मुंडी
पंजाब सरकार का दिल्ली गजेटियर (1883-84), पंजाब सरकार का रोहतक जिला गजेटियर (1910), सर जे.एन. सरकार द्वारा लिखित 'मुगल साम्राज्य का पतन' खंड III और IV (1941), एस.जी. सरदेसाई द्वारा लिखित 'मराठों का इतिहास' खंड III, जॉन लाल द्वारा लिखित 'बेगम समरू' (1997), के.सी. कांडा द्वारा लिखित 'मीर अली मीर' द्वारा लिखित 'चयनित कविताएँ' (1997), खुर्शीद इस्लाम और
तीन मुगल कवि (1978)
राल्फ रसेल
वायलेट काउंट
लखनऊ – एक शहर की यादें (1997)
(संपादक)
केतकी दुशारी: एक विविध ब्रह्मांड - पत्रिकाओं का एक अध्ययन और भारतीय समाज में ब्रिटिश पुरुषों और महिलाओं के संस्मरण डायसन
उपमहाद्वीप – 1765–1856 (1978)

H.K.Kaul HistoricDelhi, an Anthology (I985) Maheshwar Dayal Aalam Mein Intekhab Dilli (in Urdu) (1987) Pavan Varma Mansions at Dusk (1992) शाहजहानाबाद – मुगलकालीन भारत का संप्रभु शहर,
स्टीफन पी. ब्लेक
1639–1739
लखनऊ: उर्दू में प्राच्य संस्कृति का अंतिम चरण
अब्दुल हलीम शरार
ई.एस. हारकोर्ट और फखर हुसैन द्वारा अनुवादित (1975) जॉन की, भारत – एक इतिहास (2000), मोहम्मद हादी Umrao Jan Ada (A novel in Urdu) (1901) भ्रष्टाचार